■ वर्ष-22 ■ अंक-137
■ पृष्ठ-8 ■ मूल्य-2.00

भोपाल

■ गुरुवार ■ 19 दिसंबर 2024

पौष कृष्ण पक्ष चतुर्थी
विक्रम संवत्-2081

E-mail
dainiksamayjagat@gmail.com
insmjagat@gmail.com

प्रधान संपादक : अशोक त्रिपाठी

दैनिक
समय जगत

भोपाल, दिल्ली, म.प्र., उ.प्र. और अन्य राज्यों से एक साथ प्रकाशित

एक संदेश-पूरा देश

म.प्र. के सर्वाधिक केंद्रों तक प्रसारित प्रदेश का एकमात्र समाचार पत्र

ईश्वर से अधिक मूल्यवान दुनिया में कुछ भी नहीं...

शीर्ष की ओर 'समय जगत'
Facebook
asksamayjagat
Instagram
@asksamayjagat
Twitter
@asksamayjagat
यूट्यूब पर
'खबर समय जगत'
को भी सब्सक्राइब करें
www.dainiksamayjagat.in

अंबेडकर मामले को लेकर विपक्ष ने संसद में किया भारी हंगामा

केन्द्रीय कानून मंत्री ने कहा- कर रहे हैं ढोंग

नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र में विभिन्न मुद्दों को लेकर जहां हंगामा लगातार जारी रहा है, वहीं बुधवार को बाबा साहेब आंबेडर मामले को लेकर जोरदार हंगामा हुआ है। लोकसभा और राज्यसभा दोनों ही सदनों में आंबेडकर के अपमान को लेकर विपक्ष ने हंगामा किया, जिसे देखते हुए दोनों सदनों की कार्यवाही दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। संसद के दोनों सदनों में आज बुधवार आंबेडकर मामले को लेकर विपक्ष ने जोरदार हंगामा किया है। विपक्षी सांसदों ने सदन में जय भीम के नारे भी लगाए। हंगामा बढ़ता देख दोनों ही सदनों की कार्यवाही को दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया। कांग्रेस और अन्य विपक्षी सांसदों ने आरोप लगाया है कि, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बाबा साहेब आंबेडकर का अपमान किया है। यहां बताते चलें कि एक दिन पहले मंगलवार का उच्चसदन में गृह मंत्री शाह ने संविधान पर चर्चा करते हुए कहा था कि अगर वे (कांग्रेस) जितनी बार अंबेडकर का नाम लेते हैं, उतनी बार भगवान का नाम लेते तो शायद उन्हें स्वर्ग में जगह मिल जाती। गृह मंत्री के इस बयान के खिलाफ कांग्रेस के सांसदों ने संसद के द्वार पर जोरदार प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में प्रियंका गांधी और राहुल गांधी भी शामिल हुए।

इस पर पलटवार करते हुए केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने लोकसभा में कहा कि, कांग्रेस का अपमान करने का तो इतिहास रहा है, आज यह सब ढोंग कर रहे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष व सांसद मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, कि जब अमित शाह आंबेडकर के बारे में बात कर रहे थे, तो उन्होंने कहा आप लोग 100 बार आंबेडकर का नाम लेते हैं, यदि आपने इतनी बार भगवान का नाम लिया होता, तो आप सात बार स्वर्ग गए होते। उन्होंने कहा कि इसका तो यही मतलब हुआ कि बाबा साहेब आंबेडकर का नाम लेना भी अपराध हो गया है। खड़गे ने आगे कहा कि उनका इरादा बाबा साहेब आंबेडकर द्वारा बनाए गए संविधान का विरोध करना था। ऐसे में मैं उनके इस्तीफे की मांग करता हूँ। इस तरह से आंबेडकर मामले को लेकर संसद के दोनों सदनों में जोरदार हंगामा हुआ और कुछ देर के लिए सदन की कार्यवाही को स्थगित कर दी गई।

भाजपा शासित राज्यों में लागू करेंगे यूसीसी

केन्द्रीय गृहमंत्री ने की घोषणा

नई दिल्ली। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने ऐलान करते हुए कहा जहां-जहां भाजपा की सरकार, उन राज्यों में यूसीसी लागू होगी। उत्तराखंड द्वारा लागू की गई समान नागरिक संहिता एक आदर्श कानून है, जिस पर व्यापक बहस होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इसके बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकारें सभी राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू करेंगी। उन्होंने कांग्रेस पर संविधान का अपमान करने और तुष्टिकरण की राजनीति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हम लोकतांत्रिक तरीके से काम करते हैं। एक ऐसा कानून जिसे सामाजिक जीवन में बड़े बदलाव लाने वाला माना जाता है, उसे उत्तराखंड ने आदर्श कानून के रूप में पारित किया। यह कानूनी और धार्मिक प्रमुखों द्वारा समीक्षा किया जाएगा और उसके बाद भाजपा सरकारें सभी राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू करेंगी। उन्होंने आगे कहा कि अब तक यह कानून लागू नहीं हो सका, इसका कारण कांग्रेस की तुष्टिकरण की राजनीति है। राज्यसभा में संविधान के 75वें वर्ष पर चल रही बहस के दौरान, अमित शाह ने कांग्रेस और भाजपा द्वारा किए गए संविधान संशोधनों के बीच तुलना करते हुए यह दावा किया कि कांग्रेस ने निजी लाभ और सत्ता की खातिर संविधान में बदलाव किए, जबकि भाजपा ने लोकतंत्र को मजबूत करने और समान अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए संशोधन किए। 85 मिनट के अपने भाषण में शाह ने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस ने कभी आरक्षण का सम्मान नहीं किया और 50 प्रतिशत की सीमा को तोड़ने का प्रयास किया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार समान नागरिक संहिता के पक्ष में अपने विचार रखे हैं और भाजपा ने इस मुद्दे को झारखंड विधानसभा चुनावों में प्रमुख चुनावी वादा बनाया था। अमित शाह ने भी कांग्रेस पर यह आरोप लगाया कि उसने हमेशा संविधान का पालन नहीं किया और आपातकाल के दौरान कई गलतियां कीं।

पार्वती-कालीसिंध-चंबल परियोजना को लेकर हुए त्रिपक्षीय समझौते की दी जानकारी

प्रदेश के 11 जिलों को मिलेगी सिंचाई और पेयजल सुविधा: मोहन यादव

समय जगत, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विधानसभा में में पार्वती-कालीसिंध-चंबल (पीकेसी) परियोजना को लेकर हुए त्रिपक्षीय समझौते की जानकारी दी। उन्होंने कहा- इस संशोधित परियोजना के माध्यम से मध्यप्रदेश के 11 जिलों में सिंचाई और पेयजल सुविधा उपलब्ध होगी। केन-बेतवा लिंक परियोजना से बुंदेलखंड को काफी लाभ मिलेगा। वहीं मध्यप्रदेश विधानसभा में शीतकालीन सत्र के तीसरे दिन अनुपूरक बजट पर चर्चा की गई। इसमें उप नेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने कहा- ऐसी क्या स्थिति है कि सरकार को हर 15 दिन में कर्ज लेना पड़ रहा है। जनता पर लगातार कर्ज का बोझ बढ़ाया जा रहा है। सरकार को स्वीकार करना चाहिए कि उनके पास कोई फाइनेंशियल प्लानिंग नहीं है। बीजेपी का संकल्प पत्र दिखाते हुए कटारे ने कहा- मुख्यमंत्री 1 साल का विकास कार्य बताते हुए खुद कह चुके हैं कि 90 प्रतिशत संकल्प अभी भी अधूरे हैं। ऊर्जा विभाग में 18000 करोड़ से अधिक का बजट था और अब तक सिर्फ 9000 करोड़ ही खर्च हुआ है। अभी भी 50 प्रतिशत खर्च होना बाकी है। अब 8000 करोड़ से अधिक का प्रावधान फिर किया जा रहा है, आखिर ऐसी स्थिति क्यों है?

इससे पहले कांग्रेस ने संसद में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर पर की गई टिप्पणी का विरोध किया। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- ये पूरे देश के दलितों का अपमान है। सरकार तुरंत इस पर माफी मांगे। दरअसल, मंगलवार को शाह ने कहा था- वे (कांग्रेस) जितनी बार अंबेडकर का नाम लेते हैं, उतनी बार भगवान का नाम लेते तो उन्हें स्वर्ग में जगह मिलती। इसका सत्ता पक्ष ने विरोध किया तो सदन में शोर शराबा होने लगा। विधानसभा स्पीकर ने काफी देर तक समझाने की कोशिश की। नारेबाजी नहीं रुकी तो विधानसभा अध्यक्ष ने कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित कर दी। विधानसभा में प्रतिवेदन और याचिकाओं को पढ़ा हुआ माना गया। वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा ने मध्यप्रदेश माल और सेवा कर तृतीय संशोधन विधेयक 2024 के पुनर्स्थापन का प्रस्ताव पेश किया। अध्यक्ष की अनुमति मिली। तराना विधायक महेश परमार ने कहा- मैं 2015-16 में इंदौर में हुए फर्जी चालान कांड पर ध्यानाकर्षण प्रस्ताव लाया था। मैंने बात रखी थी कि 41 करोड़ का घोटाला हुआ। विधानसभा में भाजपा विधायक अभिलाष पांडे ने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के जरिए साइबर अपराध का मामला उठाया। पांडे ने कहा- डिजिटल अरेस्ट के माध्यम से लोगों को डराने-धमकाने का काम किया जा रहा है। उनकी जमापूंजी हड़पी जा रही है। साइबर अपराध से निपटने के लिए कानून और संसाधनों की कमी भी बड़ी वजह बन रही है।

विधानसभा में अनुपूरक बजट पर भी हुई चर्चा

चाय की केतली लेकर कांग्रेस विधायकों का अनोखा प्रदर्शन, उमंग सिंघार ने सरकार पर लगाया आरोप

भोपाल। बेरोजगारी के मुद्दे को लेकर नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस विधायकों ने विधानसभा परिसर में चाय की केतली और बैनर, पोस्टर लेकर प्रदर्शन किया। मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के तीसरे दिन कांग्रेस विधायकों ने युवाओं की बेरोजगारी के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया। यह प्रदर्शन नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में कांग्रेस के विधायकों द्वारा मध्यप्रदेश विधानसभा में गांधी प्रतिमा के पास किया गया। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और कांग्रेस के विधायकों ने हाथ में चाय की केतली और गिलास लेकर सरकार पर बेरोजगारी को लेकर गंभीर सवाल उठाए। इस अनोखे प्रदर्शन को लेकर नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि सरकार ने युवाओं को 2 लाख नौकरी देने का वादा किया था, लेकिन वो पूरा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि आज पुलिस भर्तियां नहीं हो पा रही, संविदा शिक्षक भर्ती नही हो पा रही, डॉक्टरों की भर्तियां भी रुकी पड़ी है। ये सरकार बच्चों को पढ़ाने के बाद नौकरियां नही देना चाहती। उमंग सिंघार ने कहा कि आज का युवा क्या मोदी जी की चाय बेचेगा? उन्होंने कहा कि पूरा कांग्रेस विधायकदल युवाओं के साथ है और सरकार को रोजगार को लेकर जवाब देना पड़ेगा।

चीन ने डोकलाम के पास बसा डाले आठ गांव

नई दिल्ली। चीन के साथ गलवान घाटी में विवाद सुलझने के बाद सब-कुछ पहले जैसा नॉर्मल हो गया है तो सोचना गलत हैं। ड्रैगन अपनी हरकतों से बाज नहीं आया है। चीन भूटान की सरजमीं पर इतना कुछ कर रहा है लेकिन भूटान ने इसपर चुप है। भूटान भले ही भारत को अपना मित्र मानता हो लेकिन वह चीन से उससे कहीं ज्यादा खौफ खाता है। भूटान के इसी डर ने भारत की चिंताएं बढ़ा दी है। भूटान पिछले कई सालों से इस क्षेत्र में चीन द्वारा लगातार बस्तियां बसाए जाने की बात से इनकार करता रहा है। पिछले कुछ सालों में भूटानी अधिकारियों ने भूटान के क्षेत्र में चीनी बस्तियों की उपस्थिति से इनकार किया है। उधर, दूसरी ओर सेटेलाइट इमेज से कुछ तस्वीर सामने आई हैं। शी जिंगपिन सेना भारत-चीन-भूटान के ट्राई जंक्शन पर जो कुछ कर रही है, उसने सभी को हैरान कर दिया है। सेटेलाइट इमेज से यह पता चला है कि डोकलाम के नजदीक वाले क्षेत्र में चीन ने आठ नए गांव बसा लिए हैं। डोकलाम वही क्षेत्र है जहां साल 2017 में भारत और चीन के बीच विवाद हुआ था, जिसके चलते दोनों सेनाओं के सैनिकों के बीच करीब 73 दिनों तक गतिरोध बना रहा था। तब जैसे-तैसे यह मामला सुलझा था लेकिन इसके बाद से ही चीन इस क्षेत्र में अपने दावे को मजबूत करने के लिए इस तरह से गांव को बसा रहा है।

रूस ने विकसित कर ली कैंसर की वैक्सीन

नए साल में नागरिकों को लगाएंगे मुफ्त में

मॉस्को। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि हमने कैंसर की वैक्सीन बनाने में सफलता हासिल कर ली है। इसकी जानकारी रूसी स्वास्थ्य मंत्रालय के रेडियोलॉजी मेडिकल रिसर्च सेंटर के डायरेक्टर आंद्रेई कप्रीन ने रेडियो पर दी। रूसी मीडिया के मुताबिक, इस वैक्सीन को अगले साल से रूस के नागरिकों को फ्री में लगाया जाएगा। डायरेक्टर आंद्रेई ने बताया कि रूस ने कैंसर के खिलाफ अपनी वैक्सीन विकसित कर ली है। रूस की इस खोज को सदी की सबसे बड़ी खोज माना जा रहा है। वैक्सीन के क्लिनिकल ट्रायल से पता चला है कि इससे ट्यूमर के विकास को रोकने में मदद मिलती है। इससे पहले इस साल की शुरुआत में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बताया था कि रूस कैंसर की वैक्सीन बनाने के बेहद करीब है। एमआरएनए या मैसेंजर-आरएनए इंसानों के जेनेटिक कोड का एक छोटा सा हिस्सा है, जो हमारी सेल्स (कोशिकाओं) में प्रोटीन बनाती है। इसे आसान भाषा में ऐसे भी समझ सकते हैं कि जब हमारे शरीर पर कोई वायरस या बैक्टीरिया हमला करता है। इससे हमारे इम्यून सिस्टम को जो जरूरी प्रोटीन चाहिए, वो मिल जाता है और हमारे शरीर में एंटीबॉडी बन जाती है। इसका सबसे बड़ा फायदा ये है कि इससे कन्वेंशनल वैक्सीन के मुकाबले ज्यादा जल्दी वैक्सीन बन सकती है। इसके साथ ही इससे शरीर की इम्युनिटी भी मजबूत होती है। बता दें भारत में 2022 में कैंसर के 14.13 लाख नए केस सामने आए थे। इनमें 7.22 लाख महिलाओं में, जबकि 6.91 लाख पुरुषों में कैंसर पाया गया। 2022 में 9.16 लाख मरीजों की कैंसर से मौत हुई।

साइबर ठगों का फर्जीवाड़ा उजागर करेगी एआई दादी

लंदन। साइबर ठगी के मामले हर रोज सामने आ रहे हैं। इनसे निपटने के समाधान भी खोजे जा रहे हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए ब्रिटेन की टेलीकॉम कंपनी ओ-2 ने एक अनोखी पहल शुरू की है, जिसके तहत उन्होंने एक एआई दादी लॉन्च की है, जिसका नाम डेजी रखा गया है। डेजी को खासतौर पर स्कैमर्स को उलझाने और उनके समय को बर्बाद करने के लिए डिजाइन किया गया है। ओ-2 का दावा है कि डेजी स्कैमर्स को 40 मिनट तक अपनी बातों में उलझाकर रख सकती है। इस दौरान डेजी उन्हें तरह-तरह की फालतू कहानियां और बातें सुनाती है, जिससे स्कैमर्स को लगे कि वे किसी असल इंसान से बात कर रहे हैं। डेजी का मकसद स्कैमर्स का समय बर्बाद करना है, ताकि वे अपना ध्यान किसी और जगह लगा सकें और उनकी योजनाओं में विघ्न पड़े। यह एआई दादी पूरी तरह से एक चैटबॉट है, लेकिन यह सामान्य चैटबॉट्स से अलग है। डेजी स्कैमर्स की बातें पहले सुनती है, फिर सोचती और समझती है, और इसके बाद जवाब देती है। डेजी की प्रतिक्रियाएं इतनी वास्तविक होती हैं कि स्कैमर्स को लगता है कि वे किसी इंसान से बात कर रहे हैं। इस तकनीक के जरिए ओ-2 कंपनी ने स्कैमर्स के खिलाफ एक मजेदार लेकिन प्रभावी तरीका अपनाया है। डेजी को बनाने के लिए ओ-2 ने एक प्रसिद्ध धोखेबाज जिम ब्राउनिंग से मदद ली है, जिन्होंने डेजी को स्कैमर्स से निपटने के कई तरीके सिखाए हैं। जिम ब्राउनिंग खुद एक साइबर सुरक्षा एक्सपर्ट हैं और उन्होंने बहुत समय तक स्कैमर्स को पकड़ने के काम में अपनी विशेषज्ञता का इस्तेमाल किया है।

मनी लॉन्ड्रिंग | कांग्रेस नेता के घर तीसरे दिन भी ईडी ने की कार्रवाई

4 करोड़ से ज्यादा कैश बरामद, 24 ठिकानों पर मारी रेड

समय जगत, भोपाल। मध्य प्रदेश के इंदौर में कांग्रेस नेता गोलू अग्निहोत्री के यहां प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की कार्रवाई तीसरे दिन भी लगातार जारी रही। बुधवार को भी टीम ने सुबह से सर्चिंग की। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक पूरी कार्रवाई में अब तक 4 करोड़ रुपए से ज्यादा नकदी मिल चुकी हैं। वहीं 8 करोड़ से ज्यादा की रकम अकाउंट में ईडी ने फ्रिज किया है। इसके अलावा सोने-चांदी और अन्य मूल्यवान वस्तुओं की कीमत का भी आकलन किया जा रहा है। ईडी की टीम गोलू अग्निहोत्री से जुड़े तरुण श्रीवास्तव के घर सिंगापुर टाउनशिप में भी सर्चिंग कर रही है। तरुण के विरुद्ध फेमा, क्रॉस बार्डर इंटरनेशनल कनेक्शन, हवाला, बैटिंग और डिब्बा कारोबार की जांच चल रही है। ईडी के मुताबिक टीम को तरुण के घर सर्चिंग में एक देसी पिस्टल, दो मैगजीन और पांच कारतूस मिले हैं। इस मामले में मंगलवार देर रात लसूड़िया पुलिस ने तरुण के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। बताया जा रहा है कि कांग्रेस नेता गोलू अग्निहोत्री क्रिकेट सट्टा और डब्बा कारोबार के साथ मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में जांच के घेरे में है। दुबई से लौट रहे गोलू को ईडी टीम ने रविवार रात मुंबई एयरपोर्ट पर हिरासत में लिया था। इसके बाद सोमवार सुबह गोलू के घर पर छापा मारा गया। ईडी टीम ने इस कार्रवाई की स्थानीय पुलिस को भनक तक नहीं लगने दी। जांच के दौरान कांग्रेस नेता के घर पर सुरक्षा के लिए सीआरपीएफ के जवान भी तैनात किए गए।

महंगाई की मार झेल रहे गरीबों के लिए राहत की योजनाएं चलाए सरकार

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती ने विधानसभा सत्र में सरकार से गरीबी के लिए राहत की योजनाएं चलाने की अपील की है। साथ ही उन्होंने कहा कि अगर ऐसा होता है तो ये प्रयागराज में हो रहे महाकुंभ का बड़ा उपहार होगा। मायावती ने बुधवार को एक्स के जरिए पोस्ट में लिखा कि यूपी में भी गरीबी, बेरोजगारी व महंगाई से त्रस्त लोगों के हितों में यहां चल रहे विधानसभा सत्र में सरकार को कुछ ऐसी योजनाएं शुरू करना चाहिए जिससे इनको राहत मिले। उन्होंने आगे कहा कि ऐसा किए जाने पर फिर सरकार का यहां प्रयागराज के महाकुंभ का इनके लिए बहुत बड़ा उपहार होगा। इससे फिर इनको कुछ हद तक राहत मिलेगी। गौरतलब है कि प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन बड़े स्तर पर हो रहा है। इस बार महाकुंभ की शुरुआत 13 जनवरी से होगी। इसका समापन 26 फरवरी को होगा। महाकुंभ का विशेष महत्व है, क्योंकि प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन होता है। हर 12 साल में विशेष रूप से चार स्थानों प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में यह आयोजित किया जाता है। धार्मिक मान्यता के मुताबिक इस आयोजन में पवित्र नदियों में स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कठुआ में घर में आग लगने से 6 की हुई मौत, 3 की हालत गंभीर

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के कठुआ में अचानक दर्दनाक हादसा हो गया। यहां एक घर में आग लग गई। आग इतनी तेज थी कि घर में सो रहे 9 लोगों को भागने का भी मौका नहीं मिला। शार्ट-शर्किट से लगी आग में 6 लोगों की मौत हो गई,जबकि 3 लोगों को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इसके अलावा मदद के लिए आए एक पड़ोसी के भी बेहोश होने की जानकारी सामने आई है। हादसे में गंगा भगत- उम्र 17 वर्ष,दानिश भगत- उम्र 15 वर्ष,अवतार कृष्ण- उम्र 81 वर्ष,बरखा रैना- उम्र 25 वर्ष, ताकाश रैना- उम्र 3 वर्ष, अद्विक रैना- उम्र 4 वर्ष की मौत हो गई। सूचना के बाद मौके पर पुलिस और फायर कर्मी पहुंच गए हैं। जानकारी के अनुसार हादसे के वक्त घर के अंदर 9 लोग थे। सभी लोग सो रहे थे। इसी दौरान अचानक शार्ट-शर्किट से आग भड़क गई। पूरे घर में धुआं भर गया। इस आगजनी में दम घुटने से 6 लोगों की मौत हो गई है। जबकि 3 लोग दम घुटने से बेहोश हो गए हैं। जिसमें एक पड़ोसी भी है, जो घर में फंसे लोगों की मदद कर रहा था। बेसुध लोगों का इलाज कठुआ के जीएमसी अस्पताल में चल रहा है। सूचना के बाद मौके पर पुलिस और फायर कर्मी पहुंच गए हैं। आग बुझाने में फायर बिग्रेड की टीम जुटी हुई है। वहीं घर में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। आग लगने का कारण शॉर्ट-सर्किट बताया जा रहा है। घर में शॉर्ट-सर्किट के बाद आग लगी, जिससे हादसा हुआ। कठुआ में आग में 6 लोगों की मौत हुई है, जिनमें बच्चे और बुजुर्ग भी शामिल हैं। आग में घुटन से बेहोश हुए 3 लोगों को कठुआ के जीएमसी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाने का काम किया।

कलेक्टर ने की विभिन्न निर्माण विभागों द्वारा कराए जा रहे सिंहस्थ के कार्यों की विस्तृत समीक्षा

समय जगत, उज्जैन। कलेक्टर नीरज कुमार सिंह ने बुधवार 18 दिसंबर को प्रशासनिक संकुल भवन सभागृह में सिंहस्थ के दौरान विभिन्न निर्माण विभागों के द्वारा कराए जा रहे कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। कलेक्टर सिंह ने बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे समन्वय से व्यवस्थित काम गुणवत्तापूर्ण तरीके से सम्पन्न कराया जाना सुनिश्चित करें। सिंहस्थ के दौरान होने वाले समस्त निर्माण कार्यों को किसी भी थर्ड पार्टी से चेक करायें। इसलिए अधिकारी अपने-अपने विभागों में चल रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का विशेष ध्यान देकर निर्धारित समयावधि में कार्यों को पूर्ण किया जाए। कलेक्टर ने बैठक में नगर निगम, पीएचई, जल संसाधन, लोक निर्माण, विद्युत, पीआईयू, स्मार्ट सिटी, मध्यप्रदेश पुलिस हाउसिंग आदि विभागों में किए जा रहे निर्माण कार्यों की विस्तार से समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। कलेक्टर नीरज कुमार सिंह ने अधिकारियों को

निर्देश दिए कि जिन निर्माण कार्यों के टेंडर नहीं हुए है वे समयसीमा में टेंडर की प्रक्रिया एवं अन्य आवश्यक कार्य पूरा कर निर्माण कार्य प्रारंभ कराए जाए। जिले में एवं उज्जैन शहर के आंतरिक एवं आस-पास के प्रस्तावित सड़क चौड़ीकरण कार्यों की समीक्षा कर संबंधितों को कार्य समयसीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। इसी तरह प्रस्तावति पार्किंग, कालभैरव मंदिर के समीप मल्टी पार्किंग, देवासगेट बस स्टेण्ड के जीर्ण शीर्ण होने के कारण नवीन बस स्टेण्ड के निर्माण, छत्रीचौक रीगल टॉकिज पर पार्किंग प्लाजा व दुकानों का निर्माण कार्य, कपिला गौशाला, जल प्रदाय एवं सिवरेज कार्य, जल आवर्धन योजनांतर्गत डिस्टीब्यूशन पाईपलाईन निर्माण आदि कार्य, रोप-वे, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के प्रगतिरत सड़कों के कार्य, जलसंसाधन, कान्ह डायवर्जन क्लोज डक्ट परियोजना, सेवरखेड़ी- सिलारखेड़ी मध्यम परियोजना आदि कार्यों की विस्तार से समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती जयति सिंह तथा संबंधित विभागों अधिकारी उपस्थित थे।

स्कोप ने जीएसटीः मुद्दे और प्रभाव पर आयोजित की कार्यशाला

नई दिल्ली। सार्वजनिक उद्यमों के स्थायी सम्मेलन (स्कोप) ने भारतीय लागत लेखाकार संस्थान (आईसीएमएआई) के सहयोग से हाल ही में स्कोप कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में जीएसटी मुद्दे और प्रभाव पर एक इंटरैक्टिव कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन स्कोप के अध्यक्ष एवं गेल के सीएमडी श्री संदीप कुमार गुप्ता ने किया। श्री अतुल सोबती, महानिदेशक, स्कोप; आईसीएमएआई से सीएमए मनोज कुमार आनंद और सीएमए निशा दीवान ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। कार्यशाला में विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों के 60 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों को तकनीकी सत्रों, विशेषज्ञों के नेतृत्व वाली चर्चाओं और केस अध्ययनों के माध्यम से जीएसटी के विकसित ढांचे की गहरी समझ से लैस करना था। इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) को अनुकूलित करने, जोखिमों को कम करने और नवीनतम जीएसटी संशोधनों और निर्णयों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि भी प्रदान की।

न्यायाधीशगण पहुंचे जिला जेल का निरीक्षण करने, बंदियों को दिये जा रहे भोजन की गुणवत्ता को परखा

समय जगत, धार। प्रधान जिला न्यायाधीश संजीव कुमार अग्रवाल के निर्देशानुसार विशेष सत्र न्यायाधीश पंकज महेश्वरी एवं जिला विधिक सहायता सचिव जिला न्यायाधीश उमेश कुमार सोनी एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी श्रीमती नताशा शेख पटेल द्वारा मंगलवार को जिला जेल धार का निरीक्षण किया गया तथा जेल में निरुद्ध बंदियों की समस्याओं और उनके खाने पीने की व्यवस्थाओं के बारे मे जानकारी ली गई ।तथा उन्हें दिए जा रहे हैं आहार की गुणवत्ता की जांच की गई तथा बंदियों की समस्याओं को सुना गया ।कार्यक्रम में लीगल एंड डिफेंस काउंसिल कार्यालय धार की ओर से श्रीमती नीति आचार्य सोनी डिप्टी चीफ जिशान मोहम्मद शेख डिप्टी चीफ एल. ए. डी. सी.कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

जनपद में एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय अल्पविराम परिचय कार्यशाला संपन्न

समय जगत, नर्मदापुरम। जनपद पंचायत नर्मदापुरम के सभागृह में ब्लॉक स्तरीय एक दिवसीय अल्पविराम कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ सोजान सिंह रावत मुख्य कार्यालय पालन अधिकारी जिला पंचायत नर्मदा पुरम एवं मंजू लता पटेल उपाध्यक्ष जनपद पंचायत नर्मदापुरम के द्वारा दीप प्रज्वल कर किया गया तत्पश्चात सुंदर भजन की प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम शुभारंभ हुआ शुभारंभ के अवसर पर श्री रावत जी ने कहा कि शासकीय हमले को अपने कार्य के साथ-साथ स्वयं के जीवन को भी आनंद के साथ जीना आना चाहिए, जिसके लिए हमे स्वयं के लिए समय निकालना चाहिए कार्यक्रम के पहले सत्र मे उपस्थित प्रतिभागियों से उनके लिए आनंद क्या है और किन बातों से उनका आनंद घटता और बढ़ता है, प्रश्न से आगे

बढते हुए राज्य आनंद संस्थान का परिचय विस्तार से मास्टर ट्रेनर ओम प्रकाश विश्वकर्मा के द्वारा दिया गया और उनके बाद कार्यक्रम समन्वयक और मास्टर ट्रेनर सुमन सिंह के द्वारा उपस्थित लोगों को उनके जीवन कर लेखा जोखा के माध्यम से कुछ प्रश्नो के जरिये समझाते हुए उन्होंने अपनी बात रखी कि किस तरह हम अपने जीवन का आनंद का मूल्यांकन खुद कर सकते हैं और इस मूल्यांकन के आधार पर अपने जीवन में हो रहे उतार-चढ़ाव और कमियों को समझते हुए कैसे हम आनंद की प्राप्ति कर सकते हैं उसके बाद हिमांशु स्वर्णकार के दवारा हमारे रिश्ते के ऊपर सत्र लिया गया जिसमे उन्होंने हमारे आसपास के सभी रिश्तों को एक रिश्तों के मेप की मदद से समझने की कोशिश की कि हमारी जिंदगी में अगर हमारे रिश्ते किसी के साथ बिगड़े हुए हैं तो उस विचार के रहते हम आनंद की प्राप्ति नहीं कर सकते इसलिए हमें अपने रिश्तों को आनंद की प्राप्ति के लिए सुधारते हुआ आगे बढ़ना चाहिए, उन्होंने सभी को अपने रिश्तों का चार्ट बनाने को कहा और उपस्थित लोगों को उनके रिश्ते के नजदीक ले जाते हुए अनुभव कराया कि उनके खुद के रिश्ते किसके साथ अच्छे हैं और किसके साथ उनके दरार भरे हैं, बुरे रिश्तो को समझते हुए उनके सुधार पर कार्य किया जाए ताकि जीवन आनंद की प्राप्ति हो सके तत्पश्चात सुमन सिंह द्वारा कार्यक्रम को समापन की ओर ले जाते हुए सभी को अपनी जिंदगी मे शांत समय लेते हुए आगे बढ़ना चाहिये के लिए प्रेरित किया हम रोज शांत समय ले और अपने आप से बाते करना शुरू करे ताकि हमको खुद ही अपनी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ पता चल सके और हम उन पर काम कर सके प्रशिक्षण के समापन को बहुत ही सुंदर गाना किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार के साथ किया गया।

शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने भरतपुर विकासखंड पहुंचे जिला शिक्षा अधिकारी

समय जगत, मनेद्रगढ़। जिला शिक्षा अधिकारी, एमसीबी, अजय मिश्रा ने मंगलवार को भरतपुर विकासखंड का दौरा किया। उनके साथ विकासखंड शिक्षा अधिकारी भरतपुर श्री मोहम्मद इस्माइल खान और सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी सुदर्शन पैकरा भी उपस्थित रहे। दौरे की शुरुआत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय माडीसरई से हुई, जहां निरीक्षण के दौरान कुछ शिक्षक देर से उपस्थित पाए गए, और कुछ अनुपस्थित रहे। इस पर जिला शिक्षा अधिकारी ने संबंधित शिक्षकों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।इसके बाद प्राथमिक शाला देवगढ़ और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय देवगढ़ का दौरा किया गया। वहां शिक्षकों के साथ बैठक आयोजित कर विद्यालय संचालन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए।निरीक्षण के दौरान ठंड के मौसम को देखते हुए सभी छात्र-छात्राओं को गर्म कपड़ों का वितरण किया गया। यह कदम बच्चों के स्वास्थ्य और उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए उठाया गया।प्राचार्यों की बैठक-शत-प्रतिशत परिणाम का लक्ष्य स्वामी आत्मानंद शासकीय इंग्लिश स्कूल, भरतपुर में विकासखंड के सभी शासकीय विद्यालयों के प्राचार्यों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बोर्ड परीक्षा के शत-प्रतिशत परिणाम लाने और सभी छात्र-छात्राओं की आधार आईडी समय पर जनरेट करने पर चर्चा हुई। जिला शिक्षा अधिकारी ने 20 दिसंबर तक सभी प्राचार्यों को आधार आईडी जनरेट करने के निर्देश दिए।इसके अलावा, दोपहर 2 से 3 बजे के बीच अशासकीय विद्यालयों के प्राचार्यों और प्रधान पाठकों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में उन्हें भी बोर्ड परीक्षा में अच्छे परिणाम लाने और छात्रों की आधार आईडी जनरेट करने के निर्देश दिए गए।

कलेक्टर से मिले एसोसिएशन के पदाधिकारी, धन्यवाद किया ज्ञापित

शिक्षकों की समस्याओं के प्राथमिकता से निराकारण के लिए कलेक्टर श्री मिश्रा को दिया धन्यवाद

मण्डला। मंगलवार को ट्राइबल वेलफेयर टीचर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने मंडला कलेक्टर सोमेश मिश्रा से मुलाकात की, जहां एक और पदाधिकारियों ने मंडला में पंचचौकी आरती जैसे उनके अविस्मरणीय कार्य के लिए सराहना की वहीं शिक्षकों की समस्याओं को प्राथमिकता के साथ निराकृत करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर कलेक्टर ने सभी क्रमोन्नत प्राप्त करने वाले शिक्षकों को बधाई दी और कहा कि शिक्षकों को सेवा संबंधी कोई समस्या नहीं आने देंगे। हाल ही में प्राथमिक शिक्षक, सहायक शिक्षक, उच्च श्रेणी शिक्षक और प्रधान पाठकों सहित कुल 542 शिक्षकों के क्रमोन्नति आदेश जारी होने पर एसोसिएशन ने कलेक्टर सोमेश मिश्रा जी का आभार माना। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षकों के भी क्रमोन्नति समयमान वेतनमान के आदेश संभागीय उपायुक्त जबलपुर से शुरू हो गए हैं।एसोसिएशन ने विगत 1 माह पूर्व अवगत कराया था कि शिक्षकों के क्रमोन्नति और समयमान वेतनमान की कार्यवाही बहुत लंबे समय से लंबित है शिक्षकों द्वारा तीन तीन चार चार बार क्रमोन्नति के प्रस्ताव जमा करने के बाद भी आदेश नहीं हो रहे हैं। शिक्षक अपनी क्रमोन्नति को लेकर परेशान हैं, प्रतिमाह उनका आर्थिक नुकसान भी हो रहा है। कलेक्टर मंडला द्वारा एसोसिएशन की इस शिकायत को गंभीरता से लिया गया और क्रमोन्नति की समस्या का निराकारण टी एल में लेकर कराया गया।

542 शिक्षकों को क्रमोन्नति का लाभ मिल जाने पर मंगल वार को ही एसोसिएशन ने टी एल से अपनी शिकायत वापिस ले ली है। एसोसिएशन ने कलेक्टर को इस बात के लिए भी धन्यवाद दिया कि एसोसिएशन के आग्रह पर ही पुनः प्रशासनिक स्तर पर सेवा निवृत शिक्षकों का सम्मान कार्यक्रम प्रारंभ कर समय में पीपीओ वितरण किया जा रहा है। मंगलवार को ही एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रेयांश कुमट से भी मुलाकात की जिन्होंने इस सोच के साथ क्रमोन्नति की कार्यवाही कराई की कोई भी शिक्षक क्रमोन्नति से न छुटे। मुलाकात के दौरान सी ई ओ जिला पंचायत ने कहा कि यदि अब भी कोई शिक्षक क्रमोन्नति से छूटा होगा तो उसको भी शीघ्र क्रमोन्नति का आदेश कराया जाएगा।

रायपुर-अंबिकापुर हवाई सेवा आज होगी शुरू

समय जगत, अम्बिकापुर। रायपुर से अंबिकापुर के बीच हवाई सेवा का शुभारंभ आज 19 दिसंबर को होगा। सांसद चिंतामणि महाराज ने जानकारी देते हुए बताया कि वे स्वयं पहली फ्लाइट से रायपुर से अंबिकापुर पहुंचेंगे और एयरपोर्ट की सुविधाओं का निरीक्षण करेंगे। सांसद महाराज ने बताया कि नई दिल्ली में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू और नागरिक उड्डयन सचिव वी. वुअलनाम से मुलाकात के दौरान हवाई सेवा की शुरुआत को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। बातचीत के दौरान यह सामने आया कि इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन का हवाई अड्डा कोड न मिलने के कारण विमान संचालन में देरी हो रही थी। सांसद ने इस समस्या के तत्काल समाधान की मांग करते हुए कहा कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वे अपने वेतन से अतिरिक्त खर्च भी वहन करेंगे। सांसद चिंतामणि महाराज ने बताया कि 19 दिसंबर को मां महामाया एयरपोर्ट, दरिमा से पहली हवाई यात्रा शुरू होगी। इस अवसर पर उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राममोहन नायडू और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार प्रकट किया। साथ ही, क्षेत्रवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह सुविधा सरगुजा क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगी।

विधायक ने उठाया विधानसभा में मुद्दा

पिछोर को जिला बनाने विधायक प्रीतम सिंह लोधी ने दिया जोर

समय जगत, शिवपुरी। शिवपुरी जिले की पिछोर विधानसभा अंतर्गत पिछोर विधायक प्रीतम सिंह लोधी पिछोर को जिला बनाने की ओर प्रयासरत हैं! जब से तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह द्वारा पिछोर को जिला बनाने की घोषणा की गई है! तभी से प्रीतम सिंह लोधी ने यह ठान लिया था कि वह अब पिछोर को जिला बनाकर ही छोड़ेंगे! प्रीतम सिंह लोधी के पिछोर विधायक बनने के उपरांत उनकी यह कोशिश और तेज हो गई! हाल ही में उन्होंने पिछोर क्षेत्र की जनता को आश्वासन दिया है कि वह जल्द ही पिछोर को जिला बनाकर रहेंगे! इसी क्रम में पिछोर विधायक प्रीतम सिंह लोधी द्वारा मध्य प्रदेश विधानसभा में यह प्रश्न उठाया गया कि 21 अगस्त 2023 को पिछोर में आयोजित लाडली बहना कार्यक्रम के अंतर्गत तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा पिछोर को जिला बनाने के लिए की गई घोषणा को पूर्ण करने में विलंब क्यों हो रहा है! मध्य प्रदेश शासन द्वारा पिछोर को जिला बनाने की प्रक्रिया कहां तक पूर्ण की गई है! उठाए गए विधानसभा में इन प्रश्नों के माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि पिछोर विधायक प्रीतम सिंह लोधी लगातार पिछोर को जिला बनाने की ओर प्रयासरत बने हुए हैं! क्षेत्र की जनता ने पिछोर विधायक के प्रयासों की सराहना करते हुए उम्मीद जताई है कि शीघ्र ही पिछोर जिला बन जाएगा।

चतुर्भुज मालव को राजस्थान परिवहन निगम संयुक्त कर्मचारी फेडरेशन का बनाया प्रदेश मंत्री

समय जगत, बारां। राजस्थान परिवहन निगम संयुक्त कर्मचारी फेडरेशन सम्बद्ध भारतीय मज़दूर संघ के पुष्कर (अजमेर) में आयोजित 16वें त्रैवार्षिक प्रदेश अधिवेशन में नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें चतुर्भुज मालव को प्रदेश मंत्री नियुक्त किया गया। मालव का बारां पहुंचने पर मालव धाकड विकास समिति की ओर से फूल माला पहनाकर व मिठाई खिलाकर स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर महावीर मालव संगठन मंत्री, चंद्रमोहन मालव कोषाध्यक्ष, धर्मेंद्र मालव उप सहकोषाध्यक्ष, रामप्रसाद मालव महामंत्री, महावीर मालव बोहत, दिनेश कुमार मालव ठूंसरा, लीलाधर मालव बावडीखेडा, धनराज मालव बावडीखेडा, बनवारी मालव दाबडिया, लक्ष्मीचंद मालव बावडीखेडा, शिवराज मालव रायथल, घनश्याम मालव रायथल, सुरेश मालव बावडीखेडा आदि शामिल रहे। इस अवसर पर रोडवेज कर्मचारी मुकेश पारेता, महेंद्र मिश्रा, महेश मेहता, चंदीप सिंह, तेजप्रकाश मालव, प्रकाशचंद मीणा, धनराज मीणा, भारतीय मजदूर संघ के जिला संरक्षक ओमप्रकाश शर्मा, जिलाध्यक्ष सतीश नामा, रामप्रसाद भगत आदि द्वारा स्वागत किया गया।

भीमडोंगरी विद्यालय के छात्र जितेंद्र कुमार मरावी का राष्ट्रीय योग ओलंपियाड में चयन

समय जगत, मण्डला। जिले के अंतिम छोर पर स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भीमडोंगरी के छात्र जितेंद्र कुमार मरावी ने एक और उपलब्धि हासिल कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। कक्षा दसवीं में अध्ययनरत जितेंद्र का चयन योगा में राष्ट्रीय स्तर के योग ओलंपियाड के लिए हुआ है। इस चयन से विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल है और छात्र की मेहनत की सराहना की जा रही है। जितेंद्र ने अपनी उत्कृष्टता को साबित करते हुए योगा में अपनी जगह बनाई है। यह उपलब्धि उनके लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बनी है और उनकी मेहनत का फल उन्हें मिल रहा है। इससे पहले भी इस विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने राज्य स्तरीय योगा प्रतियोगिता में भाग लिया था, जिसमें 6 छात्र-छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और संस्था का नाम गर्व से रोशन किया। जितेंद्र की सफलता केवल उसकी मेहनत का परिणाम नहीं है, बल्कि यह विद्यालय प्राचार्य प्रदीप पटेल एवं समस्त विद्यालय के स्टाफ की कड़ी मेहनत और शिक्षकों की मार्गदर्शन का भी परिणाम है। सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग डॉ. संतोष शुक्ला और जिला क्रीड़ा अधिकारी मंगल पन्द्रे सहित विद्यालय परिवार ने जितेंद्र को इस उपलब्धि पर बधाई दी है। साथ ही शुभचिंतकों और परिजनों ने भी उसे इस सफलता के लिए शुभकामनाएं दी हैं। जितेंद्र कुमार मरावी की यह सफलता न केवल मण्डला जिले, बल्कि पूरे क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। इस सफलता से यह स्पष्ट होता है कि अगर व्यक्ति में प्रतिभा और मेहनत हो, तो उसे कोई भी मंजिल प्राप्त करने से रोक नहीं सकता।

पत्रकार के हमलावरों की गिरफ्तार की मांग: प्रेस क्लब मनावर और प्रेस क्लब ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट ने पुलिस महा निदेशक के नाम सौंपा ज्ञापन

समय जगत, मनावर। विगत दिवस इलेक्ट्रानिक मीडिया के पत्रकार संतोष चौहान के साथ मारपीट करने वाले ग्राम कलाल्दा के सरपंच राधेश्याम पटेल एवं सचिव मुन्नालाल के दस साथियों सहित गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रेस क्लब मनावर के पत्रकार ,और प्रेस क्लब ऑफ वर्जिन जर्नलिस्ट के साथियों ने पुलिस महानिदेशक के नाम ज्ञापन पुलिस अनुविभागीय अधिकारी श्री मति अनु बेनीवाल को सौंपा। ज्ञापन का वाचन प्रेसक्लब मनावर के संरक्षक श्री जय प्रकाश सेन ने किया। ज्ञापन के माध्यम से कहा कि संतोष गंभीर हालत में धार मै भरती है।और आए दिन मीडिया साथियों पर माफियाओं द्वारा हमला कर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कुचला जा रहा है हम सब मीडिया साथी आपसे अनुरोध करते हैं कि धार जिले के मनावर तहसील क्षेत्र में हो रही घटनाओं पर संज्ञान लेकर घटना करने वाले आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाए। कुछ मामलों में अवैध रेत मुरम माफिया पत्रकार साथी पर हमला कर

जानसे मारने की धमकी देते है और झुटी रिपोर्ट आदिवासी हरिजन एक्ट में फसाने की धमकी देकर समझौते करते है। उन माफिया ओ के खिलाफ भी करवाही हो। एस डीओपी महोदया ने कार्यवाही का भरोसा दिया तथा कहा कि मैं स्वयं जाकर तफ्तीश करूंगी ज्ञापन के दौरान प्रेस क्लब अध्यक्ष अनिल जैन, उपाध्यक्ष सैयद रिजवान अली,संरक्षक जयप्रकाश सेन, ,शकील खान , फारुक नसिरखान अशोक जैन चेतन जिराती, नितिन मंडवाल,मोहम्मद अयाज खान, इकबाल मंसूरी, सन्नी रिन,फिरोज आरके ,आकाश पांडे, अश्विन शर्मा दलीप तंवर प्रेस क्लब वर्किंग जर्नलिस्ट के सदस्य और राष्ट्रीय पदाधिकारी आदि मौजूद रहे।

विभागीय योजनाओं से हितग्राहियों को करें लाभान्वित : कलेक्टर प्रतिभा पाल

कलेक्टर ने मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के शिविर का लिया जायजा

समय जगत, रीवा। शासन के निर्देशों के अनुसार जिले के सभी विकासखण्डों में ग्राम पंचायतवार शिविर लगाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत लगाए जा रहे इन शिविरों में आमजनता को शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। इस क्रम में रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड की ग्राम पंचायत बरा में आयोजित शिविर का कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने जायजा लिया। कलेक्टर ने आमजनता से संवाद करते हुए कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ देने तथा जनसमस्याओं के निराकरण के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में शिविर लगाए जा रहे हैं। आमजनता इन शिविरों से लाभ उठाए। शिविरों के माध्यम से प्रत्येक पात्र व्यक्ति को योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। शिविर में आमजनता से संवाद करते हुए कलेक्टर ने कहा कि उचित मूल्य दुकान से खाद्य सुरक्षा योजना के तहत हर माह खाद्यान्न का वितरण किया जाता है। खाद्य विभाग के अधिकारी समय पर उचित मूल्य दुकान में आवंटित खाद्यान्न भण्डारित कराकर उसका वितरण कराएं। ग्राम पंचायत में समूह नलजल योजना के तहत हर घर में नल से पानी पहुंचाने के लिए पेयजल की पाइपलाइन बिछाई जाएगी। पंचायत के हर मजरे-टोले में पाइपलाइन बिछाकर प्रत्येक घर में नल कनेक्शन दें। पानी की आपूर्ति होने पर जिन घरों में कनेक्शन हों वे हर महीने पंचायत द्वारा निर्धारित राशि अवश्य जमा करें। कलेक्टर ने कहा कि किसान अपने खेतों में खाद का संतुलित उपयोग करें। खेत की मिट्टी की जाँच कराकर उसमें जिस तत्व की कमी हो उसके अनुसार खाद डालें। डीएपी खाद के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट और एनपीके खाद अधिक लाभदायी है। इसके उपयोग से मिट्टी की उर्वरा क्षमता बढ़ने के साथ राशि की भी बचत होती है। कलेक्टर ने गांव की साफ-सफाई व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, आँगनवाड़ी तथा स्कूलों के संचालन एवं ग्राम स्तरीय विभागीय गतिविधियों की जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना की प्रतीक्षा सूची को ग्राम पंचायत की दीवार पर अंकित करा दें। निरीक्षण के समय अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, एसडीएम पीएस त्रिपाठी, सरपंच श्रीमती मीरा सिंह, परियोजना अधिकारी जिला पंचायत फरहत जैब, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत संजय सिंह, नोडल अधिकारी राजीव त्रिपाठी, सेक्टर प्रभारी जीएन श्रीवास्तव, ग्राम पंचायत सचिव, रोजगार सहायक, पटवारी तथा अन्य ग्राम स्तरीय कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने दो धान खरीदी केन्द्रों का किया निरीक्षण

रीवा। जिले भर में 92 खरीदी केन्द्रों में निर्धारित समर्थन मूल्य पर पंजीकृत किसानों से धान का उपार्जन किया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने रायपुर कर्चुलियान तहसील में खरीदी केन्द्र में माँ भगवती वेयरहाउस अमिलिया तथा माँ गायत्री वेयरहाउस महसुआ का निरीक्षण किया। कलेक्टर ने खरीदी केन्द्र में किसानों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि स्लॉट बुक करने वाले किसानों से समय पर खरीदी करें। खरीदे गए धान को वेयरहाउस में व्यवस्थित रूप से स्टेग बनाकर रखें। किसानों को उपार्जित धान का समय पर भुगतान कराएं। जिला महाप्रबंधक सहकारी बैंक अधीनस्थ सभी बैंक शाखाओं में पर्याप्त मात्रा में राशि उपलब्ध करा दें जिससे किसानों को भुगतान प्राप्त करने में किसी तरह की कठिनाई न हो। कलेक्टर ने किसानों से चर्चा करते हुए कहा कि उपार्जन के लिए धान साफ करके तथा सुखाकर लाएं। खरीदी केन्द्र में निर्धारित मात्रा में ही धान दें। कलेक्टर ने समिति प्रबंधक को खरीदी केन्द्र की व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश दिए। दोनों खरीदी केन्द्रों में उपस्थित किसानों से धान का उपार्जन करके वेयरहाउस में भण्डारण किया जा रहा था। निरीक्षण के समय अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, एसडीएम मनगवां पीएस त्रिपाठी, जिला महाप्रबंधक सहकारी बैंक ज्ञानेन्द्र पाण्डेय, सहायक आपूर्ति अधिकारी सुभाष द्विवेदी तथा किसान उपस्थित रहे।

सार-समाचार

भाजपा पितृ पुरुष केशव पाण्डेय का निधन अत्यंत दुखद: नागेंद्र सिंह

गुढ़ (नि.प्र.)। भारतीय जनता पार्टी विंध्यक्षेत्र के पितृ पुरुष और भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश मंत्री राजेश पाण्डेय के पिता श्री केशव पाण्डेय जी का दुखद निधन पर गुढ़ विधानसभा क्षेत्र के विधायक नागेंद्र सिंह द्वारा गहरा दुख व्यक्त किया है। विधायक श्री सिंह ने कहा कि उनका कि उनका पूरा जीवन भाजपा संगठन एवं समाजसेवा के प्रति समर्पित रहा।उनके दुखद निधन पर एक बहुत बड़ा स्थान रिक्त हो गया जिसकी पूर्ति करना संभव नहीं है।उन्होंने परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने और शोकाकुल परिजनों को यह ब्रज सहन करने की शक्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की है।उनके निधन पर नगर परिषद अध्यक्ष डॉ अर्चना सिंह, विधायक प्रतिनिधि बाबूलाल यादव भाजपा मंडल गुढ़ के अध्यक्ष एड.अनंत कुमार गुप्ता, गोविंदगढ़ अध्यक्ष प्रदीप त्रिपाठी, रायपुर कर्चुलियान अध्यक्ष अभिषेक सिंह,भाजपा नेता नारायण मिश्रा,विश्वंभर नाथ पटेल,जिला महामंत्री अशोक सिंह गहरवार,पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष गोविंदगढ़ राजेश कुमार गुप्ता,एड.के टी निवास मिश्रा,बीरेंद्र मिश्रा,भाजपा नेत्री श्रीमती अंजू मिश्रा, वरिष्ट चिकित्सक डॉ बी एल मिश्रा, श्रीमती माया सिंह पटेल,लक्ष्मी कांत शुक्ला,राजगोपाल मिश्रा चारी,बालेंद्र शुक्ला,जितेन्द्र मिश्रा,श्रीमती विमलेश मिश्रा, श्रीमती अनिता मिश्रा, तुलसी दास कोल,कपूरचंद्र अवधिया, मोती लाल मिश्रा,अरुण सिंह, डॉ.ज्ञानेश्वर द्विवेदी,अनिल सिंह, डॉ.ओम प्रकाश मिश्रा,भूपेंद्र सिंह,बी के पाण्डेय, काशी नाथ पटेल,कपिल पयासी, रावेंद्र मिश्रा,नीलमणि मिश्रा, बिष्णु प्रताप सिंह, रवींद्र तिवारी, राशिद खान कुरैशी,श्रीमती गीता मुंद्रिका तिवारी,ओम त्रिपाठी,बालेंद्र त्रिपाठी,श्रीमती बबिता आनंद यादव,अशोक कचेर,श्रीकान्त त्रिपाठी,आलेश पयासी,विपुल प्रकाश मिश्रा,दीनदयाल उपाध्याय,दामोदर प्रसाद नामदेव, द्यजगदीश गौटिया, श्रीमती विमला रावत,रामरक्षा गुप्ता,दिलीप दुबे, डॉ.आर बी प्रजापति,मुकेश राजीव मिश्रा,हीरालाल नामदेव,एड. जे डी सिंह,सत्य प्रकाश चतुर्वेदी, इंद्रेश मिश्रा,कैलाश सोनी, सनत कुमार शुक्ला,भृगुनाथ पाण्डेय,प्रद्युवन प्रसाद तिवारी सहित कई लोगों ने दुख व्यक्त किया है।

शिविर में नागरिकों के किए गए हितग्राही मूलक काम

समय जगत, रीवा। यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ0 मोहन यादव जी के आह्वान पर मुख्यमंत्री-जनकल्याण-अभियान अंतर्गत जन कल्याण पर्व शिविर का वार्डवार निरंतर आयोजन किया जा रहा है।इस क्रम में निगमायुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे के निर्देशन मे 18 दिसंबर को नगर निगम अंतर्गत जोन क्र. 1 वार्ड क्र. 05 ढेकहा रीवा में आयोजन किया गया।शिविर में नागरिकों को सभी हितग्राही मूलक लाभ जिनमें आयुष्मान कार्ड, पेंशन, राष्ट्रीय योजनाओं के लाभ, और स्थानीय शिकायतों का समाधान प्रदान किया जा रहा है। शिविर में पहुँचकर निगम आयुक्त हितग्राहियो से मिलकर उनकी शिकायतों से अवगत हुये एवं निराकरण हेतु अधिकारियो एवं कर्मचारियों को निर्देशित किया।इस दौरान निगमायुक्त ने सभी विभागो में प्राप्त आवेदनों की जानकारी ली तथा हितग्राहियों को योजनाओं का तत्काल लाभ प्रदान करने हेतु प्रभावी क्रियांन्वयन के निर्देश दिए।वार्ड में प्रस्तावित निर्माण कार्यो को तत्काल प्रारंभ कराये जाने के निर्देश दिए गये साथ ही कार्यादेश जारी होने के वाद कार्य न प्रारंभ करने एवं विकास कार्यो में अनावश्यक विलंब करने पर संविदाकार को ब्लैकलिस्ट किये जाने के निर्देश दिए।इसके पश्चात निगमायुक्त ने वार्ड भ्रमण कर आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया।आमजन की मॉग पर वार्ड मे स्थित पार्क में स्ट्रीट लाइट एवं रोलिंग गेट लगाने के साथ योजना बनाकर विकसित किये जाने के निर्देश दिए। आमजन की मॉग पर नाली की समस्याओं हेतु हरिजन बस्ती से शिवधाम तक स्टीमेट तैयार कर नाली निर्माण किये जाने की बात कही।वार्ड क्र.05 में बिना मंजूरी के कई निर्माणाधीन भवन पाये जाने पर समयपाल श्री अनिल सिंह को निलंम्बित करने के निर्देश दिए तथा संबंधित वार्ड के उपयंत्री को दो वेतनवृद्धि रोके जाने हेतु कारण बताओं सूचना पत्र जारी किये जाने के निर्देश दिए।उक्त शिविर में आयुष्मान कार्ड, केवाईसी, पथ विक्रेताओं के पंजीयन, लोगों को खाद्यान्न पर्ची में नाम जोड़े गये।साथ ही संबल योजना एवं कल्याणी, वृद्धापेंशन जैसे सभी राष्ट्रीय योजनाओं के आवेदन भी प्राप्त किये गये।

चौराहों के नामकरण धर्मप्रणेताओ के नाम किये जाने हिन्दू धर्म परिषद ने नगर निगम को भेजा प्रस्ताव

समय जगत, रीवा। नगर के विभिन्न चौराहों, मार्गो, बाजारों का नामकरण पुराने ढर्रे पर ही प्रचलित प्रतिष्ठानो आदि के नाम से आज तक चला आ रहा है जिनका आज के वर्तमान परिवेश में कोई औचित्य नही है।वर्तमान हालातो में नगर के धर्म प्रणेताओ, समाजसेवियों, जन प्रतिनिधियों के नाम से नामकरण किये जाने से उन सभी के प्रति सम्मान ज्ञापित करना ही होगा साथ ही आने वाली नई पीढ़ी को उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के बारे में जानकारी के साथ प्रेरणा भी मिलेगी।यह बात हिन्दू धर्म परिषद के संस्थापक-संरक्षक नारायण डिगवानी ने उठाई है।श्री डिगवानी ने बताया कि धर्म परिषद के अध्यक्ष देवेश कुमार सोनी, संरक्षक संजय तिवारी ''मुन्नू'', संयोजक सुमित मॉजवानी एवं उनके स्वयं के द्वारा एक प्रस्ताव नगर निगम के वरिष्ठ जिम्मेदारों में महापौर, अध्यक्ष, विपक्ष नेता एवं नगर निगम आयुक्त को भेजा गया है।भेजे गये प्रस्ताव में सिन्धी चौराहे का नाम वैद्य बटुक प्रसाद त्रिपाठी, गुलबसिया चौराहे का नाम स्व0 शैलेन्द्र सोनी, पावर हाउस मार्ग एवं पुरानी गल्ला मंडी प्रांगण का नाम स्व0 धनपतलाल गुप्ता जैसे संस्थापको धर्म प्रणेताओं एवं समाज हित चिंतको के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की मॉग की गई है।इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि चौराहो की नाम पटिटकायें और मूर्ति स्थापना का कार्य जनभागीदारी से धर्म परिषद द्वारा कराया जायेगा।संयोजक माँजवानी ने कहा है कि नगर के प्रबुद्ध गणमान्य लोगो से अपने-अपने रहवासी क्षेत्रो में अगर इस तरह के प्रस्तावों की आवष्यकता है तो अवश्य ही नगर निगम को भेजे जिन्होने नगर के विकास के साथ समाज सेवा में अग्रणी भूमिका निभाई है तो नगर की संस्कृति और संस्कारो का दर्शन समूचे प्रदेश एवं देश के लिये प्रेरणा दायक होगा।

कलेक्टर ने दो लापरवाह अधिकारियों को दिया नोटिस

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने समर्थन मूल्य में धान उपार्जन में लापरवाही बरतने पर दो अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस दिया है। इन्हें दो वेतनवृद्धियाँ असंचयी प्रभाव से रोकने तथा निलंबन की कार्यवाही प्रस्तावित करने का नोटिस दिया गया है। यह कार्यवाही मध्यप्रदेश सिविल सेवा आचरण नियम 1965 के प्रावधानों के तहत की गई है। कलेक्टर ने कृषि विस्तार अधिकारी तथा नोडल अधिकारी माँ भगवती वेयरहाउस खरीदी केन्द्र श्रीकृष्णा सिंह को नोटिस दिया है। श्री सिंह कलेक्टर द्वारा खरीदी केन्द्र के निरीक्षण के समय बिना सूचना के अनुपस्थित पाए गए। केन्द्र प्रभारी ने बताया कि श्री सिंह दो दिसम्बर से 17 दिसम्बर तक लगातार अनुपस्थित हैं। कलेक्टर ने समिति प्रबंधक तथा केन्द्र प्रभारी सेवा सहकारी समिति लक्ष्मणपुर को भी नोटिस दिया है। सभी पाँच बोरियों में अलग-अलग मात्रा में 37 किलों से लेकर 40 किलो 700 ग्राम तक धान की मात्रा पाई गई। बोरियों में लगे टैग में किसान का पंजीयन क्रमांक अथवा किसान कोड दर्ज नहीं पाया गया। गोदाम के अंदर 6 दिसम्बर एवं 7 दिसम्बर को उपार्जित धान की बोरियों में सिलाई नहीं की गई थी। खरीदी केन्द्र में 8505 क्विंटल धान की खरीदी अब तक की गई गई है परंतु केवल 1074 क्विंटल धान का ही हैण्डलिंग चालान जारी किया गया है। इसे गंभीर लापरवाही मानते हुए नोटिस दिया गया है।

लंबित पेंशन प्रकरण तत्काल पेंशन कार्यालय में दर्ज कराएं अफसर: कमिश्नर

पेंशन प्रकरण लंबित रहे तो रुकेगी अधिकारियों की वेतनवृद्धि: बीएस जामोद

समय जगत, रीवा। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने कहा कि सभी अधिकारी कार्यालय के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के स्वत्वों का समय पर भुगतान करें। शासन के निर्देशों के अनुरूप सेवानिृत्ति के तीन माह पूर्व पेंशन प्रकरण ऑनलाइन दर्ज करा दें। उसमें किसी भी तरह की आपत्ति होने पर उसका निराकरण कर दें जिससे समय पर पीपीओ जारी हो सके। अधिकारी लंबित पेंशन प्रकरण तत्काल पेंशन कार्यालय में दर्ज करा दें। पेंशन प्रकरण लंबित रहने पर अधिकारियों की वेतनवृद्धि रोकी जाएगी। कमिश्नर ने कहा कि संभागीय पेंशन अधिकारी आगामी बैठक में फरवरी माह तक सेवानिवृत्त होने वाले शासकीय सेवकों की सूची प्रस्तुत करें। इनके पेंशन प्रकरणों के निराकरण की हर सप्ताह समीक्षा की जाएगी। अधिकारी समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का तत्परता से निराकरण करें। इसमें सौ दिन तथा पचास दिन से अधिक समय से लंबित आवेदनों पर तत्काल कार्यवाही करें। नागरिक आपूर्ति निगम तथा खाद्य विभाग के अधिकारी उचित मूल्य दुकानों के लिए हर माह की 10 तारीख तक आवंटित खाद्यान्न का भण्डारण सुनिश्चित करें। गरीबों को समय पर अनाज न मिलने पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। खाद्यान्न के उठाव और परिवहन के संबंध में भी हर सप्ताह रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत जनकल्याण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों में विभागीय योजनाओं के पात्र सभी हितग्राहियों को अनिवार्य रूप से लाभान्वित करें। हितग्राहीमूलक योजनाओं का 31 दिसम्बर तक लक्ष्यपूर्ति सुनिश्चित करें। इन शिविरों के माध्यम से विभागीय योजनाओं का प्रचार-प्रसार करें तथा आमजनता से प्राप्त आवेदनों का समुचित निराकरण करें। उपायुक्त जनजातीय कार्य विभाग छात्रावासों का नियमित रूप से निरीक्षण कराकर उनमें भोजन, आवास, पेयजल, साफ-सफाई तथा सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करें। सभी कलेक्टर साप्ताहिक बैठक में छात्रावासों की व्यवस्थाओं की समीक्षा करें। कमिश्नर ने कहा कि न्यायालय में लंबित प्रकरणों में समय पर जवाबदावा प्रस्तुत करें। अवमानना के प्रकरणों में तत्परता से कार्यवाही कर प्रतिवेदन न्यायालय में प्रस्तुत करें। राजस्व, कृषि तथा खाद्य विभाग के अधिकारी क्षेत्र का भ्रमण कर समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की निगरानी करें। उपार्जित धान के समय पर उठाव, परिवहन, भण्डारण एवं किसानों को भुगतान की व्यवस्था सुनिश्चित करें। क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य जनवरी माह में सभी जिलों में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित करने के लिए कार्यक्रम जारी करें। संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन सभी नगरीय निकायों में खुले में रहने वाले निराश्रितों को ठण्ड से बचाव के लिए गरम कपड़े, कंबल, अलाव आदि की व्यवस्था कराएं। इसके लिए आमजनता और समाजसेवी संस्थाओं का भी सहयोग प्राप्त करें।

बैठक में कमिश्नर ने जल जीवन मिशन के कार्यो तथा छात्रवृत्ति वितरण के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए। बैठक में संभागीय आयुर्वेद अधिकारी डॉ नीरजा मिश्रा ने प्रकृति परीक्षण अभियान की जानकारी देते हुए कहा कि प्रकृति परीक्षण एप डाउनलोड करके उसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी दर्ज करके क्यूआरकोड जनरेट कर लें। इसे आयुर्वेद विभाग के किसी भी चिकित्सक को भेजकर अपना प्रकृति परीक्षण कराएं। इससे आपके शरीर में वात, पित्त और कफ की स्थिति के अनुसार प्रकृति का निर्धारण होगा। खानपान और दवाओं के उपयोग से इसमें संतुलन बना रहेगा। बैठक में एसडीओ वन व्हीबी मिश्रा, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ केएल नामदेव, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास श्रीमती ऊषा सिंह सोलंकी, संयुक्त संचालक पशुपालन डॉ राजेश मिश्रा, चीफ इंजीनियर विद्युत मण्डल आईके त्रिपाठी, संयुक्त संचालक शिक्षा एसके त्रिपाठी तथा सभी संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

डेल कंपनी ने किया धोखाधड़ी 6 घंटे बैटरी बैकअप बोलकर 1 घंटे भी नहीं चल रही है बैटरी

72000 रुपए का लैपटॉप 20 दिन में हुआ खराब

रीवा। उपभोक्ता द्वारा डेल कंपनी के लैपटॉप को 72000 में खरीदा गया 6 घंटे बैटरी बैकअप देने की गारंटी के साथ बिक्री किया गया लैपटॉप 20 दिन बाद ही 1 घंटे में ही डिस्चार्ज हो रहा है दुकानदार से शिकायत पर वापस करने से कर रहा है इनकार जिसकी शिकायत पीड़ित ने उपभोक्ता फोरम में करते हुए कंपनी पर दावा किया है। उल्लेखनीय है कि मऊगंज जिला के खटखरी ग्राम पंचायत समाजसेवी राजेंद्र गुप्ता उर्फ राजू गुप्ता ने अपनी मेहनत की कमाई से अपने पुत्र को पढ़ने के लिए लैपटॉप रीवा डेल कंपनी से खरीदा गया जिसकी कीमत 72000 की बाकायदा रसीद के साथ गारंटी बोलकर दिया गया कि इसका बैटरी बैकअप 6 घंटे तक चलेगा 26 नवंबर को लिया गया लैपटॉप लगभग 10 दिन के अंतराल में 1 घंटे भी बैटरी नहीं चल रही है जिसे लेकर उपभोक्ता द्वारा रीवा डेल कंपनी से शिकायत किया गया कि हमारा यह लैपटॉप सही नहीं है 6 घंटे बैटरी बैकअप आप बोलकर दिए थे चलेगा परंतु यह 1 घंटे में इसकी बैटरी काम नहीं करती जिसे डेल कंपनी के दुकानदार ने वापस करने से माना करते हुए अभद्र भाषा का भी प्रयोग किया गया जिससे खटखरी समाजसेवी राजू गुप्ता ने उपभोक्ता फोरम में शिकायत दर्ज कराई है एवं सभी भाइयों से अपील किया गया है कि डेल कंपनी से कोई भी सामान क्रय न करें।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान में 1205 आवेदन पत्र हुए मंजूर

11 दिसंबर से 26 जनवरी तक चलेगा मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान

रीवा। जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 11 दिसम्बर से 26 जनवरी तक मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिले में 15 दिसम्बर से प्रत्येक विकासखण्ड की ग्राम पंचायतों तथा नगरीय निकाय के वार्डों में शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में आमजनता के आवेदनों पर मौके पर कार्यवाही करने के साथ पात्र हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। जिले में 15 दिसम्बर से 17 दिसम्बर तक आयोजित शिविरों में कुल 1949 आवेदन पत्र आमजनता से प्राप्त हुए। इनमें से 1205 आवेदन पत्र स्वीकार किए गए हैं। शेष 682 आवेदन पत्रों में संबंधित विभागों द्वारा कार्यवाही की जा रही है। अलग-अलग कारणों से 62 आवेदन पत्र अमान्य किए गए हैं। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि अब तक ग्रामीण क्षेत्र में कुल 1345 आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं। इनमें से 705 मंजूर किए गए हैं। विकासखण्ड त्योंथर में 552, रायपुर कर्चुलियान में 93, रीवा में 140, सिरमौर में 204, गंगेव में 55 तथा जवा में 301 आवेदन पत्र आमजनता से प्राप्त हुए हैं। इनमें से विकासखण्ड त्योंथर में 472, रायपुर कर्चुलियान में 7, रीवा में 29, सिरमौर में 21 तथा जवा में 176 आवेदन पत्र मंजूर किए गए हैं। शहरी क्षेत्र में कुल 604 आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं। इनमें से 500 मंजूर किए गए हैं। नगर निगम रीवा में 308, नगर पंचायत सिरमौर में एक, गुढ़ में 54, मनगवां में 9, गोविंदगढ़ में 8, सेमरिया में 56, चाकघाट में 40, त्योंथर में 31, डभौरा में 65 तथा नगर पंचायत बैकुण्ठपुर में 32 आवेदन पत्र प्राप्त हुए हैं। इनमें से नगर निगम रीवा में 285, नगर पंचायत सिरमौर में एक, गुढ़ में 53, मनगवां में 9, गोविंदगढ़ में 2, सेमरिया में 52, त्योंथर में 18, डभौरा में 48 तथा नगर पंचायत बैकुण्ठपुर में 32 आवेदन पत्र मंजूर किए गए हैं। शेष लंबित आवेदन पत्रों में संबंधित विभागों द्वारा कार्यवाही की जा रही है।

जनकल्याण अभियान में लगाए जा रहे शिविरों में आमजन हो रहे लाभान्वित

रीवा। जिले भर में प्रत्येक विकासखण्ड में 11 दिसम्बर से 26 दिसंबर तक मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है।अभियान के तहत सभी विकासखण्डों में 15 दिसम्बर से जनकल्याण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों के माध्यम से बड़ी संख्या में आमजन लाभान्वित हो रहे हैं। शिविरों के माध्यम से आमजनता को शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी देकर पात्र हितग्राहियों के आवेदन पत्र भरवाए जा रहे हैं।साथ ही हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण भी किया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्रीमती सपना त्रिपाठी, सभी एसडीएम, जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं शिविरों के लिए तैनात नोडल अधिकारी तथा सेक्टर आफीसर शिविरों का जायजा ले रहे हैं। कलेक्टर ने 17 दिसम्बर को रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में आयोजित जनकल्याण शिविरों में शिरकत की। जनकल्याण शिविरों में 17 दिसम्बर को जनपद पंचायत सिरमौर की ग्राम पंचायत कररिया में 32 और सुरवार में 24 आवेदन पत्र आमजनता से प्राप्त हुए। रीवा विकासखण्ड की ग्राम पंचायत रहट में 10 तथा दादर पंचायत में 150 आवेदन पत्र दर्ज किए गए।

केशव पांडे का पार्थिव शरीर पहुंचा मऊगंज स्थित भाजपा कार्यालय

श्रद्धेय केशव पांडे के अंतिम दर्शन हेतु उमड़ा कर्ताओं का जन सैलाब

समय जगत, रीवा। भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश के वरिष्ठ नेता जनसंघ से लेकर भाजपा तक पार्टी के विस्तारमें अपना अमूल योगदान देने वाले केशव पांडे का पार्थिव शरीर बुधवार को सुबह 10:00 बजे मऊगंज भाजपा कार्यालय पहुंचा जहां पर मऊगंज भाजपा जिला डॉ.राजेंद्र मिश्रा के साथ बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं ने अपने प्रिय नेता का अंतिम दर्शन कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

भाजपा ने वैचारिक अधिष्ठाता खो दिया. डॉ राजेंद्र मिश्रा: मऊगंज भाजपा कार्यालय में श्रद्धाये केशव पांडे को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भाजपा मऊगंज के जिला अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र मिश्रा ने कहा कि श्री पांडे जी ने अमूल्य योगदान पार्टी संगठन के लिए समर्पित किया उनके जैसा संगठन शिल्पी की कमी हमेशा रहेगी उनका व्यक्तित्व चुंबकीय था हमेशा दीपक की तरह जलकर कार्यकर्ताओं को प्रकाशित करने का काम किया कार्यकर्ताओं और संगठन के प्रति उनके मन में जो समर्पण था वह हम सबको हमेशा याद रहेगा मऊगंज क्षेत्र उनकी कर्मभूमि थी घर घर से उनका नाता था हम सब के पालक की तरह हमेशा मार्गदर्शन करते थे उनके चले जाने से हम सभी ने एक बेचारिक अधिष्ठाता खो दिया है ईश्वर उनके परिवार को दुख सहने की शक्ति दे आत्मा कोअपने श्री चरणों में स्थान दें इस अवसर पर हजारों की तादात में उपस्थित कार्यकर्ताओं ने अपने नेता का अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित की सभी कार्यकर्ता मऊगंज से हनुमाना बॉर्डर तक गए जिसमें प्रमुख रूप से विपिन मिश्रा महेंद्र सिंह अमित सिंह मुरलीधर द्विवेदी सुनील शुक्ला चंद्रप्रभा गुप्ता विनोद कोल अशोक साकेत घनश्याम सहित बड़ी संख्या में हनुमान मऊगंज के कार्यकर्ताओं ने जगह-जगह श्रद्धांजलि अर्पित की।

केशव पांडे नेहजारों कार्यकर्ताओं को गढ़ने का काम किया योगेंद्र शुक्ला: भाजपा नेता योगेंद्र शुक्ला ने श्री पांडे को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्रद्धांये पांडे जी ने अपने कृतित्व और व्यक्तित्व के बल पर हमारे जैसे हजारोंकार्यकर्ताओं में संगठन के प्रति समर्पण का भाव जागृत किया औरकार्यकर्ताओं की एक लंबी श्रृंखला खड़ी की और हर कार्यकर्ता में राष्ट्रवाद का मंत्र फूंकने का काम किया है कार्यकर्ताओं में पार्टी के प्रति राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव जागृत किया ईश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें और मोक्ष प्रदान करें भाजपा दीनदयाल मंडल के अध्यक्ष शिवम द्विवेदी ने पांडे जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा है किपांडे जी एकात्म मानववाद के जीवंत उदाहरण थे वह सतत कार्यकर्ताओंको कठोर परिश्रम और विचारवान होने का मंत्र देते थे उनका निधन हम सबके लिए अपूरणीय छति है पार्टी के वरिष्ठ नेता महाबली गौतम एड. रामनारायण मिश्र.राजकुमार शुक्ला राजभान सिंह पटेल श्रीकांत तिवारी एड.विवेक दुबेराजेंद्र त्रिपाठी प्रबोद व्यास नेता प्रतिपक्ष नगर निगम दीनानाथ वर्मानरेंद्र गुप्ता राजीव खंडेलवाल श्रीमती सासिकिरण मिश्रा राजेश मिश्राअमरेश पांडे संतोष शुक्ला जितेंद्र सिंह. अनसुईया गुप्त लखपति कछवाहा. तीरथ साकेतने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है ईश्वर से उनकी आत्मा को श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना की।

संपादकीय

भारतीय संविधान की है वैश्विक प्रतिष्ठा

देश में संविधान लागू होने के 75 वर्ष पूरे हो चुके हैं। भारतीय संविधान ने अपनी 75 वर्षों की यात्रा पूरी कर ली है। जब 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ, तब इसके निर्माताओं ने एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना की थी जो समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और बुनियादी अधिकारों पर आधारित हो। इस विशाल दस्तावेज़ का मुख्य उद्देश्य एक ऐसा समाज स्थापित करना था जिसमें हर नागरिक को बराबरी का दर्जा मिले, न्याय की गारंटी हो और एकता व भाईचारे का वातावरण बना रहे। संविधान के इन मूल्यों को अमल में लाने के लिए कई प्रयास किए गए, लेकिन यह भी सच है कि इन लक्ष्यों को पूरी तरह से हासिल नहीं किया जा सका। इन अधूरे लक्ष्यों और उनकी समीक्षा के लिए संसद में ईमानदारी से चर्चा होना बेहद ज़रूरी है, लेकिन अफसोस की बात यह है कि यह चर्चा अक्सर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप में उलझकर रह जाती है। देश में संविधान पर होने वाली बहसें कई बार केवल राजनीतिक दलों की आपसी नोकझोंक तक सीमित रह जाती हैं। विपक्ष अक्सर यह आरोप लगाता है कि सत्तारूढ़ दल संविधान को बदलने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, तथ्यों की बात करें तो अब तक 126 संवैधानिक संशोधन हुए हैं, जिनमें से 98 संशोधन कांग्रेस शासन के दौरान किए गए। यह इस बात का प्रमाण है कि संविधान में संशोधन करना समय और परिस्थिति की आवश्यकता होती है। यह प्रक्रिया संविधान को बदलने के लिए नहीं, बल्कि उसे और अधिक सशक्त और प्रासंगिक बनाने के लिए होती है। संविधान निर्माताओं ने यह उम्मीद की थी कि समय के साथ देश सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की ओर बढ़ेगा। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संविधान के माध्यम से राजनीतिक लोकतंत्र के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक न्याय की कल्पना की थी। उनके अनुसार, जब तक समाज में समानता और आर्थिक समरसता नहीं आती, तब तक लोकतंत्र अधूरा है। लेकिन 75 वर्षों के बाद भी हम इस लक्ष्य को पूरी तरह से हासिल नहीं कर पाए हैं। समानता का अधिकार हमारे संविधान का एक प्रमुख स्तंभ है, लेकिन आज भी समाज में गहरी असमानता मौजूद है। सामाजिक न्याय का मूल्यांकन करने के लिए कोई ठोस राष्ट्रीय तंत्र अब तक नहीं बनाया गया है। संविधान में आरक्षण का प्रावधान केवल 10 वर्षों के लिए किया गया था ताकि समाज के पिछड़े और कमजोर वर्गों को मुख्यधारा में लाया जा सके। लेकिन यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि यह प्रावधान राजनीतिक एजेंडा क्यों बन गया है? आरक्षण के लाभों का मूल्यांकन और सामाजिक ऑडिट क्यों नहीं हो सका? क्या यह सच है कि कमजोर वर्गों को लाभ पहुंचा रहा है या यह केवल कुछ गिने-चुने लोगों तक सीमित रह गया है? सामाजिक न्याय की वास्तविकता को समझने और इसका समाधान ढूंढने के लिए संसद में गंभीरता से विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। क्यों कि भारतीय संविधान की प्रतिष्ठा वैश्विक है।

दान करने की प्रथा से गरीब वर्ग का होता है कल्याण

नजरिया

श्री रतन टाटा केवल भारत स्थित संस्थानों को ही दान नहीं देते थे बल्कि वैश्विक स्तर पर समाज की भलाई के लिए कार्य कर रहे संस्थानों को भी दान की राशि उपलब्ध कराते थे। आपने वर्ष 2008 के महामंदी के दौरान अमेरिका स्थित कार्नेल विश्वविद्यालय को 5 करोड़ अमेरिकी डॉलर का दान प्रदान किया था। श्री रतन टाटा ने आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे छात्रों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जे. एन. टाटा एंडाउमेंट, सर रतन टाटा स्कॉलर्शिप एवं टाटा स्कॉलर्शिप की स्थापना कर दी थी। श्री रतन टाटा चूंकि अपनी कमाई का बहुत बड़ा भाग दान में दे देते थे, अतः उनका नाम कभी भी अमीरों की सूची में बहुत ऊपर उठकर नहीं आ पाया। इस सूची में आप सदैव नीचे ही बने रहे। श्री रतन टाटा जी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवन काल में इतनी बड़ी राशि का दान किया था कि आज विश्व के 2766 अरबपतियों के पास इतनी सम्पत्ति भी नहीं है। यूं तो टाटा समूह ने भारत राष्ट्र के निर्माण में बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु कोरोना महामारी के खंडकाल में श्री रतन टाटा के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। जिस समय पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था, उस समय श्री रतन टाटा ने न केवल भारत बल्कि विश्व के कई अन्य देशों को भी आर्थिक सहायता के साथ साथ वेंटिलेटर, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) किट, मास्क और दस्ताने आदि सामग्री उपलब्ध कराई।

प्रहलाद सबनानी

भारत में हिंदू सनातन संस्कृति के संस्कारों में दान दक्षिणा की प्रथा का अलग ही महत्व है। भारत में विभिन्न त्यौहारों एवं महापुरुषों के जन्म दिवस पर मठों मंदिरों, गुरुद्वारों एवं अन्य पूजा स्थलों पर समाज के सम्पन्न नागरिकों द्वारा दान करने की प्रथा अति प्राचीन एवं सामान्य प्रक्रिया है। गरीब वर्ग की मदद करना ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा माना जाता है। समाज में आपस में मिल बांटकर खाने पीने की प्रथा भी भारत में ही पाई जाती है और यह प्रथा भारतीय समाज में बहुत आम है। परिवार में आई किसी भी खुशी की घटना को समाज में विभिन्न वर्गों के बीच आपस में बांटने की प्रथा भी भारत में ही पाई जाती है। इस उपलक्ष में कई बार तो बहुत बड़े स्तर पर सामाजिक एवं धार्मिक आयोजन भी किए जाते हैं। जैसे जन्म दिवस मनाना, परिवार में शादी के समारोह के पश्चात समाज में नाते रिश्तेदारों, दोस्तों एवं मिलने वालों को विशेष आयोजनों में आमंत्रित करना, आदि बहुत ही सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत के विभिन्न मठों, मंदिरों, गुरुद्वारों एवं अन्य पूजा स्थलों पर प्रतिदिन 10 करोड़ से अधिक नागरिकों को प्रसादी के रूप में भोजन वितरित किया जाता है। साथ ही, पूरी दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है, जिसमें निवासरत नागरिक, चाहे वह कितना भी गरीब से गरीब क्यों न हो, अपनी कमाई में से कुछ राशि का दान तो जरूर करता है। भारतीय शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि हिंदू सनातन संस्कृति के अनुरूप, महर्षि दधीच ने तो, देवताओं को असुरों पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से, अपने शरीर को ही दान में दे दिया था, जिसे इतिहास में उच्चत्तम बलिदान की संज्ञा भी दी जाती है।

आज के युग में जब अर्थ को अत्यधिक महत्व प्रदान किया जा रहा है, तब अधिक से अधिक धनराशि का दान करना ही शुभ कार्य माना जा रहा है। इस दृष्टि से वैश्विक स्तर पर नजर डालने पर ध्यान में आता है कि दुनिया में सबसे बड़े दानदाता के रूप में आज भारत के टाटा उद्योग समूह के श्री रतन टाटा का नाम सबसे ऊपर उभर कर सामने आता है। इस सूची में टाटा समूह के संस्थापक श्री जमशेदजी टाटा का नाम भी बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है, जिन्होंने अपने

जीवन में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में 8.29 लाख करोड़ रुपए की राशि का महादान किया था। इसी प्रकार, श्री रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा समूह ने वर्ष 2021 तक 8.59 लाख करोड़ रुपए की राशि का महादान किया था। आप अपनी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा गरीब वर्ग की सहायतार्थ दान में दे देते थे। श्री रतन टाटा केवल भारत स्थित संस्थानों को ही दान नहीं देते थे बल्कि वैश्विक स्तर पर समाज की भलाई के लिए कार्य कर रहे संस्थानों को भी दान की राशि उपलब्ध कराते थे। आपने वर्ष 2008 के महामंदी के दौरान अमेरिका स्थित कार्नेल विश्वविद्यालय को 5 करोड़ अमेरिकी डॉलर का दान प्रदान किया था। श्री रतन टाटा ने आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे छात्रों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जे. एन. टाटा एंडाउमेंट, सर रतन टाटा स्कॉलर्शिप एवं टाटा स्कॉलर्शिप की स्थापना कर दी थी। श्री रतन टाटा चूंकि अपनी कमाई का बहुत बड़ा भाग दान में दे देते थे, अतः उनका नाम कभी भी अमीरों की सूची में बहुत ऊपर उठकर नहीं आ पाया। इस सूची में आप सदैव नीचे ही बने रहे। श्री रतन टाटा जी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवन काल में इतनी बड़ी राशि का दान किया था कि आज विश्व के 2766 अरबपतियों के पास इतनी सम्पत्ति भी नहीं है।

यूं तो टाटा समूह ने भारत राष्ट्र के निर्माण में बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु कोरोना महामारी के खंडकाल में श्री रतन टाटा के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। जिस समय पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था, उस समय श्री रतन टाटा ने न केवल भारत बल्कि विश्व के कई अन्य देशों को भी आर्थिक सहायता के साथ साथ वेंटिलेटर, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) किट, मास्क और दस्ताने आदि सामग्री उपलब्ध कराई। श्री रतन टाटा के निर्देशन में टाटा समूह ने इस खंडकाल में 1000 से अधिक वेंटिलेटर और रेस्पिरेटर, 4 लाख पीपीई किट, 35 लाख मास्क और दास्ताने और 3.50 लाख परीक्षण किट चीन, दक्षिणी कोरिया आदि देशों से भी आयात के भारत में उपलब्ध कराए थे। श्री रतन टाटा के पूर्वज पारसी समुदाय से थे और ईरान से आकर भारत में रच बस गए थे। श्री रतन टाटा ने न केवल भारतीय हिंदू सनातन संस्कृति के संस्कारों को अपने जीवन में उतारा, बल्कि इन संस्कारों का अपने पूरे जीवनकाल में अक्षरशः अनुपालन भी किया। इन्हीं संस्कारों के चलते श्री रतन टाटा को आज पूरे विश्व में सबसे बड़े दानदाता के रूप में जाना जा रहा है।

टाटा समूह का वर्णन तो यहां केवल उदाहरण के रूप में किया जा रहा है। अन्यथा, भारत में ऐसे कई औद्योगिक घराने हैं जिन्होंने अपनी पूरी संपत्ति को ही ट्रस्ट के माध्यम से समाज के उत्थान एवं समाज की भलाई के लिए दान में दे दिया है। प्राचीन भारत में यह कार्य राजा महाराजाओं द्वारा किया जाता रहा हैं। हिंदू सनातन संस्कृति के विभिन्न शास्त्रों में यह वर्णन मिलता है कि ईश्वर ने जिसको सम्पन्न बनाया है, उसे समाज में गरीब वर्ग की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए। यह सहायता गरीब वर्ग को सीधे ही उपलब्ध कराई जा सकती है अथवा ट्रस्ट की स्थापना कर भी गरीब वर्ग की मदद की जा सकती है। वर्तमान में तो निगमित सामाजिक दायित्व (सी एस आर - कोरपोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी) के सम्बंध में कानून की बना दिया गया है। जिन कम्पनियों की सम्पत्ति 500 करोड़ रुपए से अधिक है अथवा जिन कम्पनियों का वार्षिक व्यापार 1000 करोड़ रुपए से अधिक है अथवा जिन कम्पनियों का वार्षिक शुद्ध लाभ 5 करोड़ से अधिक है, उन्हें इस कानून के अंतर्गत अपने वार्षिक शुद्ध लाभ के दो प्रतिशत की राशि का उपयोग समाज की भलाई के लिए चलाई जा रही परियोजनाओं पर खर्च करना आवश्यक होता है। इन विभिन्न मदों पर खर्च की जाने वाली राशि का प्रतिवर्ष अंकेक्षण भी कराना होता है, ताकि यह जानकारी प्राप्त की जा सके राशि का सदुपयोग समाज की भलाई के लिए किया गया है एवं इस राशि का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग नहीं हुआ है।

भारत में गरीब वर्ग/परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने में समाज में सम्पन्न वर्ग द्वारा किए जाने वाले दान आदि की राशि से भी बहुत मदद मिलती है। निगमित सामाजिक दायित्व (सी एस आर) योजना के अंतर्गत चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का सीधा लाभ भी समाज के गरीब वर्ग को ही मिलता है। अतः विश्व में शायद भारत ही एक ऐसा देश है जहां सरकार एवं समाज मिलकर गरीब वर्ग की भलाई हेतु कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। इसीलिए ही अब यह कहा जा रहा है कि हिंदू सनातन संस्कृति का विस्तार यदि वैश्विक स्तर पर होता है तो, इससे पूरे विश्व का ही कल्याण हो सकता है एवं बहुत सम्भव है कि वैश्विक स्तर पर गरीबी का नाश होकर चहुं ओर खुशहाली फैलती दिखाई दे।

ग्राउंड जीरो पर बाल कल्याण क्षेत्र में 'यूनिसेफ' की भूमिका बेहतरीन

डॉ. रमेश ठाकुर

भारत के नजरिए से यूनिसेफ को देखें, तो वर्ष-1949 में मात्र तीन सदस्यीय स्टाफ ने हमारे यहां काम आरंभ किया। लेकिन सन् 1952 में दिल्ली में अपना एक कार्यालय स्थापित किया। वर्तमान में, समूचे भारत में इनके 16 राज्यों में कार्यालय हैं। बाल कल्याण की बात हो या उनके अधिकारों की रक्षा, दोनों में प्रहरी की भूमिका निभाती है 'यूनिसेफ'। इसलिए यूनिसेफ का नाम सुनते ही मन-मस्तिष्क में बच्चे ईद गिर्द घूमने लगते हैं। साथ ही उनकी समस्याओं और सुधारी प्रयासों का जिक्र भी होने लगता है। आज 'विश्व यूनिसेफ दिवस' है। एक ऐसी संस्था जो संसार के 190 देशों के बेहद दुर्गम स्थानों पर पहुंचकर कर बच्चों के अधिकारों की हिमायत के लिए मजबूती से लड़ती है। बाल कल्याण की सुविधाएं विश्व के प्रत्येक जरूरतमंद, कमजोर और वंचित बच्चों तक पहुंचे, इसलिए लिए यूनिसेफ की टीमें चौबीसों घंटों ग्रांउड जीरो पर तैनात रहती हैं। यूनिसेफ का मतलब होता है 'संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष' जिसका आरंभ 11 दिसंबर, 1946 को 'संयुक्त राष्ट महासभा' द्वारा किया गया था। शुरूआती वक्त में संस्थान में मात्र 43 देश शामिल हुए थे, लेकिन कुछ वर्षों बाद ये संख्या 100 पार कर गई। पर, आज इस संस्था में 190 मुल्क जुड़े हैं। संख्या में धीरे-धीरे इजाफा हो रहा है। यूनिसेफ के 5 लाख प्रतिनिधि इस समय पूरे संसार में कार्यरत हैं। वहीं, भारत में 18 हजार के करीब वर्कर दुर्गम स्थानों पर बाल कल्याण के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। बाल तस्करी की रोकथाम में इनकी अगल से टीमें कार्य करती हैं।

हिंदुस्तान में रोजाना करीब 69,000 बच्चे पैदा होते हैं। उन सभी नौनिहालों के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और बाल संरक्षण में यूनिसेफ इंडिया बेहतरीन कदम उठाने को संकल्पित होता है। मौजूदा समय में यूनिसेफ की टीमें युद्धग्रस्त यूक्रेन-रूस, ईरान-इराक, अफगानिस्तान जैसे मुल्कों में अधिकांश जुटी हैं। वहां अभावग्रस्त बच्चों की परवरिश करने के अलावा उनकी शिक्षा-स्वास्थ्य में लगे हैं। वैसे देखा जाए तो, विश्व को यूनिसेफ की कार्यशैली द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तब ज्यादा दिखी, जब इनके योद्धाओं ने बिना अपनी जान की परवाह किए युद्ध से आहत, असहाय, बेघर बच्चों को जरूरती सामानों की आपूर्ति, विभिन्न किस्म की सहायताएं और स्वास्थ्य में सुधार के अभियानों को चलाया। जैसे-जैसे समय बदला, यूनिसेफ ने अपनी कार्यशैली में और बदलाव किए। पहले इनका काम सिर्फ बाल अधिकारों की रक्षा के लिए जाना जाता था। लेकिन उसके बाद बच्चों के बेहतर जीवन को बनाने का भी जिम्मा इन्होंने अपने कंधों पर उठा लिया। फिलहाल वक्त में, यूनिसेफ की टीमें माताओं और नवजात शिशुओं के लिए एचआईवी की रोकथाम और उपचार, पर्याप्त पानी, स्वच्छ वातावरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, बाल स्वास्थ्य व पोषण जैसे क्षेत्रों में भी कार्यरत हैं। भारत के नजरिए से यूनिसेफ को देखें, तो वर्ष-1949 में मात्र तीन सदस्यीय स्टाफ ने हमारे यहां काम आरंभ किया। लेकिन सन् 1952 में दिल्ली में अपना एक कार्यालय स्थापित किया। वर्तमान में, समूचे भारत में इनके 16 राज्यों में कार्यालय हैं। जहाँ ये बच्चों के अधिकारों की हिमायत करते हैं। भारत में इनका प्रतिनिधित्व सिंथिया मैककैफ्रे करती हैं जिनकी नियुक्ति अक्टूबर 2022 में हुई थी। भारत सरकार अपने बजट से बड़ी रकम इनको सालाना आंवटित करती है। ताकि हमारे यहां दुगर्म क्षेत्रों में रहने वाले वो बच्चे भी इनके जरिए शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ सकें, जो सरकार की नजरों से छूट जाते हैं। यूनिसेफ का मुख्यालय, न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित है। संस्था का उदेश्य संसार भर के बच्चों को सुगम जीवन जीने, उन्हें आगे बढ़ाने और अपनी क्षमता का विकास कराने का अधिकार मुहैया कराना होता है। वर्ष 2021 में भारत में यूनिसेफ की सेवाओं के 75 वर्ष पूरे हुए। तब, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी यूनिसेफ और भारत के सहयोग के साक्षा प्रयासों की सराहना की।

भारतीय हुकूमत भी चाहती है कि प्रत्येक बच्चे का स्वास्थ्य चंगा हो, सुरक्षा और खुशहाली मिले, इसके लिए वह कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती। यूनिसेफ के लोग इस बात को विभिन्न वैश्विक मंचों पर कई मर्तबा कह भी चुके हैं कि उन्हें भारत सरकार से सदैव भरपूर सहयोग मिला। 2018 में यूनिसेफ ने 'एवेरी चाइल्ड अलाइव' नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय अभियान शुरू किया था जिसके अनुसार प्रत्येक मां और नवजात शिशु के लिए सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाओं की मांग और उनकी आपूर्ति करने के लिए प्रयासों का श्रीगणेश करना था। उस अभियान ने जबरदस्त सफलता हासिल की। यूनिसेफ के इस समय 150 देशों में कार्यालय, 34 राष्ट्रीय समितियां हैं जो मेजबान सरकारों के साथ विकसित कार्यक्रमों के माध्यम से अपने मिशन को आगे बढ़ाते हैं।

यूनिसेफ को सार्वजनिक क्षेत्र के तीन सबसे बड़े भागीदार संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और विश्व बैंक अधिकांश पैसा देते हैं। बीते दो दशकों में, विश्व भर में बच्चों के जीवित रहने के दर में बहुत अधिक वृद्धि देखी गई।

सम्बल मस्जिद, अजमेर दरगाह आखिर हम कितने पीछे जाएंगे

राम पुनियानी

सन 1980 के दशक में देश में शांति-व्यवस्था और प्रगति पर गम्भीर हमले हुए। साम्प्रदायिक ताकतों के हाथ एक नया औजार लग गया। वे देश के पूजास्थलों के कथित अतीत का उपयोग साम्प्रदायिकता भड़काने के लिए करने लगे। लालकृष्ण आडवाणी ने रथयात्रा निकाली। उनकी मुख्य मांग यह थी कि जिस स्थल पर पिछले पांच सदियों से बाबरी मस्जिद खड़ी थी ठीक उसी स्थल पर एक भव्य राम मंदिर का निर्माण किया जाना चाहिए। इस मुद्दे पर बढ़ती कड़वाहट और तनाव के मद्देनजर संसद ने एक नया कानून पारित किया जिसके तहत पूजास्थलों की जो प्रकृति 15 अगस्त 1947 को थी, उसे बदला नहीं जा सकेगा और वही बरकरार रहेगी। बाबरी मस्जिद मामले में अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने इस कानून को उचित ठहराया और यह भी कहा कि भविष्य में देश में शांति बनाए रखने की दिशा में यह कानून एक महत्वपूर्ण कदम है। सुप्रीम कोर्ट ने बाबरी मस्जिद के ढहाए जाने को अपराध बताया और यह भी कहा कि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि बाबरी मस्जिद के नीचे कोई मन्दिर दबा हुआ है। 'सबरंग' में प्रकाशित एक लेख में कहा गया है कि एक शीर्ष पुरातत्ववेत्ता प्रोफेसर सुप्रिया वर्मा, जो सन 2000 के दशक में बाबरी मस्जिद की भूमि पर हुई पुरातात्विक खुदाई में, एक अन्य पुरातत्वविद जया मेनन के साथ पर्यवेक्षक थीं, ने एक विवादास्पद बयान में कहा था कि मस्जिद के नीचे कोई मन्दिर तो था ही नहीं बल्कि अगर हम बारहवीं सदी से और पीछे जाकर चौथीं या छठवीं सदी अर्थात गुप्तकाल की बात करें तो ऐसा लगता है कि वहां एक बौद्ध स्तूप था।

बाबरी मस्जिद को दक्षिणपंथी ताकतों के नेतृत्व में ढहाया गया था। ढहाने वाले नारे लगा रहे थे, ये तो केवल झांकी है, काशी, मथुरा बाकी है। कुछ समय पहले काशी और मथुरा में सर्वेक्षण की बात कही गई थी। यह इसके बावजूद कि प्लेसेस ऑफ रिलीजियस वर्शिप एक्ट 1991 इसे प्रतिबन्धित करता है। जस्टिस चन्द्रचूड़ ने यह कहकर एक मुसीबत खड़ी कर दी है कि अधिनियम पूजा स्थलों की प्रकृति में परिवर्तन को तो प्रतिबंधित करता है मगर वह उनके सर्वेक्षण पर रोक नहीं लगाता। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दुओं को यह जानने का हक है कि जहां कोई मस्जिद खड़ी है, वहां पहले क्या था। इससे तोड़े-मरोड़े गए और काल्पनिक इतिहास का उपयोग अपने एजेण्डा को आगे बढ़ाने वालों की बन आई। पहले उन्होंने कहा कि अगर अयोध्या, काशी और मथुरा में मस्जिदों के नीचे दबे मन्दिरों को उन्हें सौंप

दिया जाता है तो वे अन्य पूजास्थलों के सम्बन्ध में यह मांग नहीं करेंगे। मगर अब स्थिति यह है कि अलग-अलग अदालतों में कम से कम 12 मस्जिदों और दरगाहों के सर्वेक्षण की मांग करते हुए याचिकाएँ लंबित हैं। इसके अलावा, कमाल मौला मस्जिद, बाबा बुधनगिरी दरगाह, हाजी मलंग दरगाह आदि पर भी हिन्दुओं द्वारा दावे किए जा रहे हैं। सम्बल की जामा मस्जिद के बाद सदियों पुरानी अजमेर दरगाह पर भी हिन्दू सेना नामक एक नए संगठन द्वारा दावा किया जा रहा है। यह संगठन शायद इसी काम के लिए बनाया गया है। इन सभी मामलों में कुछ दस्तावेजों का हवाला दिया जाता है, और अक्सर ये दस्तावेज शंकास्पद होते हैं। इनमें से कई मामलों में ब्रिटिश शासकों की अत्यन्त संदेहास्पद भूमिका रही है। जैसे, 'बाबरनामा' के अपने अनुवाद में बीवरिज ने बिना किसी प्रमाण के एक फुटनोट डाल दिया जिसमें कहा गया था कि मस्जिद के नीचे कोई मन्दिर हो सकता है। इतिहास को तोड़ने-मरोड़ने के असंख्य उदाहरण हैं। इसी तरह मन्दिरों को तोड़ने के भी अनेक कारण थे, जिनमें मुख्य थे उनकी सम्पत्ति को लूटना और हारे हुए राजा को बेइज्जत करना। अगर हम इतिहास की बात करें तो अनेक बौद्ध विहारों को धार्मिक कारणों से नष्ट किया गया। स्वामी विवेकानंद लिखते हैं, जगन्नाथ मंदिर एक पुराना बौद्ध मन्दिर है। हमने इस पर और कई अन्य बौद्ध मन्दिरों पर कब्जा कर लिया और उनका पुनर्हिन्दूकरण किया।।। । अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द सरस्वती, आदि शंकाराचार्य के योगदान की चर्चा करते हुए लिखते हैं, उन्होंने 10 साल तक पूरे देश का भ्रमण किया, जिस दौरान उन्होंने जैन धर्म का खंडन किया और वैदिक धर्म की पैरोकारी की। जमीन खोदने पर जो टूटी-फूटी मूर्तियां इन दिनों मिलती हैं वे शंकर के समय तोड़ी गई थीं और जो साबुत मिलती हैं उन्हें जैनियों ने खुद इस डर से जमीन में गाड़ दिया था कि उन्हें तोड़ दिया जाएगा। प्राचीन भारतीय इतिहास के बौद्ध नरेटिव के अनुसार, मौर्य राज्यवंश के बौद्ध राजा बृहद्रथ की हत्या उसके ही सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा ईसा पूर्व 184 में की गई थी। इसके साथ एक सम्मानित और प्रतिष्ठित बौद्ध राजवंश (सम्राट अशोक भी जिसमें शामिल थे) का अंत हुआ और शुंग कुल के शासन की शुरूआत हुई।

ऐसा बताया जाता है कि वो एक विशाल सेना के साथ पाटलीपुत्र से निकला और पूरे रास्ते स्तूपों को नष्ट करता गया। उसने बौद्ध विहारों को आग के हवाले कर दिया और बौद्ध भिक्षकों को मौत के घाट उतार दिया। वो पाटलीपुत्र से लेकर सकाल (जिसे अब सियालकोट कहा जाता है) तक गया और वहां पहुंचकर उसने यह घोषणा की कि किसी भी श्रमण व्यक्ति का कटा हुआ सिर लाने वाले को इनाम दिया जाएगा। झा बताते हैं कि मथुरा, जो कुषाण युग में एक समृद्ध व्यापारिक केन्द्र था, वहां के कुछ मन्दिर जैसे भूतेश्वर और गोकरणेश्वर प्राचीन काल में बौद्ध पूजास्थल थे। इतिहास की जो समझ हमारे समाज में है वह हिन्दू राष्ट्रवादी ताकतों द्वारा गढ़ी गई है। इसकी जड़ में है अंग्रेड़ों की फूट डालो और राज करो की नीति जिसके अंतर्गत उन्होंने इतिहास का साम्प्रदायिक लेखन करवाया। इस इतिहास लेखन में राजाओं को उनके धर्म का प्रतिनिधि बताया जाता है। इस इतिहास लेखन का फोकस मध्यकाल पर है जिस दौरान देश में कई मुस्लिम शासक हुए। जो चीज भुला दी जाती है और जिसे हमारी याददाश्त से मिटाने की कोशिश की जा रही है वह यह है कि औरंग?ब ने असम के कामाख्या देवी मन्दिर और उज्जैन के महाकाल मंदिर को भारी धनराशि भेंट के रूप में दी थी। हम यह भी जानते हैं कि हिन्दू राजा हर्षदेव ने देवोत्पतननायक नामक अधिकारी की नियुक्ति की थी।

हरियाणा के पिछड़े वर्ग का चेहरा कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा

प्रियंका सौरभ

बरवाला में रणबीर गंगवा के नेतृत्व को कृषि सुधारों, ग्रामीण विकास और सार्वजनिक सेवाओं में सुधार के प्रति उनके समर्पण से देखा जा सकता है। इनके काम ने किसानों के समर्थन पर विशेष ध्यान देने के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर में काफ़ी सुधार किया है। एक सामाजिक कार्यकर्ता और नेता के रूप में ये समुदाय की मदद करने और बरवाला में जीवन को बेहतर बनाने के लिए समर्पित हैं। ये अपने क्षेत्र के लोगों की मदद के लिए स्थानीय परियोजनाओं पर काम करते हैं। रणबीर सिंह गंगवा का जन्म 4 मार्च 1964 को हिसार जिले के गंगवा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम राजाराम और माता का नाम केसर देवी है। पत्नी अंगूरी देवी से इनकी शादी बहुत कम उम्र में हो गई थी। इनकी दो बेटे सुरेंद्र गंगवा और संजीव गंगवा हैं। 34 साल की राजनीतिक यात्रा में इन्होने कैबिनेट मंत्री के पद तक का ऐतिहासिक सफ़र तय किया है। गंगवा ने राजनीति की शुरुआत अपने गाँव गंगवा से की थी, जहाँ उन्होंने पंच का चुनाव जीता था। इन्होंने हिसार जिले की बरवाला विधानसभा क्षेत्र में पहली बार भारतीय जनता पार्टी के कमल खिलान का रिकॉर्ड भी अपने नाम किया है। रणबीर गंगवा ने 1990 में 26 साल की उम्र में अपने गाँव में पंच का चुनाव लड़ा था, जहाँ से उन्होंने राजनीतिक पारी की शुरुआत की। 2024 में बीजेपी ने उन्हें नलवा की बजाय बरवाला विधानसभा से उम्मीदवार बनाया, जहाँ उन्होंने पहली बार पार्टी को जीत दिलाई। इस ऐतिहासिक जीत में उनकी इस यात्रा में कड़ी मेहनत और लगातार संघर्ष का सामना करने की उनकी क्षमता विजय गान करती नजर आती है। पिछले कुछ वर्षों में, 60 वर्षीय रणबीर गंगवा हरियाणा की सत्तारूढ़ भाजपा में पिछड़े वर्ग का एक प्रमुख चेहरा बनकर उभरे हैं। नायब सिंह सैनी मंत्रिमंडल में इनको सार्वजनिक स्वास्थ्य इंजीनियरिंग और सार्वजनिक निर्माण (भवन और सड़कें) विभाग दिया गया है।

रणबीर गंगवा वर्ष 2000 में लम्बी राजनीति के सफ़र में शामिल हुए जब वह हिसार ज़िला परिषद के लिए चुने गए। 2005 में वे पुनः निर्वाचित हुए और इसके उपाध्यक्ष बने। चार साल बाद पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला ने इनको इंडियन नेशनल लोकदल (आईएनएलडी) के टिकट पर नलवा विधानसभा क्षेत्र से मैदान में उतारा। हालांकि, कांग्रेस उम्मीदवार और पूर्व मंत्री संपत सिंह चुनाव जीत गए। बाद में, गंगवा 2010 में आईएनएलडी के टिकट पर राज्यसभा के लिए चुने गए। 2014 में, पार्टी ने इनको फिर से नलवा विधानसभा सीट से मैदान में उतारा और इन्होंने संपत सिंह और पूर्व उपमुख्यमंत्री चंद्रमोहन को हराया। 2018 में इनेलो के विभाजन के बाद, गंगवा 2019 के चुनावों से पहले भाजपा में शामिल हो गए। ये नलवा से चुने गए और बाद में विधानसभा में डिप्टी स्पीकर बने। इस बार ये फिर से विधानसभा के लिए चुने गए। बरवाला निर्वाचन क्षेत्र से राज्य विधायिका के सदस्य रणबीर सिंह गंगवा बरवाला में बुनियादी ढांचे और स्वास्थ्य सेवा को बदलने के लिए समर्पित हैं और अपने नेतृत्व कौशल का उपयोग करके खुद को निर्वाचन क्षेत्र में एक सम्मानित व्यक्ति और ओजस्वी नेता के रूप में स्थापित कर रहे हैं। सार्वजनिक सेवाओं को बढ़ाने तथा किसानों, युवाओं और महिलाओं के कल्याण की वकालत करने के प्रति इनकी प्रतिबद्धता ने इनको समुदाय से सराहना और समर्थन दिलाया है। बरवाला में रणबीर गंगवा के नेतृत्व को कृषि सुधारों, ग्रामीण विकास और सार्वजनिक सेवाओं में सुधार के प्रति इनके समर्पण से पहचाना जा सकता है। इनको काम ने ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार किया है, जिसमें किसानों को सहायता देने पर विशेष ध्यान दिया गया है। रणबीर गंगवा का राजनीतिक जीवन वित्तीय मुद्दों के बारे में पारदर्शिता पर ज़ोर देता है। इन्होंने 34 साल की राजनीतिक यात्रा में एक साफ-सुथरा रिकॉर्ड बनाए रखा है और उनके खिलाफ कोई आपराधिक मामला नहीं है। इनकी घोषित संपत्ति और देनदारियाँ राजनीतिक नेतृत्व में इनकी ईमानदारी को दर्शाती हैं। इनकी पारदर्शिता का स्तर मतदाताओं को यह विश्वास दिलाता है कि रणबीर गंगवा अपने वित्तीय लेन-देन का स्पष्ट विवरण देने के लिए समर्पित हैं, जो सार्वजनिक सेवा में एक आवश्यक गुण है।

सार-समाचार

मेडिकल कॉलेज मे एडवांस इन पीडियाट्रिक सर्जरी विषय पर सीएमई आयोजित

दतिया। शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय दतिया मे अधिष्ठाता डॉ. दीपक एस मरावी के निर्देशन में सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. केएन आर्या की अध्यक्षता मे सीएमई का आयोजन किया गया जिसका विषय बाल चिकित्सा सर्जरी में नवीनतम अपडेट रखा गया। समारोह के मुख्य अतिथि झांसी के वरिष्ठ सर्जन डॉ. अरुण गुप्ता एवं विशिष्ट अतिथि ग्वालियर के वरिष्ठ सर्जन डॉ.समीर गुप्ता उपस्थित रहे। दतिया से डॉ. मनीष अजमेरिया ने भी विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया। मेडिकल कॉलेज के अन्य विभागो से समस्त चिकित्सकों ने सीएमई मे हिस्सा लिया। इस विषय पर अतिथि चिकित्सकों से विचार विमर्श कर बाल चिकित्सा सर्जरी मे बेहतर करने के सुझाव साझा किए। समारोह मे यूजी छात्र, पीजी छात्र, जूनियर एवं सीनियर रेसिडेंट सभी ने हिस्सा लिया एवं उपरोक्त विषय पर जानकारी पाकर सभी छात्र उत्साहित दिखाई दिए।

अक्षेश श्रीवास्तव को कायस्थ बंधु समिति ने साहित्यिक सम्मान से किया सम्मानित

समय जगत, दतिया। समाज में साहित्यकारो की बहुत बढी भूमिका होती है। साहित्य लेखन से न केवल धन व यश मिलता है बल्कि समाज को सही दिशा भी मिलती है। ऐसे साहित्यकारों के मान सम्मान को लेकर कायस्थ बंधु पत्रिका समिति लगातार कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य को लेकर युवा साहित्यकार अक्षेश श्रीवास्तव को कायस्थ बंधु समिति ने साहित्यिक श्रेष्ठ लेखन करने के लिए साहित्य सम्मान से अलंकृत किया है। इस शुभ अवसर अक्षेश श्रीवास्तव के माता पिता भी उपस्थित रहे। कायस्थ बंधु समिति के अध्यक्ष गिरीश श्रीवास्तव ने अक्षेश को पीला गमछा पहनाकर प्रशस्ति पत्र व चित्रगुप्त भगवान की तस्वीर भेट कर सम्मानित किया। अक्षेश श्रीवास्तव छात्र जीवन से ही साहित्यिक लेखन कर रहे हैं। उनको यह सम्मान साहित्यक लेखन के साथ साथ शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट श्रेष्ठ योगदान के लिए प्रदान किया गया।

पार्टी की विचारधारा को आगे बढ़ाना है कार्यकर्ता का दायित्व: पूर्व विधायक पिरोनिया

समय जगत, दतिया। नवनियुक्त भाजपा मंडल अध्यक्ष उनाव दिनेश शर्मा व प्रतिनिधि राजीव पटेल का उनाव में आत्मीय स्वागत किया गया। स्वागत समारोह में पूर्व विधायक बाँस शिल्प बोर्ड के चेयरमैन घनश्याम पिरोनिया मुख्य रूप से उपस्थित रहे। स्वागत समारोह में भाजपा के बरिष्ठ कार्यकर्ताओ का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर श्री पिरोनिया ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता पद का आकांक्षी नही होता बल्कि दायित्व बोध से बंधा होता है इसीलिए नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष दिनेश शर्मा व प्रतिनिधि राजीव पटेल पूरे मनोयोग से पार्टी की विचारधारा को आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे। हमे समाज के उत्थान के लिए जन सरोकार से जुड़े कार्यो में बढ़-चढ़ कर सहभागिता करनी है। इस अवसर पर सुनील पंडा, रामनिवास शर्मा जलज, नरेंद्र चतुर्वेदी, मोनू सक्सेना, भानू ठाकुर, अनिल भार्गव, जित्तू पंडा, जग्गन शर्मा, अनिल शर्मा, अनूप तिवारी, राहुल ठाकुर आदि मौजूद रहे।

कलेक्टर ने केन बेतवा लिंक परियोजना के प्रचार रथ हो हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

समय जगत, दतिया। केन वेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना के संभावित लाभांवित ग्रामों में परियोजना अंतर्गत सिंचाई, पेयजल एवं उधोगों के लिए जल उपलब्धता तथा इससे लाभान्वित ग्रामों के आर्थिक तथा सामाजिक विकास का आधार बनने पर केन्द्रीय जन जागरण कार्यक्रम करने के निर्देश दिए गए है। ग्राम स्तर पर परियोजना के व्यापक प्रचार प्रसार हेतु कलश यात्रा, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन मंडली एवं चित्रकला निबंध तथा रंगोली प्रतियोगिताएं आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाने के निर्देश दिए।

प्राकृतिक सौंदर्य के बीच इको रिट्रीट का शुभारंभ

कलेक्टर एवं टूरिज्म बोर्ड अपर प्रबंध संचालक ने टेंट सिटी का किया औपचारिक उद्घाटन

समय जगत, भोपाल। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा जिला प्रशासन एवं सनसेट डेजर्ट कैम्प के सहयोग से प्रसिद्ध पर्यटन स्थल चंदेरी में 'चंदेरी ईको रिट्रीट एंड फेस्ट' की शुरुआत बुधवार से कर दी है। अशोकनगर कलेक्टर श्री सुभाष कुमार द्विवेदी एवं एएमडी सुश्री बिदिशा मुखर्जी ने ईको रिट्रीट का शुभारंभ किया। इसके बाद रंगारग कार्यक्रम की शुरुआत हुई। स्थानीय कलाकारों ने मालवा एंव बुंदेलखंड लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी। जिसके बाद मुसाफिर बैंड ने बॉलीवुड के गीतों पर सबको थिरकाया। टूरिज्म बोर्ड की अपर प्रबंध संचालक सुश्री बिदिशा मुखर्जी ने बताया कि, चंदेरी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख पर्यटन गंतव्य बनाने के उद्देश्य से 'चंदेरी ईको रिट्रीट' की शुरुआत 2023 में की गई थी, जिसका प्रतिसाद उत्साहजनक रहा। अब दूसरे संस्करण में नए अंदाज व नई गतिविधियों के साथ इसे ओर अधिक रोमांचित बनाया गया है। प्राकृतिक नज़ारों और सांस्कृतिक गतिविधियों के बीच लग्जरी टेंट सिटी का आनंद लेने के साथ ही स्थानीय शिल्पकला को प्रचारित किया जा रहा है। शुभारंभ कार्यक्रम में टूरिज्म बोर्ड के एडवाइजर श्री युवराज पडोले, सनसेट डेटर्स कैम्प के श्री हितेश्वर सिंह एवं प्रणव राठौर भी मौजूद थे।

आकर्षक गतिविधियां होंगी मुख्य आकर्षण: इको रिट्रीट के अंतर्गत पर्यटन और संस्कृति का अनूठा संगम देखने को मिलेगा। अपर प्रबंध संचालक सुश्री मुखर्जी ने बताया कि, कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षणों में क्रेकर शो, फिल्म टूरिज्म वर्कशॉप और फैशन शो शामिल हैं, जो मनोरंजन और रचनात्मकता को बढ़ावा देंगे। सायक्लोथॉन में प्रतिभागी चंदेरी की प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव करेंगे। स्थानीय कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां क्षेत्रीय कला और परंपराओं को दर्शाएंगी। स्कूली विद्यार्थियों के लिए आयोजित पेंटिंग स्पर्धा उनकी रचनात्मकता को निखारेगी। पर्यटक स्थानीय शिल्पकारों और चंदेरी बुनकरों के साथ चर्चा कर उनकी समृद्ध कला और कौशल को समझने का मौका पाएंगे, जो क्षेत्रीय पहचान को उजागर करेगा। इसके साथ ही स्थानीय युवाओं के लिये स्वास्थ्य, शिक्षा व कौशल विकास हेतु जागरूकता कार्यशालाएं होंगी।

वाहन चेकिंग अभियान के दौरान 8 वाहनों से कुल 35000 शमन शुल्क वसूला

समय जगत, हरदा। कलेक्टर आदित्य सिंह के निर्देश पर बुधवार को हरदा जिले के विभिन्न मार्गो पर विशेष चेकिंग अभियान आयोजित कर वाहनो को चेक किया गया। जिला परिवहन अधिकारी राकेश अहाके ने बताया कि चेकिंग अभियान के दौरान बकाया कर, बिना पंजीयन, अस्पष्ट रूप से पंजीयन क्रमांक अंकित होने, बिना बीमा, बिना पीयूसी, बिना फिटनेस और बिना परमिट के संचालित यात्री बस, स्कूल बस, ऑटो रिक्शा एवं लोडिंग वाहन, डम्पर वाहनो की चेंकिग की गई। चेकिंग के दौरान 18 वाहनो को चेक किया गया, जिसमे से कुल 8 वाहनो द्वारा मोटरयान अधिनियमों का उल्लंघन करना पाए जाने पर नियमानुसार चालानी कार्यवाही कर कुल 35000 रूपये शमन शुल्क वसूल किया गया तथा 1 डम्पर वाहन जप्त कर सुरक्षार्थ कार्यालय में रखा गया। इस दौरान वाहन चालको को नियमों का पालन करते हुए वाहन संचालन की हिदायत दी गई।

आईटीआई कॉलेज हरदा में लर्निंग लायसेंस शिविर आज लगेगा

समय जगत, हरदा। जिला परिवहन कार्यालय द्वारा मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत लर्निंग लायसेंस शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिला परिवहन अधिकारी राकेश अहाके ने बताया कि मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान के तहत 19 दिसम्बर को शासकीय आईटीआई महाविद्यालय हरदा में लर्निंग लायसेंस बनाने के लिये शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर में शासन की योजना अनुसार महिला आवेदकों के निःशुल्क व पुरूष आवेदकों के शासन द्वारा निर्धारित शुल्क जमा कर लर्निंग लायसेंस बनाये जायेंगे।

सिवनी मालवा को मिली करोड़ों की सौगात विभिन्न सड़कों के निर्माण को मिली स्वीकृति

समय जगत, सिवनी मालवा। विधानसभा क्षेत्र सिवनी मालवा के लिए 2024-25 के अनुपूरक बजट में सड़क निर्माण की कई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। इन परियोजनाओं से क्षेत्र के ग्रामीणों को आवागमन की बेहतर सुविधा मिलेगी और विकास की प्रक्रिया को नया आयाम मिलेगा। क्षेत्रीय विधायक प्रेमशंकर वर्मा और मध्य प्रदेश सरकार की पहल से यह महत्वपूर्ण कार्य संभव हुआ है।

ये सड़के हुई स्वीकृत : ग्राम बुंडाराकला से ग्राम पीपलबेर मार्ग 2.50 किलोमीटर लंबा मार्ग 263.73 लाख रुपये की लागत से बनेगा। सेमरी खुर्द से सूपर नहर (इटारसी-डोलरिया) मार्ग 3.50 किलोमीटर लंबाई के इस मार्ग के निर्माण पर 450.00 लाख रुपये खर्च होंगे। शैल-खरार मिसरोद मार्ग 4.20 किलोमीटर लंबे इस मार्ग पर 373.65 लाख रुपये की राशि स्वीकृत हुई है। ग्राम म्याऊगांव-बिसौनीकलां से नाहरकोला खुर्द मार्ग 7.00 किलोमीटर लंबे इस मार्ग का निर्माण 945.00 लाख रुपये की लागत से किया जाएगा। नर्मदापुरम-हरदा रोड (गीता टॉकिज से शिवपुर रोड तक बायपास और पुल निर्माण) 10.00 किलोमीटर लंबे इस बायपास के लिए 2575.00 लाख रुपये आवंटित हुए हैं। ग्राम चौतलाय से सोयत मार्ग 3.00 किलोमीटर लंबा यह मार्ग 405.00 लाख रुपये की लागत से बनेगा। चौतलाय से झिल्झास मार्ग 3.00 किलोमीटर लंबे इस मार्ग का निर्माण भी 405.00 लाख रुपये में होगा।

विकास के लिए विधायक का आभार : इन परियोजनाओं के लिए क्षेत्र के लोगों ने विधायक प्रेमशंकर वर्मा और राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया है। ग्राम पंचायत सोयत को दो मार्गों की मंजूरी मिलने पर स्थानीय ग्रामीणों ने विशेष रूप से विधायक को धन्यवाद देते हुए ग्रामीणों ने कहा कि इन सड़कों के निर्माण से न केवल आवागमन सुगम होगा बल्कि क्षेत्रीय व्यापार, कृषि और सामाजिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। विधायक प्रेमशंकर वर्मा ने कहा हम क्षेत्र के हर गांव, कस्बे को सड़क संपर्क से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विकास की यह प्रक्रिया अनवरत जारी रहेगी।

एक थाली एक थैला अभियान के तहत महाकुंभ में भेजी जाएगी सामग्री

दतिया। समाजसेवी डॉ. राजू त्यागी ने शुरू की एक और सामाजिक पहल। बुधवार से शुरू हुआ एक थाली एक थैला अभियान। इस अभियान के तहत घर घर से एक खनदार थाली और एक थैला लिया जाएगा। सभी एकत्रित थैला व खनदार थालियों को प्रयागराज में लगने वाले महाकुंभ में भेजा जाएगा ताकि त्रिवेणी संगम में प्रदूषण न हो। थैला थाली का उपयोग महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालु करेंगे। समाजसेवी डॉ. राजू त्यागी की 11 सदस्यीय टीम इस अभियान को 18 दिसंबर से 5 जनवरी तक चलाएगी। अभियान के दौरान अधिक से अधिक थैला थाली एकत्रित की जाएगी जो भी व्यक्ति अभियान में एक थैला एक थाली दान करना चाहता हैं वह किला चौक स्थित जयश्री कृष्णा मेडिकल पर दे सकता हैं।

एसडीओपी ने सीएम हेल्पलाइन शिकायत निराकरण शिविर का किया आयोजन

दतिया। पुलिस अधीक्षक वीरेन्द्र कुमार मिश्रा के निर्देशन में बुधवार को एसडीओपी दतिया सुश्री प्रियंका मिश्रा द्वारा कोतवाली में सीएम हेल्पलाइन जन शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान आवेदको को पुलिस थाने पर बुलाकर उनकी शिकायतों को सुना उचित कार्यवाही हेतु आश्वासन दिया एवं लंबित शिकायतों को आवेदकों की सहमति उपरान्त निस्तारण किया।

भारतीय जीवन बीमा निगम के अधिकृत प्रीमियम संग्रह व सहायता केन्द्र का एसडीएम ने किया शुभारंभ

समय जगत, सिवनी मालवा। भारतीय जीवन बीमा निगम ने आमजन की सेवाओं में वृद्धि करते हुए सिवनी मालवा में प्रीमियम संग्रह व अन्य सेवाओं के लिए सहायता केन्द्र प्रारंभ किया। जिसका एसडीएम सरोज सिंह परिहार, एलआईसी वरिष्ठ शाखा प्रबंधक हरदा डी.आर.सावले, शाखा प्रबंधक सिवनी मालवा जी.डी.नागले ने फीता काटकर शुभारंभ किया। शुभारंभ अवसर पर एसडीएम श्रीमति परिहार ने एलआईसी पाइंट दल को बधाई देते हुए बीमा क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाने के लिए बनाई गई एलआईसी बीमा सखी योजना की सराहना की। वहीं बीमा सखी में चयनित उमा शर्मा और अपेक्षा शर्मा को नियुक्ति पत्र प्रदान किए। सिवनी मालवा शाखा प्रबंधक श्री नागले ने एलआईसी बीमा सखी योजना के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की साथ ही युवाओं को बीमा अभिकर्ता बनकर रोजगार से जुड़ने के अवसर के बारे में बताया। हरदा शाखा प्रबंधक डी.आर.सावले ने बीमा निगम से कई लोगों के जीवन में बदलाव आया है। इसके बारे में बताया।

नाम परिवर्तन सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैं धर्मेन्द्र कुमार पिता गेंदालाल वाघे निवासी- सी-68, गौरीधाम कालोनी खरगोन, जिला खरगोन (म.प्र) पिनकोड 451001 ने अपना नाम परिवर्तन कर धर्मेन्द्र वाघे पिता गेंदालाल वाघे कर लिया है। अतः आज से मैं अपने नये नाम धर्मेन्द्र वाघे पिता गेंदालाल वाघे के नाम से जाना और पहचाना जाऊंगा।

जाहिर सूचना

विक्रेतागण - 1. जगन्नाथ पिता चुन्नीलाल, 2. भागीरथ पिता चुन्नीलाल, 3. देवराज पिता भागीरथ, 4. गायत्रीबाई पिता जगन्नाथ।

सर्व जाति धाकड़, सर्व निवासी नंदगांव, तहसील नरसिंहगढ़ जिला राजगढ़ म.प्र.

क्रेतागण - 1. उषाबाई पति रामपाल, जाति यादव 2. सुनिताबाई पति दीलिपसिंह जाति यादव 3. सीमाबाई पति भूरेलाल जाति यादव, 4. रामपाल पिता उंकारसिंह जाति यादव।

सर्व निवासी सदा शिवगंज, सारंगपुर, जिला राजगढ़ म.प्र.

1. यह कि विक्रेतागण के स्वामित्व एवं अधिपत्य के कृषि खाते ग्राम नंदगांव, तहसील नरसिंहगढ़, जिला राजगढ़, म.प्र. मे स्थित है। सर्वे नं. क्रमशः 138, 143, 121, 145, 126 रकबा क्रमशः 1.328, 2.276, 0.114, 0.607, 0.120 कुल रकबा 4.445 हैक्टेयर भूमि ग्राम नंदगाव, पटवारी हल्का नं. 55, की भूमि मेरे पक्षकार क्रेतागण को विक्रय कर रहे है तथा मेरा पक्षकार भी उक्त भूमि को खरीदने के लिए तैयार है। यदि उक्त सर्वे नं. की भूमि पर किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति या किसी व्यक्ति के पास उक्त भूमि रहन रखी हो या उक्त भूमि से संबधित कोई भी दावा आपत्ति हो तो इस इश्तेहार जारी होने के 15 दिवस के अंदर विधिवत मेरे पक्षकार को लिखित में सूचना दे या मेरे कार्यालय मे लिखित मे जानकारी दे यंयथा समय अवधि पश्चात कोई दावा आपत्ति किसी भी स्वरूप में मान्य नही की जावेगी। सर्वसाधरण सूचित हो।

नोट-यह कि इस सूचना पत्र की एक प्रति मेरे कार्यालय में बतौर साक्ष्य रखी है जो वक्त काम आवे।

दिनांक :- 18/12/2024
स्थान :- नरसिंहगढ़

प्रेषक
कैलाश नारायण यादव (एडव्होकेट)
मो. 9753031565

न्यायालय तहसीलदार, तहसील - कोलार, जिला भोपाल

प्रकरण क्रमांक 3442/अ-6/2024-25

उद्घोषणा पत्र

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदक श्री घनश्याम यादव आ.स्व. श्री गौरीशंकर यादव नि. वार्ड नं. 18 निवासी स्टेशन रोड सेमरी द्वारा म0प्र0भू0रा0 सहिंता 1959 की धारा 109, 110 के अंतर्गत आवेदन पत्र प्रस्तुत कर ग्राम बावड़ियाकला प.ह.नं. स्थित भूमि खसरा नंबर 25/2/1/1, 25/2/1/2, 25/2/2/क, 25/2/2/ख, 25/2/3/क, 25/2/3/ख, 26/1, 26/2, 27/1/2, 27/1 विक्रय पत्र क्रमांक एमपी 059702024ए1417374 दिनांक 30.3.2024 का अंशभाग प्लाट क्रमांक ए-197 क्षेत्रफल 112.5 वर्गफिट भूमि का नामांतरण राजस्व अभिलेखों में आवदेक के नाम पर किये जाने का अनुरोध किया है।

2. उक्त संबंध में किसी व्यक्ति / संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह 24.12.2024 को या इससे पूर्व इस न्यायालय में उपस्थित होकर पेश कर सकता है। समयावधि पश्चात् प्रस्तुत किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

उक्त उद्घोषणा पत्र मेरे द्वारा न्यायालय की पदमुद्रा एवं मेरे हस्ताक्षर से आज दिनांक 18.12.2024 को जारी किया गया।

तहसीलदार
तहसील कोलार भोपाल

न्यायालय नायब तहसीलदार बैरागढ़ चीचली वृत्त तहसील कोलार भोपाल म.प्र.

प्रकरण क्र. आरएस/444/0760/18076/24
इश्तहार

आवेदक ब्रजेश राय पिता प्रकाश राय द्वारा ग्राम बंजारी स्थित खसरा नंबर 11/1 के अंशभाग प्लाट क्र. 44 सी सर्वधर्म समिति भोपाल रकबा 300 वर्गफिट अर्थात 27.88 हे. का विक्रयपत्र/ फौती/ नामांतरण/ दानपत्र/ वसीयतनामा/ हक त्याग पत्र के आधार पर नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतएव आवेदक के उपरोक्त आवेदन के संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो इस इश्तहार के जारी होने के दिनांक 20.12.2024 के भीतर इस न्यायालय में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। समयावधि पश्चात आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 6.12.2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से जारी किया गया।

नायब तहसीलदार
तहसील कोलार भोपाल म.प्र.

म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

:: आम सूचना ::

अयोध्या नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी भोपाल भूखण्ड / भवन क्रमांक एल.आई.जी. 132 एम-सेक्टर मण्डल द्वारा श्री तिलक बहादुर आत्मज श्री शेर बहादुर के नाम पर आवंटित किया गया है। जिसका विक्रय विलेख दिनांक 29/10/2001 को पंजीयन कार्यालय से पंजीकृत है। श्री तिलक बहादुर आत्मज श्री शेर बहादुर की दिनांक 05/08/2006 को मृत्यु होने के उपरांत उनकी पत्नी श्रीमती मीना कला पत्नी स्व. श्री तिलक बहादुर के द्वारा उक्त संपत्ति अपने एकल नाम पर नामान्तरण करने हेतु आवेदन पत्र, शपथ पत्र, मूल आवंटी के अन्य वारिसों का अनापत्ति शपथ-पत्र, परिचय पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं मण्डल प्रारूप में आवेदन पत्र प्रस्तुत किए गए है। है। प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त सम्पत्ति श्रीमती मीना कला पत्नी स्व. श्री तिलक बहादुर के एकल नाम से नामान्तरण हेतु प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो ता 15 कोई दिवस के अन्दर लिखित रूप से सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, समयावधि के पश्चात् भी आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2, भोपाल

म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल

:: आम सूचना ::

सतलापुर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी मण्डीदीप जिला रायसेन में भूखण्ड / भवन क्रमांक ई.डब्ल्यू.एस. 332 बी-सेक्टर मण्डल द्वारा श्रीमती रोशनी सोनी पत्नी श्री राकेश सोनी के नाम हस्तान्तरण आदेश क्र. 4023 दिनांक 31/05/2023 को हस्तान्तरित किया गया है जिसका विक्रय विलेख दिनांक 13/03/2023 को उप पंजीयक कार्यालय औबेदुल्लागंज जिला रायसेन से पंजीकृत है केता विक्रेता द्वारा आवेदन, परिचय पत्र शपथ-पत्र संयुक्त शपथ-पत्र एवं मण्डल प्रारूप पर आवेदन प्रस्तुत करते हुए उक्त संपत्ति श्रीमती पूजा सेन पत्नी श्री रामविशाल सेन के नाम हस्तान्तरित करने हेतु दस्तावेज प्रस्तुत किये गये है एवं उप पंजीयक कार्यालय औबेदुल्लागंज जिला रायसेन द्वारा उक्त संपत्ति का विक्रय विलेख दिनांक 04/10/2023 को केता के पक्ष में दस्तावेज पंजीकृत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त संपत्ति श्रीमती पूजा सेन पत्नी श्री. रामविशाल सेन के नाम हस्तान्तरण का प्रकरण इस कार्यालय में विचाराधीन है।

उक्त संपत्ति के संबंध में यदि किसी व्यक्ति / उत्तराधिकारी / या किसी संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर लिखित रूप से सबूत के साथ इस कार्यालय को प्रस्तुत करें समयावधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति स्वीकार नही की जायेगी एवं मण्डल नियमानुसार कार्यवाही करने हेतु स्वतंत्र रहेगा।

संपदा अधिकारी
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल प्रक्षेत्र-2, भोपाल

कार्यालय तहसीलदार नजूल वृत गोविन्दपुरा भोपाल (पुराना आर.टी.ओ कार्यालय भोपाल)

प्रकरण क्रमांक 4761/अ-6/24-25
आम सूचना

आवेदिका श्रीमती फरीदा पत्नी स्व0 श्री अखलाक अहमद सिद्दीकी निवासी प्लाट क्रमांक 03.बरखेड़ी खुर्द सूरज नगर भोपाल द्वारा म0प्र0 भू-राजस्व संहिता 1950 की धारा 109, 110 के तहत आवेदन पत्र प्रस्तुत कर आवेदिका के पति स्व0 श्री अखलाक अहमद सिद्दीकी आ0 श्री मोहम्मद इब्राहिम सिद्दीकी की मृत्यु दिनांक 22.03.2021 को हो जाने के उपरांत उनके स्वत्व स्वामित्व व आधिपत्य का एक किता प्लाट क्रमांक 04. भूमि खसरा क्रमांक 159 में से रकबा 738 वर्गफिट अर्थात 08.58 वर्गमीटर ग्राम मालीखेड़ी तहसील हुजूर जिला भोपाल का फौती नामांतरण राजस्व अभिलेखों में आवेदक के नाम स्वीकृत किये जाने का अनुरोध किया गया है। आवेदक द्वारा आवेदन पत्र के साथ रजिस्टर्ड विक्रय पत्र की छाया प्रति मृत्यु प्रमाण पत्र की छाया प्रति व अन्य सुसंगत दस्तावेज प्रस्तुत की गई है।

अतएवं एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यदि इस संबंध मे किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति 07 दिवस में स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से मेरे समक्ष प्रस्तुत करें निर्धारित अवधि बीत जाने के पश्चात प्राप्त आपत्तियों पर किसी भी प्रकार का विचार नहीं किया जायेगा।

मेरी पदमुद्रा से आज दिनांक को जारी

तहसीलदार
नजूल वृत गोविन्दपुरा भोपाल

कार्यालय नगर परिषद माखननगर, जिला नर्मदापुरम म.प्र.

E-mail Id -- cmobabai@mpurban.gov.in

क्र./ 970 / लोनिवि/नप/2024 माखन नगर, दिनांक 16/12/2024

निविदा आमंत्रण

निम्न कार्य हेतु निकाय द्वारा बेवसाईट WWW.mptendar.gov.in पर निविदा आमंत्रित की गई है। निविदा प्रपत्र बेवसाईट पर 17/12/2024 से 16/01/2025 तक डाउनलोड की जा सकती है। विस्तृत, निविदा सूचना आमंत्रण एवं अन्य जानकारी उक्त वेवसाईट पर देखी जा सकती है। निविदा संशोधित होने की स्थिति में वेवसाईट पर ही प्रकाशित की जावेगी। सामाचार पत्र में नही।

टेण्डर क्र.	कार्य का विवरण	कार्य की अनुमानित राशि	अमानत राशि	ऑनलाईन निविदा प्रपत्र का मूल्य	समय अवधि
2024_UAD_388747_1	स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) 2.0 अतर्गत 03 टीपीडी ड्राय एवं 05 टीपीडी वेटवेस्ट निर्माण कार्य	45,58,246	34,187/-	5,000/-	12 माह

श्रीमती रीना आकाश तिवारी
अध्यक्ष
नगर परिषद माखन नगर

जी0एस0राजपूत
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर परिषद माखन नगर

कार्यालय थाना प्रभारी थाना पिपलानी भोपाल

क्रमांक-था.प्र./पिपलानी/भो/डी/49/24 दिनांक- 4/12/24

सूचना

उपरोक्त विषयांतर्गत लेख है कि दिनांक 24/07/24 को डां. पुनित किरार ने जरिये टेलिफोन सूचना दिया कि पेसेंट मनोहर देशमुख उम्र 58 निवासी अपना घर आश्रम सी सेक्टर इन्द्रपुरी पिपलानी भोपाल को श्यामसुंदर मो.न. 9105279902 इलाज हेतु लेकर था बताया कि पेसेंट काफी समय से बीमार चल रहा था बिमारी के चलते इलाज हेतु अस्पताल लेकर आये थे जहां पर डां. द्वारा चैक करने पर आज दिनांक 24/07/24 को सुबह करीबन 09.20 पर पेशेंट मृत पाया गया जिसका पीएमएलसी नं. 1634/24 है कि सूचना दर्ज कि जाकर मर्ग सदर कायम कर जांच मे लिया गया। यदि मृतक के संबंध मे कोई जानकारी मिलती है तो थाना प्रभारी पिपलानी भोपाल के संपर्क नम्बर 7049104100 एव जांच अधिकारी का संपर्क नम्बर 7049104864, 8839792802 पर तत्काल संपर्क करें।

थाना प्रभारी
थाना पिपलानी भोपाल

G-20433/24

कार्यालय वनमण्डलाधिकारी वनमण्डल राजगढ़

निविदा सूचना

क्र./ लेखा 3606 राजगढ़, दिनांक 16.12.24

सामान्य वन मण्डल राजगढ़ के अंतर्गत विभिन्न निर्माण कार्य हेतु सामग्री वित्तीय वर्ष 2024-25 में वनमण्डल राजगढ़ की परिक्षेत्र राजगढ़, ब्यावरा एवं नरसिंहगढ़ में विभागीय कार्यों हेतु सामग्री प्रदाय यावत् ई-निविदा प्रक्रिया अनुसार ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

1. समिति निविदा संबंधित अन्य विस्तृत विवरण वेबसाइट पोर्टल http://www.mptenders.gov.in पर देखे जा सकते है।

2. निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं पोर्टल फीस की राशि केडिट कार्ड/डेबिट कार्ड/कैश कार्ड / या इन्टरनेट बैंकिंग सिस्टम के माध्यम से उल्लेखित वेबसाइट पर भुगतान कर निविदा प्रपत्र दिनांक 17.12.2024 को दोपहर 12:00 बजे से दिनांक 31.12.2024 को शाम 06:00 बजे तक ऑनलाईन रहेगी अन्य शर्तें वेबसाइट पर देखी जा सकती है।

ऑनलाईन निविदा प्रारंभ दिनांक एवं समय	ऑनलाईन निविदा करने का अंतिम दिनांक एवं समय	ऑनलाईन निविदा खोलने का दिनांक एवं समय
17.12.2024 को 12:00 बजे से	31.12.2024 को शाम 06:00 बजे तक	02.01.2025 को प्रातः 10.00 बजे से / वनमण्डल कार्यालय राजगढ़

3. निविदा से संबंधित कोई भी संशोधन समाचार पत्रों में प्रकाशित न करते हुए केवल उल्लेखित वेबसाइट पर ही सूचित किया जायेगा।

4. अन्य संबंधित जानकारी अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय के लेखा शाखा से किसी भी कार्य दिवस पर कार्यालयीन समय में प्राप्त की जा सकती है।

वनमण्डलाधिकारी
सामान्य वनमण्डल राजगढ़

G-20420/24

प्रधानमंत्री से सीखा जा सकता है कठिनाइयों में सर्वोत्तम प्रदर्शन करना : मुख्यमंत्री

खेल प्रतिभाओं के सम्मान और प्रोत्साहन समारोह में खिलाड़ियों को दिये 25.389 करोड़ रूपए

समय जगत, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन सर्वोत्तम तरीके से खिलाड़ी ही करते हैं। प्रतिभा का प्रदर्शन खिलाड़ी विभिन्न क्षेत्रों में करते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कठिनाइयों में भी सर्वोत्तम प्रदर्शन करने की कला सीखी जा सकती हैं। उन्होंने वर्तमान में खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमारे खिलाड़ी बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। अब तो हमारे खिलाड़ी निशाना भी सीधे पदक पर ही लगाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव टीटी नगर स्टेडियम में खेल प्रतिभाओं का सम्मान और प्रोत्साहन समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह में 1 हजार 786 खिलाड़ियों को 25.389 करोड़ रूपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गयी। खिलाड़ियों को किट भी वितरित किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार खेल एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिये हर कदम पर उनके साथ खड़ी है। नयी शिक्षा नीति में खेलों को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। स्पोर्ट्स् टीचर की पदोन्नतियों के रास्ते खोले गये हैं। उच्च शिक्षा में स्पोर्ट्स् टीचर सहायक प्राध्यापक एवं उसके बाद की भी पदोन्नतियां पा सकते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि खिलाड़ियों को प्रोत्साहन राशि सीधे उनके खातों में प्रदान की जा रही है, जिससे कि वे उनके प्रशिक्षण में सहायक सिद्ध हो सकें। इससे खिलाड़ी और बेहतर प्रदर्शन कर प्रदेश और देश का नाम रौशन कर सकेंगे। उन्होंने अपेक्षा की कि अपनी प्रतिभा के दम

पर और बेहतर प्रदर्शन के लिये संकल्पित होकर खिलाड़ी निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे देश के खिलाड़ियों में प्रतिभा की कभी भी कमी नहीं रही है। जब खिलाड़ियों के पास संसाधनों की कमी होती थी, तब भी मेजर ध्यानचंद जैसे प्रतिभावान खिलाड़ियों ने नंगे पैर खेलकर भी देश को स्वर्ण पदक दिलाये हैं। आज जब हमारा देश प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में प्रभावशाली देश बनकर उभर रहा है। तब हमारे खिलाड़ियों की प्रतिभा और निखरकर सामने आ रही है और हम विभिन्न खेलों में नये कीर्तिमान रचते हुए पदक प्राप्त कर रहे हैं। इसमें हमारा देशी खेल कुश्ती भी शामिल है, जिसमें हमने लगातार 4 स्वर्ण पदक प्राप्त किये हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए दर्शक दीर्घा में बैठेखिलाड़ियों के साथ स्वयं सेल्फी ली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ व्हील चेयर क्रिकेटर श्री शैलेन्द्र यादव ने भी सेल्फी ली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने खिलाड़ियों के साथ अन्य फोटोग्राफ भी क्लिक करवाए। साथ ही खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने भी समूह छायाचित्र क्लिक करवाए। कार्यक्रम में राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक विजेताओं को सम्मानित किया गया। इनमें वेटलिफ्टिंग में हिमांशु कुशवाह, मलखंब में युवराज राव धाडगे, हैण्डबाल में ध्रुव दुबे, सॉफ्टबाल में तिलक लोट, जूडो में उज्जवल कुमार प्रसाद, तैराकी में अन्वी खण्डूरी, हैण्डबाल में श्रुति पाल, ताईक्वांडो में राही पाठक जूडो में श्रेया यादव और पेंचक सिलाट में ख्याति पाण्डेय को सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को खेल मंत्री श्री सारंग ने स्मृति चिन्ह के रूप में हॉकी भेंट की। उल्लेखनीय है कि पेरिस ओलंपिक-2024 की पदक विजेता हॉकी टीम के खिलाड़ियों ने हॉकी पर अपने हस्ताक्षर अंकित किये हैं। खेल मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्वयं खिलाड़ी रहे हैं, इसलिए वे खिलाड़ियों की आवश्यकताओं को समझते हैं। उनके नेतृत्व में खेल और खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के लिये निरन्तर समग्र प्रयास किये जा रहे हैं। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में एक शासकीय खेल परिसर स्थापित करने के प्रस्ताव पर अपनी सहमति प्रदान कर दी है।

सार-समाचार

जाम लगा रहे बाइक सवारों से वसूला अर्थदंड

कोलारस। जगतपुर न्यायालय के सामने बुधवार को बीच सड़क किनारे गाड़ी खड़ी कर जाने वालो के विरुद्ध कोलारस पुलिस ने दोपहर के समय चालानी कार्रवाई की गई। बता दे की प्रतिदिन यहां पर जाम की स्थिति बनी रहती है जिसमें आए दिन एंबुलेंस स्कूल वाहन आने जाने वाले राहगीर जाम में फंस जाते थे जिससे पूरा यातायात प्रभावित हो जाता था जाम से मुक्ति दिलाने के लिए कोलारस पुलिस और नगर परिषद की संयुक्त टीम ने अतिक्रमण के विरुद्ध अभियान चलाकर बीच सड़क पर खड़ी हुई बाइकों को जगतपुर एप्रोच रोड और ऐबी रोड से नगर परिषद के कर्मचारियों ने ट्रैक्टर ट्रॉली में रखवा कर थाने पहुंचाया जहां से चालकों पर चालानी कार्रवाई की गई बाइकों का चालान कर जुर्माना वसूला गया जगतपुर क्षेत्र में सरकारी ऑफिस अधिक होने के कारण ग्रामीण जन अपने कार्य के लिए कोलारस आते हैं लेकिन वह अपनी गाड़ी सही पार्किंग ना करते हुए बीच सड़क पर अपनी बाइक खड़ी कर जाते हैं जिससे जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है गंभीर मरीज को ला रही एंबुलेंस भी जाम में फंस जाती है। थाना प्रभारी अजय जाट ने बताया कि यह मुहिम अभी लगातार जारी रहेगी जिससे कि कोलारस के नागरिकों को जाम से शीघ्र ही राहत मिल सके।

दो बाईकों की आमने-सामने की भिड़ंत में दो घायल, एक की हालत गंभीर

श्योपुर, ब्यूरो। श्योपुर बीते मंगलवार की रात दो बाईकों की आमने-सामने से भिड़ंत हो गई। भिड़त में दोनों बाइक सवार घायल हो गए। एक को 108 एंबुलेंस के स्टॉफ ने गंभीर हालत में कराहल के अस्पताल में भर्ती कराया है। एक अज्ञात बाइक सवार बाइक लेकर मौके से फरार हो गया है। मामला कराहल-भैसरावन रोड का है, जहां रात के समय बाइक से कराहल से भैसरावन गांव जा रहे 35 वर्षीय कल्ला बाल्मिकी पुत्र पप्पू, निवासी भैंसरावन की बाइक को सामने से आ रही अज्ञात बाइक टक्कर मार दी। हादसे में कल्ला बाल्मिकी को सिर, पेट और पैर में गंभीर चोटे आई जबकि, सोनू नाम का युवक मामूली रूप से चोटिल हो गया, घटना की सूचना मिलते ही कराहल 108 एंबुलेंस के पायलट राहुल पाल ने घटना स्थल पर पहुंचकर कल्ला बाल्मिकी को कराहल हॉस्पिटल में भर्ती कराया जिसका उपचार जारी है।

नलखेड़ा थाने के प्रभारी उप निरीक्षक 5000 की रिश्वत लेते हुए ट्रैप

समय जगत, आगर मालवा। जिले के थाना नलखेड़ा के कार्यरत उप निरीक्षक नानूराम बघेल को उज्जैन लोकायुक्त पुलिस द्वारा राशि 5000/- की रिश्वत लेते हुए ट्रेप किया गया है। आवेदक प्रेमचंद पिता रघुनाथ पता वार्ड नंबर 10 नलखेड़ा जिला आगर मालवा नें बताया कि मेरी 16 वर्ष 5 माह की नाबालिग पुत्री मेघा 16/11/24 को घर से चली गई थी। थाने पर शिकायत की तो स्टाफ के साथ मुंबई से 27/11/24 को लड़की को लेकर आए। लड़की मुझे सुपुर्द कर दी पर पुलिस ने आरोपी अरुण मालवीय को गिरफ्तार नहीं किया। मुंबई का गाड़ी का खर्चा 19000/- और रास्ते का खर्चा अलग हुआ और बघेल जी अभी 10000/- रुपए और मांग रहे हैं। इस शिकायत का सत्यापन प्रभारी लोकायुक्त उज्जैन के एस पी राजेश पाठक द्वारा डीएसपी सुनील तालान से कराया तो शिकायत सही पाई गई। इस पर से दिनांक 18/12/24 को ट्रैप दल का गठन किया गया। नलखेड़ा थाने के परिसर में जैसे ही कार्यवाहक उपनिरीक्षक ने रिश्वत की राशि की पहली किश्त 5000/- रूपये आवेदक से प्राप्त की। थाने के आसपास तैनात ट्रैप दल ने उसको रंगे हाथ पकड़ लिया। ट्रेप दल सदस्य- डीएसपी सुनील तालान, प्रधान आरक्षक हितेश लालावत, आरक्षक इसरार खान, नीरज राठौर, श्याम शर्मा शामिल हैं।

सेक्टरवार अधिकारियों की लगाई ड्यूटी

समय जगत, आगर मालवा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 20 दिसंबर को आगर मालवा जिले के सुसनेर में सौलर काम्पलेक्स का लोकार्पण करेंगे। मुख्यमंत्रीजी के प्रस्तावित कार्यक्रम अन्तर्गत सभा स्थल पर आवेदन प्राप्त करने एवं वीआईपी, मीडिया, जनसाधारण आदि को संबंधित सेक्टर तक पहुंचाने व सेक्टर बैठक व्यवस्था हेतु अपर कलेक्टर आरपी वर्मा ने अधिकारियों की ड्यूटी लगाई है। जारी आदेशानुसार सेक्टर क्रमांक-1 में परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग इरफान अंसारी, सेक्टर क्रमांक-2 में कृषि विस्तार अधिकारी सुसनेर दीपक कोल्हार, सेक्टर क्रमांक-3 में परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग मनीषा चौबे, सेक्टर क्रमांक-4 में परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग शिवकन्या डोडवा, सेक्टर क्रमांक-5 में कृषि विस्तार अधिकारी अंकित मालवीय, सेक्टर क्रमांक-06 में राजस्व निरीक्षक मनीष तिवारी, सेक्टर क्रमांक-7 में विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी सुसनेर मुकेश तिवारी एवं सेक्टर क्रमांक-8 कृषि विस्तार अधिकारी आगर सतीश परमार की ड्यूटी लगाई है।

शक्ति प्रदर्शन करने जा रहे कांग्रेसियों को पुलिस ने किया हाउस अरेस्ट

चरखारी/महोबा। विधानसभा का घेराव करने की योजना बनाकर कांग्रेस कार्यकर्ता शक्ति प्रदर्शन करने के लिए जा रहे थे, तभी चरखारी पुलिस ने चौकी प्रभारी सनय कुमार के नेतृत्व में सभी कांग्रेसियों को हाउस अरेस्ट कर लिया है। पूर्व जिला कार्यवाहक जिला अध्यक्ष पीसीसी सदस्य खेमचंद अहिरवार व पूर्व नगर अध्यक्ष एडवोकेट शहनशाह अली सिद्दीकी ने बताया कि यह प्रदर्शन राज्य सरकार की नीतियों और मुद्दों के खिलाफकिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी बेरोजगारी, महंगाई, हिन्दू-मुस्लिम की राजनीति, बिजली, स्वास्थ्य व्यवस्था, शिक्षा, संभल सहित तमाम मुद्दों पर योगी सरकार को घेरेगी हाउस अरेस्ट में निवर्तमान नगर अध्यक्ष चरखारी एडवोकेट शहंशाह अली सिद्दीकी, पूर्व जिला सचिव एडवोकेट राहुल मिश्रा, पूर्व कार्य वाहक जिला अध्यक्ष खेमचंद्र अहिरवार, पूर्व किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश उर्फराजू विश्वकर्मा, पूर्व जिला सचिव मोहम्मद शफीक एडवोकेट, प्रमोद कुमार सोनी, राकेश राजपूत, पुष्पेन्द्र राजपूत, जागीरदार, अंशु मिश्रा, पंकज रैकवार, अनुभव गुप्ता रहे।

महिला द्वारा छेड़खानी के लगाए गए आरोपों को लेकर एकजुट हुआ यूपी इंजीनियर्स एसोसिएशन

निष्पक्ष जांच के लिए प्रदर्शन और ज्ञापन की बनी रूपरेखा, आरोपों को बताया बेबुनियाद

समय जगत, महोबा। प्रांतीय खण्ड लोक निर्माण के अधिशाषी अभियंता पर एक महिला द्वारा लगाए गए गंभीर आरोपों को लेकर यूपी इंजीनियर्स एसोसिएशन में आक्रोश व्याप्त है। आरोपों को निराधार और असत्य बताते हुए आक्रोशित यूपी इंजीनियर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने सिंचाई विभाग के बिरमा भवन में बैठक कर लोक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता पर लगाए गए आरोपों की निंदा करते हुए मामले की गहनता से जांच कर घटना के पीछे शामिल षड्यंत्रकारियों पर कार्यवाही की मांग की है। इंजीनियर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने अपने-अपने उच्च अधिकारियों को मामले से अवगत कराते हुए बताया कि जिस तरह से एक अधिकारी पर आरोप लगाए गए हैं। उस तरह से उनका काम करना बहुत मुश्किल हो जाएगा क्योंकि अधिकारी निष्पक्ष रुप से सरकार की मंशा के अनुरूप काम कर रहे हैं लेकिन कुछ लोग उनपर अनैतिक दबाव बनाकर अपनी किसी मनसा को सिद्ध करना चाहते हैं, जिसे यूपी इंजीनियर्स एसोसिएशन कभी बर्दास्त नहीं करेगा। बैठक में आरईएस,जल निगम, सिंचाई विभाग, माइनर एरिकेशन और पीडब्लूडी के सभी इंजीनियर और पदाधिकारी मौजूद रहे।

यूपी इंजीनियर्स एसोसिएशन की मासिक बैठक विरमा भवन सभागार में आयोजित हुई है।

जिसमें विभागों के इंजीनियरो की समस्याओं के साथ-साथ महोबा के प्रांतीय खंड लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता विकास जौहरी के ऊपर एक महिला द्वारा लगाए गए आरोपो को लेकर भी चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए संगठन के अध्यक्ष और सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता विनय कुमार ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप इंजीनियर अपने-अपने विभागों पर काम कर रहे है ताकि विकास कार्यो को गति मिल सकें मगर अब सरकारी कार्यालयों में काम करना मुश्किल हो रहा है। आज जो बैठक आयोजित हुई है उसमें पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन विकास जौहरी पर जो बेबुनियाद आरोप लगाए गए है उसकी निंदा की गई, जिसको लेकर उच्चाधिकारियों से निष्पक्ष जांच के लिए ज्ञापन दिया जाएगा साथ ही विभागीय अधिकारियों और संगठन को भी इस बाबत अवगत कराकर आगे की रणनीति बनाई जायेगी। क्योंकि इस तरह काम करना मुश्किल हो जाएगा। गुणवत्तापूर्ण काम करने में बाधा उत्पन्न करने के लिए ही झूठे आरोपों से अनैतिक दबाव बनाने का प्रयास किया जा रहा है जिसका विरोध किया जाएगा। वहीं बैठक में ग्रामीण अंचल के अधिशासी अभियंता अनिल कुमार ने कहा कि पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता विकास जौहरी पर लगे आरोपों की निष्पक्ष जांच बहुत जरूरी है ताकि इसकी सत्यता सबके सामने आ सके। इसमें साजिशन अधिकारी को फंसाया जा रहा है जिसके पीछे किसका हाथ है उस पहलू से भी जांच हो ये मांग यूपी इंजीनियर्स एसोसिएशन करेगा। बैठक में मौजूद लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता पंकज यादव ने कहा कि एसोसिएशन की बैठक में एक्सईएन पर लगे बेबुनियाद आरोप पर ज्ञापन देने की रूपरेखा बनाई गई जिसमें उच्चस्तरीय जांच की मांग की गई है। क्योंकि आवास कैंपस में कोई भी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश आमतौर पर नहीं होता है। मेरा आवास खुद एक्सईएन आवास के दूसरे फ्लोर पर है यदि ऐसी घटना होती तो जानकारी जरूर होगी इसलिए इस मामले में निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कार्यवाही की जाए।लोक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता रघुवीर ने बैठक के दौरान कहा कि पिछले दिनों अखबारों में पीडब्ल्यूडी के एक्सईएन पर महिला से छेड़खानी के आरोप से संबंधित खबर सामने आने के बाद इसकी जानकारी हुई जिसमें पांच दिसम्बर को घटना दिखाई गई मगर दस दिन बाद ये चर्चा में आया है।

एआरटीओ अपनी कारगुजारियों के कारण आए सुर्खियों में

महोबा। जनपद के एआरटीओ इन दिनों जमकर सुर्खिया बटोर रहे है जनपद का यह ऑफिस सदा अपनी सुर्खियो में बना रहता है चाहे वह किसान के परिवहन से जुड़े मुद्दे हो या फिर आम पब्लिक की गाड़ियों के परिवहन के मुद्दे अक्सर चर्चा का विषय बने रहते है। विगत दिवसो एआरटीओ द्वारा किसानों के मूंगफली से भरे टैक्टरो के लाखों रुपये के चालान करने पर आक्रोशित किसानों व ब्यापारियों ने कड़ा विरोध प्रदर्शन किया तो वही जनप्रतिनिधियों को जब इस बात की भनक लगी तो पूर्ण सांसद गंगाचरण राजपूत व चरखारी विधायक बृजभूषण राजपूत ने मामले का कड़ा विरोध कर इस बात को शासन स्तर तक ले जाने की बात कही थी तो वही सदर विधायक राकेश गोस्वामी ने इसका आक्रोश प्रकट करते हुए कहा था कि किसानों के साथएआरटीओ द्वारा की जा रही जास्ती बिल्कुल भी बर्दास्त न करने की बात कही। इस दौरान उन्होंने कहा था कि एआरटीओ द्वारा किये जा रहे भ्रस्टाचार की शिकायत परिवहन मंत्री से की गई है और उन्होंने सख्त कार्यवाही करने की बात कही है। किसानों के साथ कि जा रही कार्यवाहियां जरा भी बर्दाश्त नही की जाएगी। सोचने वाली बात तो यह है कि जनपद के एआरटीओ किसानों के कृषि वाहनों पर कार्यवाही तो की जा रही है पर जनपद में मौत को दावत दे रही दर्जनों डबल डेकर की टूरिस्ट बसे व अवैध डग्गामार वाहन खुलेआम सवारियों को भरकर दिल्ली, महाराष्ट्र व गुजरात तथा मध्यप्रदेश के राज्यो में क्षमता से अधिक सवारियों को भरकर परिवहन कर रही है आखिर उन पर कार्यवाही क्यों नही की जा रही न ही उधोग नगरी कबरई व पनवाडी से निकल रहे सैकड़ो की संख्या में ओवरलोड ट्रकों पर भी कार्यवाही आखिर क्यों नही की जा रही यह सभी सवाल आमजन के बीच सवालिया निशान खड़े कर रहे है और यह मुद्दे उनके बीच चर्चा का विषय बने हुए है। वही बीते दिवस एक महोबा निवासी रिटायर इंस्पेक्टर छेदीलाल प्रजापति की गाड़ी का कुछ वर्षो पूर्व चालान हुआ था जो शासन के निर्देशानुसार हुए आदेश पर निस्तारण हेतु वह 15 दिवस से एआरटीओ ऑफिस के चक्कर काटने व न्यायालय के आदेश पर भी उसका निस्तारण नही किया गया इस बात को लेकर बीते दिवस पीड़ित ने कड़ा विरोध किया था और कहा था कि आफिस में तैनात अजय बाबू बिना दलाल के कोई काम नही करते कहा कि ऑफिस दलालों के अड्डा बना हुआ है।

नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष का शाल श्रीफल भेंटकर किया स्वागत

समय जगत, खिरकिया। भाजपा के नवनियुक्त चारुवा मंडल अध्यक्ष विजय राजपूत का प्रथम बार ग्राम मोरगढ़ी आगमन होने पर भाजपा के पूर्व मंडल उपाध्यक्ष स्व जगदीश साकल्ले के प्रतिष्ठान पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने पुष्पहारों से स्वागत कर सम्मान किया विजय राजपूत के अध्यक्ष बनने की बधाई दी। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष विजय राजपूत ने कहा कि भाजपा का हर कार्यकर्ता संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर कम करें और भारतीय जनता पार्टी की सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं के विषय में आम जनता को अवगत कराकर उन्हें अधिक से अधिक लाभ दिलाए। उन्होंने कहा जो भी सहयोग मेरे द्वारा हो सकेगा वह हर कार्यकर्ता से मुलाकात कर उन्हें प्रदान किया जाएगा मेरा प्रयास रहेगा की मैं मंडल के हर ग्राम में कार्यकर्ताओं के साथ जीवंत संपर्क स्थापित कर संगठन के विस्तार के लिए अधिक से अधिक योगदान प्रदान कर सकूं। इस अवसर

पर ग्रामीणो ने ग्राम पंचायत मोरगढी भवन में शाल श्रीफल भेंट कर स्वागत किया गया इस दौरान ग्राम पंचायत सचिव सरपंच मौजूद थे। समय जगत खिरकिया। वाल्मीकि समाज द्वारा नवजात मंडल अध्यक्ष संजू यादव का अंबेडकर चौक पर फूल माला पहनकर भव्य स्वागत किया गया।

क्रांति सूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय में दो दिवसीय प्रथम संभाग स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ समापन

समय जगत, बड़वाह। क्रांतिसूर्य टंट्या भील यूनिवर्सिटी के अंतर्गत बड़वाह शासकीय कालेज बड़वाह में दो दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन बुधवार को हुआ।इस स्पर्धा का फाइनल मुकाबला खंडवा व बुरहानपुर जिले की टीम के बीच खेला गया।जिसमे बुरहानपुर ने पहले बेटिंग करते हुए 15 ओवर में करीब 131 रन बनाए।जिसमे बल्लेबाज भुवनेश महाजन ने 31 व ऋषिकेश संतोष महाजन 32 ने रनों का योगदान दिया।इसके जवाब में उतरी खंडवा की टीम के बल्लेबाज बुरहानपुर के गेंदबाजों के सामने टिक नहीं पाए और 50 रनों के भीतर ही 5 विकेट खो दिए।बुरहानपुर के स्पिन गेंदबाज व कप्तान भुवनेश महाजन ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए 5 विकेट विकेट लिए।

खंडवा का कोई भी बल्लेबाज बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाया।अंत में खंडवा के बल्लेबाज केवल 86 रन बनाकर आलआउट हो गई। इस तरह बुरहानपुर ने 45 रनों से मुकाबला जीत लिया।मैच में अंपायरिंग संदीप

कोठिया,तनिष्क जाट ने की।स्कोरर सैयद सोहेल रहे।कमेंट्री संतोष बिरला,विनोद वर्मा ने की। अंत में समापन समारोह में अध्यक्षता प्राचार्य डॉ मंगला ठाकुर ने की।इस दौरान विशेष अतिथि के रूप के भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष अंकित गुप्ता,मुख्य अतिथि के रूप में जनभागीदारी समिति सदस्य गोपाल गौहर,रवि एरन,अमित जोशी ,डॉ. अरविंद श्रीवास्तव मौजूद रहे।फायनल मुकाबले के पूर्व अतिथियों ने परिचय भी प्राप्त किया। विजेता टीम बुरहानपुर को शील्ड व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।इसके साथ ही उपविजेता टीम को भी शील्ड व प्रशस्ति पत्र मंचासिन अतिथियों ने दिया।समापन समारोह का संचालन प्रो. डॉ राजेश पेंढारकर ने किया।आभार क्रीड़ा प्रभारी डॉ दिनेश कैथवास ने माना।इस प्रतियोगिता के दौरान डॉ. एस.एस.रावत,डॉ. रमेश औचट प्रो.नीरज चौधरी, डॉ नीतू परसाई,गगनदीप कौर,प्रो.शशिभूषण दास, प्रो अनूप भगोरे,डॉ अशोक कोचले, दीपक भारद्वाज,दिलीप डावर एवं अन्य स्टॉफ उपस्थित रहे।

स्वजातीय लोगों को लाभ पहुंचाने के लगे आरोप

तहसीलदार मोहित जैन का हिंदू समाज ने जलाया पुतला

समय जगत, दमोह। शहर के अस्पताल चौराहे से कीर्ति स्तंभ तक जलूस निकालकर बड़ी संख्या में हिन्दू समाज के लोगों द्वारा तहसीलदार मोहित जैन का पुतला जलाया गया जिसके बाद कलेक्टर के नाम एस डी एम आर एल बागरी को ज्ञापन सौंपा गया हिन्दू समाज के लोगों में तहसीलदार मोहित जैन द्वारा स्वजातीय मॉल संचालक को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से भेदभाव पूर्ण की गई अतिक्रमण की कार्यवाही से हिन्दू समाज में रोष है, दरअसल मामला शहर के पुरैना तालाब किनारे मंगलवार दोपहर हटाए गए अतिक्रमण का था लोगों ने इस कार्रवाई को गलत बताया है। तहसीलदार मोहित जैन पर भ्रष्टाचार, स्वजातीय लोगों को लाभ पहुंचाने के आरोप हिन्दू समाज द्वारा लगाए गए 10 दिन में तहसीलदार के विरुद्ध कार्यवाही नहीं हुई तो सर्व हिन्दू समाज द्वारा वृहद आंदोलन की चेतावनी दी गई है, विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष अंजू खत्री ने कहा कि कुछ महीने पहले कलेक्टर के साथ शहर के सभी स्वयंसेवी संगठनों की एक बैठक हुई थी। जिसमें शहर विकास के नाम पर अतिक्रमण हटाने की बात की गई थी। उस

समय कई बड़े अतिक्रमण चिह्नित कर प्रशासन को जानकारी दी गई थी कि उन अतिक्रमण को हटाया जाए। लेकिन प्रशासन ने उन्हें नहीं हटाया और गरीबों को चिन्हित कर उनके आशियाने उजाड़े जा रहे हैं। प्रशासन का यह तरीका पूरी तरह गलत है। अंजू खत्री ने कहा कि पुरैना तालाब किनारे जो अतिक्रमण तोड़े गए हैं उन्हें तोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। यदि उन अतिक्रमणों को हटाना इतना आवश्यक है तो वहां पर ग्रीन बेल्ट में आने वाले मॉल के हिस्से को भी तोड़ा जाए, जो वर्तमान में बनकर लगभग तैयार हो चुका है। पुराना थाना से समन्ना बाईपास तक बड़े पैमाने पर लोगों ने अतिक्रमण किया है। ऐसी भी जानकारी है कि कई लोगों को वहां पर शासन की ओर से मुआवजा मिल चुका है। उसके बाद भी लोगों ने अपने अतिक्रमण नहीं हटाया। इन सभी अतिक्रमणों को हटाया जाए। तहसीलदार जैन पर शहर का माहौल बिगड़ने का आरोप हिन्दू नेताओं ने कहा अभी शहर का माहौल बहुत अच्छा था, लेकिन प्रशासनिक अधिकारियों के लापरवाही पूर्ण कार्रवाई के चलते शहर का माहौल बिगड़ रहा है और इसमें दमोह तहसीलदार मोहित जैन प्रमुख भूमिका अदा कर रहे, इसलिए उनके खिलाफ भी कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलन होंगे।

निर्माणाधीन कांग्रेस भवन के लिए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने दी पांच लाख की सहयोग राशि

समय जगत, पन्ना। पन्ना नगर के इन्द्रपुरी कालोनी में विगत 37 वर्ष से जिला कांग्रेस कमेटी का निर्माणाधीन कार्यालय अधुरा पड़ा हुआ था, जिसका शिलान्यास सन् 1987 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा के द्वारा किया गया था। उक्त कार्यालय के निर्माण कार्य में तत्कालीन जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष स्वर्गीय विजय कुमार जैन एवं तत्कालीन ग्रहमंत्री स्वर्गीय कैप्टन जयपाल सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रहीं है। किन्ही कारणो बस उक्त कार्य उस समय नहीं हो पाया, बीच में फिर से 1995 में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्गविजय सिंह के शासन काल मे जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भास्कर देव बुन्देला द्वारा भी कराया गया था। लेकिन उक्त कार्य फिर रूक गया था, जो लगभग तीस साल से अधुरा ही पड़ा हुआ है। जो अभी

विगत दो माह पूर्व वर्तमान अध्यक्ष शिवजीत सिंह भईया राजा के द्वारा सभी के सहयोग से कार्य प्रारंभ कराया गया तथा निर्माण कार्य कराते हुए भवन का छत का कार्य पूर्ण हो गया है। उक्त निर्माण कार्य में पार्टी के अनेक लोगो द्वारा सहयोग किया जा रहा है। अभी विधानसभा घेराव का कार्यक्रम 16 दिसम्बर को भोपाल मे आयोजित किया गया था इस दौरान जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा जिला कार्यालय के निर्माण के संबंध में प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी से मुलाकात की तथा कार्यालय निर्माण के संबंध मे चर्चा की गई, मामला प्रदेश अध्यक्ष के संज्ञान में आते ही उन्होने कार्यालय निर्माण के लिए तत्काल पांच लाख रूपये देने के तत्तकाल निर्देश दिये। इस दौरान अनेक लोग उपस्थित रहें। जिसमें मुख्य रूप से जिला प्रभारी संजय यादव, पूर्व विधायक आलोक चतुर्वेदी, रवि जोशी, नीरज दीक्षित, पार्षद वैभव थापक, रेहान मोहम्मद, राज बहादुर पटेल, मार्तण्ड देव बुंदेला, सरदार सिंह यादव, अंकित शर्मा, जीतू यादव, दिलीप गुर्जर आदि मौजूद रहे।

बोड़ा में खाटू श्याम भक्तों का अन्नकूट महोत्सव धूमधाम से हुआ संपन्न

समय जगत, बोड़ा। गत रात्रि बोड़ा के पुराने बस स्टैंड स्थित अंबेडकर चौक पर श्याम सखा मित्र मंडल और समस्त नगरवासियों के सहयोग से बाबा खाटू श्याम का भव्य अन्नकूट महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर बाबा श्याम का दरबार भव्य रूप से सजाया गया और उन्हें छप्पन भोग अर्पित किए गए।

श्री खाटू श्याम संकीर्तन कार्यक्रम में भजन संध्या और महा प्रसादी का आयोजन किया गया। भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र बाबा का अलौकिक श्रृंगार, अखंड ज्योति और छप्पन भोग रहा। महोत्सव के दौरान गायक कलाकार देवेंद्र सिंह मेवाड़ा और पूजा दीदी ने अपनी मधुर भजनों से भक्तों को भक्ति रस में डुबो दिया। बाबा खाटू श्याम के साथ-साथ हनुमान जी, प्रभु श्री राम और माता रानी के भजनों पर श्रद्धालु जमकर झूमे और भक्ति का आनंद उठाया। भजन संध्या देर रात 1 बजे तक चली। इस दौरान भक्तों पर पुष्प वर्षा और इत्र की खुशबू ने माहौल को और भी भक्तिमय बना दिया। बड़ी संख्या में महिलाओं, पुरुषों और बच्चों सहित श्रद्धालुओं ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया और ठंड के बावजूद देर रात तक भजनों का आनंद लिया। श्याम सखा मित्र मंडल के सदस्यों ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज में आध्यात्मिक और धार्मिक भावना को बढ़ावा देना है। आयोजन की सफलता में नगरवासियों का भी विशेष योगदान रहा।

सार-समाचार

ग्राम पाडल्या माता में समझौता हस्ताक्षर निष्पादन कार्यक्रम किया गया आयोजित

समय जगत, सारंगपुर। पार्वती-कालीसिंध चम्बल लिंक परियोजना का भूमिपूजन मंगल वार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में जयपुर, राजस्थान से किया गया। इस परियोजना से विधान सभा सारंगपुर के कई गांव भी लाभान्वित होगें। जिसके चलते सारंगपुर विधायक व राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार गौतम टेटवाल के मुख्य अतिथ्य में ग्राम पाडल्या माता सारंगपुर में जिला प्रशासन ने समझोता हस्ताक्षर निष्पादन कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें जपं अध्यक्ष देव नारायण नागर, नपाध्यक्ष पंकज पालीवाल, नपा उपाध्यक्ष प्रतिनिधि निलेश वर्मा, भाजपा नेता किशोर सिंह पाटीदार, निर्मल जैन, दिलबर यादव, सारंगपुर नगर मंडल अध्यक्ष महेश पुष्पद, संडवता मंडल अध्यक्ष विनोद पाटीदार, समाज सेवी अनिल बारकिया, अपर कलेक्टर महिप किशोर तेजस्वी, एसडीएम रोहित बम्होरे, जपं सीईओ प्रमोद कुमार सिंह, तहसीलदार आकाश शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि यह परियोजना क्षेत्र की जल समस्या का समाधान करने के लिए मील का पत्थर साबित होगी। परियोजना के तहत सारंगपुर और आसपास के कई गांवों में सिंचाई और पेयजल की उपलब्धता में सुधार होगा। जिससे किसानों और स्थानीय निवासियों को बड़ा लाभ होगा। इस परियोजना के शुरू होने से सारंगपुर और आसपास के गांवों में विकास की रफ्तार तेज होने की उम्मीद है।

रेत से भरा ट्रैक्टर पलटा, बाल- बाल बचा चालक

समय जगत, पन्ना। जिले के अजयगढ़ क्षेत्र की केन नदी से रेत को अवैध रूप से लोड कर पन्ना नगर में बेचने वाले ट्रैक्टर ट्रॉलियों के नौसिखिया ड्राइवरों की वजह से आए दिन हादसे हो रहे हैं। इसी प्रकार 17 दिसंबर 2024 को सुबह अजयगढ़ तरफ से पन्ना की ओर आ रहा रेत से ओवरलोड एक लाल रंग का ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर ग्राम माझा के पास पलट गया किसी तरह ड्राइवर ने अपनी जान बचाई और राह से गुजर रहे कुछ लोग भी बाल बाल बचे, इस तरह की घटनाएं आए दिन की बताई जा रही हैं इसके बावजूद रेत का ओवरलोड परिवहन करने वाले ट्रैक्टर ट्रॉलियों पर रोक नहीं लग रही जिससे राहगीरों पर खतरा मंडराता रहता है।

उथली हीरा खदान में फिर मिला सत्रह कैरैट का पचास लाख का हीरा

पन्ना। मध्यप्रदेश के पन्ना जिले की रत्नगर्भा धरती ने आज एक गरीब किसान को फिर मालामाल कर दिया है। हीरा की खदानों के लिए प्रसिद्ध पन्ना जिले की उथली खदान से किसान को 17 कैरेट 11 सेन्ट वजन का कीमती हीरा मिला है। यह हीरा पन्ना शहर के रानीबाग निवासी प्रकाश कुशवाहा को कृष्णा कल्याणपुर की पटी हीरा खदान में मिला है। खदान से निकले इस हीरा को किसान ने हीरा कार्यालय में जमा करा दिया है। हीरा कार्यालय पन्ना के हीरा पारखी अनुपम सिंह ने बताया कि रानीबाग पन्ना निवासी प्रकाश कुशवाहा को 17.11 कैरेट वजन का हीरा मिला है, जो जेम क्वालिटी का है। हीरा पारखी ने बताया कि जमा हुए इस हीरे को आगामी नीलामी में

बिक्री के लिए रखा जायेगा। बिक्री से प्राप्त राशि में से शासन की रायल्टी काटने के बाद शेष राशि हीरा धारक को प्रदान की जाएगी। हीरे की अनुमानित कीमत पूंछे जाने पर हीरा पारखी ने बताया कि अभी उसकी कीमत नहीं बताई जा सकती। जानकर इस हीरे की अनुमानित कीमत 50 लाख से अधिक रुपये आंक रहे हैं। हीरा धारक किसान प्रकाश कुशवाहा ने बताया कि विगत 7 दिन पूर्व उसने अपने पांच अन्य साथियों के साथ कृष्णा कल्याणपुर स्थित पटी हीरा खदान क्षेत्र में अपनी किस्मत अजमाने के लिए खदान शुरू की थी। अपनी खुशी का इजहार करते हुए इस युवा किसान ने कहा कि सात दिन के भीतर ही उन्हें यह हीरा मिल गया। जिसे हमने नियमानुसार कलेक्ट्रेट स्थित हीरा कार्यालय में आकर जमा कर दिया है। इस हीरे की बिक्री से जो भी पैसा मिलेगा, उससे कोई नया धंधा शुरू करेंगे। गौर तलब है कि पन्ना जिले में अवैध खदाने भी संचालित वन विभाग मे हो रहीं है जिनमे चोरी के हीरा लोगो को मिलते है तो वह वैध खदान दर्शाकर जमा कर देते है।

सागौन की लकड़ी का अवैध परिवहन करते वाहन जब्त, आरोपी हुए फरार

समय जगत, खातेगाँव। खातेगांव रेंज के उमेड़ा जंगल के कक्ष में सागौन की इमरती लकड़ी का अवैध परिवहन करते चार पहिया वाहन जब्त किया। जिसमें बड़ी संख्या में सगौन के लट्ठे रखकर ले जा रहे थे। वन अमले ने चार पहिया वाहन जब्त किया लेकिन आरोपी मौका देख फरार हो गए। रेंजर वंदना ठाकुर ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर रविवार-सोमवार की मध्यरात्रि बीट उमेड़ा के कक्ष क्रमांक 250 कुल 22 हरे गिले सागोन काटकर परिवहन करने के लिए 59 टुकड़े कर रखे थे। कुछ नग सागोन लकड़ी वाहन में भरी थी। ट्रक वाहन की तलाशी ली गई जिसमें गीली सागोन? लट्ठा 20 नग रखी पाई गई, वाहन में रखे दस्तावेज के आधार पर वाहन मालिक का नाम मोहम्मद इरशाद पिता मोहम्मद इसरार निवासी सेक्टर 11 गांधीनगर भोपाल पाया गया! डीएफओ पीके मिश्रा एवं एसडीओ एसएल यादव के निर्देशन में वाहन को जप्त कर वन परिक्षेत्र कार्यालय खातेगांव लाया गया, फरार आरोपी के विरुद्ध भारतीय वन अधिनियम 1927 की धारा 26 (क) (ख),मध्य प्रदेश वन उपज व्यापार विनियमन अधिनियम 1969 की धारा 2,5 ,15 एवं लोक संपत्ति विरूपण निरोधक अधिनियम 1984 की धारा के अंतर्गत प्रकरण कायम किया गया।

अशासकीय शालाओं के प्राचार्यों की महत्वपूर्ण बैठक हुई आयोजित

समय जगत, आगर- मालवा। कलेक्टर राघवेन्द्र सिंह के निर्देश अनुसार विकासखंड बड़ौद के अंतर्गत अशासकीय शालाओं के प्राचार्या की एक महत्वपूर्ण बैठक मॉडल उ मा वि बडौद में आयोजित की गई। जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी आरसी खंदार, जिला परियोजना समन्वयक एमके जाटव, सहायक परियोजना समन्वयक रजनीश, दिनेश कुंभकार एवं विकासखंड शिक्षा अधिकारी मंगलेश सोनी, विकासखंड स्त्रोत समन्वय प्रवेज़ खान और संकुल प्राचार्य श्याम विश्वकर्मा ,प्रहलादसिंह चौहान उपस्थित रहे। जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा बताया गया कि अपार संबंधित कार्य तीन दिवस में पूर्ण करने के निर्देश प्राचार्या को दिए। बैठक में संचालित और अशासकीय शालाएं 74 संचालित है कुल 47 अशासकीय प्राचार्य उपस्थित हुए थे ,शेष 27 प्राचार्य अनुपस्थित रहे जिनको कारण बताओ सूचना पत्र जारी करने के निर्देश शिक्षा अधिकारी द्वारा दिए गए।

कलेक्टर ने दिए सुचारू रूप से खाद वितरण के निर्देश

यूरिया खाद के लिए बड़ौदा में किसानों ने मार्कफेड वेयर हाउस पर किया हंगामा

श्योपुर। बड़ौदा में किसानों को यूरिया खाद का वितरण नहीं होने के कारण मंगलवार को किसानों ने कृषि उपज मंडी बड़ौदा में मार्कफेड के वेयर हाउस पर किसान नेता राधेश्याम मीणा मूंडला के नेतृत्व में प्रशासन एवं वेयरहाउस प्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शन करके खाद वितरण के काउंटर बढ़ाकर यूरिया खाद का वितरण सुचारू रूप से करने की मांग की है। प्रदर्शन के दौरान किसान नेता राधेश्याम मीणा मूंडला ने कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल को फोन लगाकर खाद वितरण केंद्र वेयरहाउस बड़ौदा पर हो रही है व्यवस्थाओं की जानकारी दी, कलेक्टर ने वेयरहाउस प्रबंधक पूनम शोपरिया से बात करके किसानों को सुचारू रूप से खाद वितरण करने एवं व्यवस्थाए दुरस्त करने के लिए निर्देशित किया। किसान नेता राधेश्याम मीणा मूंडला ने जानकारी देते हुए बताया कि वेयरहाउस बड़ौदा पर वेयर हाउस प्रबंधन की अव्यवस्थाओं के कारण किसान परेशान है किसानों को समय पर यूरिया खाद का वितरण नहीं किया जा रहा है जिसके चलते किसान गेहूं, सरसों, चना आदि की फसलों में सिंचाई नहीं कर पा रहा है उन्होंने कहा कि वेयरहाउस पर टोकन काउंटर एवं खाद्य वितरण के काउंटर बढ़ाया जाए, पर्याप्त काउंटर नहीं होने के कारण किसानों को परेशान किया जा रहा है। किसानों को 10 से 15 दिन बाद खाद का वितरण किया जा रहा है जिसके चलते किसान परेशान हो रहे है अगर किसानों की समस्याओं को दूर नहीं किया गया तो आने वाले समय में किसान के साथ उग्र प्रदर्शन एवं आंदोलन किया जाएगा।

कच्ची सुपारी से भरा ट्रक जब्त, 39 लाख का माल जब्त

श्योपुर। श्योपुर में ट्रैफिक थाना पुलिस ने कच्ची सुपारी से भरे ट्रक को जब्त किया है। ट्रक में 39 लाख रुपए से ज्यादा कीमत की सुपारी भरी थी, जिसे जीएसटी बिल के बिना परिवहन किया जा रहा था। चेकिंग के दौरान ट्रैफिक थाना पुलिस ने ट्रक रोकने की कोशिश की, तब आरोपी ट्रक ड्राइवर उसे तेज रफ्तार में भाग कर ले जाने लगा। पीछा कर पुलिस ने कार्रवाई की है। मंगलवार को सेल टैक्स विभाग के अधिकारियों ने भी ट्रक पर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। ट्रैफिक थाना प्रभारी राकेश शर्मा ने बताया कि पिछले सोमवार रात यातायात थाने के सामने वाहन चेकिंग पॉइंट लगाकर वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। इसी दौरान ट्रक क्रमांक आरजे 11 जीसी 2185 के ड्राइवर ने गाड़ी को तेज रफ्तार में भागने का प्रयास किया, जिसे घेराबंदी करके पुलिस ने एक किलोमीटर आगे रोक लिया। पूछताछ में आरोपी जीएसटी बल और सुपारी के परिवहन से जुड़े कागजात नहीं दिखा सका। इस पर पुलिस ने उसे जप्त करके आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। ट्रैफिक थाना प्रभारी राकेश शर्मा का कहना है कि बिना जीएसटी बिल और सुपारी के परिवहन के कागजात के बिना सुपारी का परिवहन किया जा रहा था। कार्रवाई की जा रही है।

लैंगिक अपराध संरक्षण मामले में हाईकोर्ट ने दिए निर्देश

समय जगत, इंदौर। माननीय मुख्य न्यायाधिपति श्री सुरेश कुमार कैत, म0प्र0 उच्च न्यायालय जबलपुर एवं माननीय न्यायाधिपति श्री विवेक रूसिया की डिवीजनल बेंच द्वारा लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 की धारा 43 के अनुपालन के संदर्भ में स्वप्रेरणा से लिया गया आदेश दिनांक 10/12/2024 अनुसार यौन अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 (पॉक्सो अधिनियम) के अंतर्गत दोषसिद्ध के विरुद्ध उच्च न्यायालय में दायर आपराधिक अपीलों की सुनवाई करते समय पाया गया कि 18 वर्ष से कम आयु के बालकों के साथ यौन उत्पीड़न के अपराधों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। यौन अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 सदन के दोनों सदनों द्वारा दिनांक 19/06/2012 को पास किया गया एवं दिनांक 14/11/2012 को इसे कानून की पुस्तक में शामिल किया गया। पॉक्सो अधिनियम का अध्याय II के अन्तर्गत आज की स्थिति में पूरे मध्य प्रदेश में पॉक्सो अधिनियम के अंतर्गत स्थापित विभिन्न विशेष न्यायालयों में एवं मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की तीनों पीठों में कुल 14531 आपराधिक

अपीलें लंबित हैं जिनमें अधिकांश मामलों में पीड़िता/बच्ची/लड़की की उम्र 16 से 18 वर्ष के बीच है और अपराधी की उम्र 19 से 22 वर्ष के बीच है। यह एक गंभीर मुद्दा है और देश के युवाओं के भविष्य के लिए खतरा है। इस तरह के अपराधों में इतनी वृद्धि का मुख्य कारण पॉक्सो अधिनियम के प्रावधानों के बारे में जागरूकता की कमी है। पॉक्सो अधिनियम की धारा 43 अनुसार केंद्र सरकार और प्रत्येक राज्य सरकार को इस अधिनियम के प्रावधानों को टेलीविजन, रेडियो और प्रिंट मीडिया सहित मीडिया के माध्यम से नियमित अंतराल पर व्यापक प्रचार सुनिश्चित करने के लिए हर संभव उपाय करने हेतु निर्देशित करता है। इस अधिनियम के अन्तर्गत पुलिस अधिकारियों सहित संबंधित व्यक्तियों को अधिनियम के प्रावधानों के कार्यान्वयन से संबंधित मामलों पर समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। धारा 44 राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग और राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा पॉक्सो अधिनियम के कार्यान्वयन की निगरानी प्रदान करती है। माननीय डिवीजनल बेंच द्वारा इस मामले को स्वप्रेरणा से लिया गया है ताकि केंद्र शासन एवं मध्य प्रदेश शासन से भी पूछा जा सके कि पॉक्सो अधिनियम और उसके तहत बनाए गए नियमों के कार्यान्वयन के संबंध में धारा 43 और 44 के तहत क्या कदम उठाए गए हैं साथ ही न्यायालय की रजिस्ट्री को स्वप्रेरणा से इसे रिट याचिका के रूप में पंजीकृत करने एवं 1. भारत संघ द्वारा सचिव, महिला एवं बाल विकास विभाग, 2. म0प्र0 शासन द्वारा मुख्य सचिव, 3. म0प्र0 शासन द्वारा प्रधान सचिव, महिला एवं विकास विभाग, 4. पुलिस महानिदेश, म0प्र0 शासन, 5. राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग एवं 6 राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग, म0प्र0 शासन को नोटिस प्रदाय करते हुए धारा 43 एवं 44 अधिनियम 2012 के अन्तर्गत अपराधों को रोकने के लिए क्या कदम उठाये गये हैं।

युवक ने की ईमानदारी की मिशाल पेश

बेगमगंज। कृषि उपज मंडी में एक किसान के 44 हजार रुपए गिर गये थे जो एक युवा को मिले उक्त युवक ने किसान को पैसे लौटाकर ईमानदारी की मिशाल पेश की। सोमवार को कृषक जगदीश करोलिया निवासी ग्राम खमखेड़ा अपनी उपज मंडी बेग़मगंज में बेचने आये थे, जो फसल विक्रय के बाद कृषक को जो राशि प्राप्त हुई वह राशि रु 44000/ हजार रूपये किसान से मंडी प्रांगण में गिर गये। जो कि शरीफ भाई पुलिस बालों के पुत्र शादाब को मिल गये। युवक शादाब ने तत्काल उक्त राशि मिलने की मंडी कार्यालय में आकर सूचना दी। तब कृषि मंत्री मंडी कर्मचारियों ने कृषक जगदीश करोलिया को बुलाकर उक्त राशि रु 44000/हजार शादाब भाई के द्वारा मंडी कर्मचारीयों, व्यापारियों, कृषको कि उपस्थिति में प्रदान की। ईमानदारी के लिए सभी ने युवक को धन्यवाद देते हुए प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए सांसद दर्शन सिंह चौधरी

जवाहर नवोदय विद्यालय बाड़ी में आयोजित हुआ पूर्व छात्र सम्मेलन

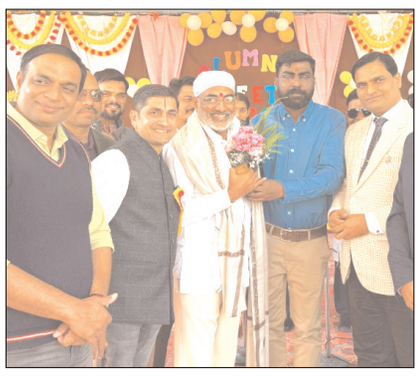

बेगमगंज। जवाहर नवोदय विद्यालय बाड़ी परिसर में विद्यालय से पासआउट विभिन्न सत्रों के छात्र-छात्राओं का पूर्वछात्र मिलन समारोह क्षेत्रीय सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी की मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ में अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की वंदना कर उनके चरणों में पुष्प अर्पण किए गए। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यालय के प्राचार्य श्री जितेंद्र कुमार मिश्रा ने विद्यालय की उपलब्धियां और विकास के कार्यों के बारे में जानकारी दी। 2003 के पासआउट छात्र-छात्राओं के सहयोग से इस वर्ष की अल्युमनी मीट का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बाड़ी, नवोदय पूर्व छात्र समिति के अध्यक्ष साहब लाल गौर, देवेंद्र परते, अशोक सरोने, राकेश मेहरा, मोहित मान्धन्या, सौरभ यादव, मिथिलेश पटेल, गौरव साहू, डॉ. दीपक रघुवंशी, दिनेश राय, भगवत मेहरा, सुमित राय, देवांशु, दीपक जैन के साथ ही पवारखेड़ा नवोदय के पूर्व छात्र रहे सांसद दर्शन सिंह चौधरी उपस्थित रहे। इसके साथ ही देश-विदेश में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे लगभग 200 से अधिक छात्र छात्राएं इस कार्यक्रम में शामिल हुए। पूर्व छात्रों द्वारा विद्यालय के समस्त शिक्षकों का शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। 2015 बैच की मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की टॉपर कुमारी अंकिता पाटकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बच्चों को सलाह दी कि वह पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग करें। दैनिक समाचार पत्रों से नवीनतम जानकारी को ग्रहण करें, साथ ही अपने दैनिक जीवन में घटित हो रही घटनाओं का गंभीरता से अवलोकन कर उनसे सीखे। मुख्य अतिथि सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नवोदय मेरा घर, मेरा परिवार, मेरी जिंदगी है, अपना काम ईमानदारी से करें, जिंदगी का यही सच है। मान लो तो हार है और ठान लो तो जीत है। स्वयं को मजबूत करें, आगे बढ़े ,अपने बचपन के जीवन में मस्ती करें, खेलें अच्छे नागरिक बने और सबसे महत्वपूर्ण है कि अपने शिक्षकों का आदर सम्मान करें। यदि आप ऐसा करेंगे तो आप अपने जीवन में हमेशा सम्मान पाएंगे। सुविधाओं में नहीं अभावों में अच्छाइयां ढूंढे। जिंदगी में कुछ भी असंभव नहीं है। मित्र जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है ,उन्होंने कहा कि छीनकर खाने वाले का कभी पेट नहीं भरता, और बाँटकर खाने वाला कभी भूखा नहीं मरता। इसलिए सर्वे भवंतु सुखनः सर्वे भवंतु निरामय की अवधारणा को अभिभूत करते हुए अपने जीवन में आगे बढ़े। पूर्व छात्र समिति के अध्यक्ष साहब लाल गौर ने विद्यालय की आंतरिक सड़कों के नवनिर्माण की आवश्यकता बताई जिस पर श्री चौधरी ने पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

कार की किस्त जमा करने के लिए 13 वर्षीय बच्चे का किया अपहरण

समय जगत, रायसेन। बरेली थाना अंतर्गत एक अपहरण का मामला संज्ञान में आया है जिसमें आरोपियों ने अपनी सेकंड हैंड अल्टो कार की किस्त जमा करने के लिए 13 वर्षीय बालक का स्कूल जाते समय अपहरण कर लिया और परिवार से 10 लाख रुपए की फिरौती की मांग की पूरी घटना में बच्चे की पिता की हिम्मत और पुलिस की तत्परता के चलते महेज कुछ घंटे में ही आरोपियों के साथ अपहरण हुए बच्चे को साकुशल पुलिस ने बचा लिया गया पूरे मामले में पुलिस महानिरीक्षक नर्मदा पुरम मिथिलेश कुमार शुक्ला ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी जानकारी मध्य प्रदेश में बच्चों के प्रति बढ़ते अपराधों के बीच सूबे के रायसेन जिले के बरेली थाना अंतर्गत अपहरण का एक मामला पुलिस के संज्ञान में आया जिसमें स्कूल से लौट रहे एक 13 वर्ष यह बालक का अपहरण कर परिवार से 10 लख रुपए की फिरौती की मांग की गई जब मामला पुलिस के संज्ञान में आया तो पुलिस ने इस मामले में चार थानों की पुलिस के साथ तीन एसडीओपी को जांच का जमा सोपा और महेश 10 घंटे के अंदर ही तीन आरोपियों को पुलिस ने धर दबोचा वही इस घटना के अन्य दो आरोपियों की तलाश पुलिस द्वारा की जा रही है। घटना मंगलवार देर शाम 5-00 की है जिस समय बच्चा अपने स्कूल से अपने घर की ओर जा रहा था तभी अज्ञात बदमाशों ने बालक का अपहरण कर लिया था जिसके बाद रात्रि लगभग 9:00 बजे इसकी रिपोर्ट बरेली थाने में दर्ज कराई गई मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस महानिरीक्षक नर्मदा पुरम मिथिलेश कुमार शुक्ला ने टीम गठित कर रायसेन एसपी को निर्देश दिए और मामले का संज्ञान लिया इसके बाद पुलिस अधीक्षक पंकज पांडे ने बरेली बाड़ी अब्दुल्लागंज एसडीओपी और चार थानों की पुलिस को इस पूरे प्रकरण में लगा दिया।

सचिव, रोजगार सहायक सुन रहे लोगों की समस्याएं, यथा संभव कर रहे निराकरण

समय जगत, शहडोल। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत शहडोल आर. अंजली की पहल पर शहडोल जिले के प्रत्येक ग्राम पंचायतों में साप्ताहिक जनसुनवाई मंगलवार को आयोजित की जा रही है। ग्राम पंचायतों में आयोजित जन सुनवाई का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासनिक सेवाओं को सुदृढ़ करना और नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करना है। इस पहल के माध्यम से जिला प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया है कि हर नागरिक को अपनी समस्याओं को सीधे प्रशासनिक अधिकारियों तक पहुंचाने का एक मंच मिले, जिससे सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ समय पर और सही तरीके से पहुंच सके। जन सुनवाई में स्थानीय लोगों को सरकारी योजनाओं, विकास कार्यों और उनकी व्यक्तिगत समस्याओं के बारे में सीधे अधिकारियों से चर्चा करने का अवसर मिल रहा है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत आर. अंजली ने कहा कि हमारी प्राथमिकता यह है कि हर नागरिक को उनके मुद्दों पर तत्काल समाधान मिले। जनसुनवाई के इस आयोजन से प्रशासन को यह जानने का अवसर मिलेगा कि ग्राम स्तर पर लोग किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

जीआरपी पुलिस द्वारा बरामदगी के मुकदमें के वारण्टी अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय में किया पेश

बांदा। पुलिस अधीक्षक महोदय रेलवे अनुभाग झांसी विपुल कुमार श्रीवास्तव के द्वारा एनबीडब्ल्यू/वारण्टी अभियुक्तों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में चलाये जा रहे अभियान के क्रम में एंव पुलिस उपाधीक्षक महोदय रेलवे अनुभाग झांसी नईम खान मंसूरी के पर्यवेक्षण में व प्रभारी निरीक्षक नवेन्दु शेखर अग्निहोत्री थाना जीआरपी बाँदा द्वारा गठित टीम उ0नि0 शेरे आलम खां व हे0का0 नीतेश कुमार थाना जीआरपी बांदा के द्वारा आज दिनांक-17.12.2024 को 01 नफर वारण्टी अभियुक्त संदीप सोनी पुत्र स्व0 बाबू सोनी नि0 बाकी थाना सुमेरपुर जिला हमीरपुर उम्र करीब 37 को माननीय न्यायालय श्रीमान अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (उ0म0रे0) बाँदा के द्वारा वाद सं0 3021/IX/2019 , मु0अ0स0 50/2019 धारा 41/411/414 आईपीसी थाना जीआरपी बाँदा में जारी वारन्ट के अनुपालन में वारन्टी अभि0 संदीप सोनी उपरोक्त को रेलवे स्टेशन बाँदा के प्लेटफार्म न0 02 की तरफ सरकुलेटिंग एरिया से गिरफ्तार कर नियमानुसार विधिक कार्यवाही करते हुये पेशी हेतु मा0 न्यायालय भेजा गया । नाम व पता वारण्टी ङ्क 1. वारण्टी अभियुक्त संदीप सोनी पुत्र स्व0 बाबू सोनी नि0 बाकी थाना सुमेरपुर जिला हमीरपुर उम्र करीब 37 ,गिरफ्तार करने वाली टीम ङ्क 01.उ0नि0 श्री शेरे आलम खां , 02. हे0का0 नीतेश कुमार थाना जीआरपी बांदा अनु0 झाँसी है।

दूरसंचार वाहिनी, आई.टी.बी.पी. निःशुल्क नेत्र जॉच एवं परामर्श शिविर का आयोजन

समय जगत, शिवपुरी। दूर संचार वाहिनी, आई0टी0बी0पी0, शिवपुरी में महेश कलावत, उप महानिरीक्षक, दूर संचार वाहिनी के तत्वाधान में दिनांक-18.12.2024 को वाहिनी चिकित्सालय शिवपुरी में निःशुल्क नेत्र जॉच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। उपरोक्त निःशुल्क नेत्र जॉच एवं परामर्श शिविर का आयोजन डॉ. विनोद कुमार सरवईया (मुख्य चिकित्सा अधिकारी) व पैरामेडिकल स्टॉफ की उपस्थिति में ए0एस0जी0 आई अस्पताल ग्वालियर से आये डॉ.देवांशु (नेत्र रोग विशेषज्ञ) एवं उनकी टीम के द्वारा किया गया! शिविर के दौरान वाहिनी चिकित्सालय ओपीडी में मरीजों की ऑखों की जॉच कर ईलाज एवं स्वास्थ सम्बधित उचित सलाह दी गई। जिसमें कुल 65 मरीजों का परीक्षण कर जरूरी परामर्श दिया गया और साथ ही ऑखों में होने वाली बीमारियों तथा उनसे बचाव हेतु जागरूक किया गया। ए0एस0जी0 आई अस्पताल ग्वालियर से आये के चिकित्सक और स्टाफ द्वारा आयोजित शिविर की उप महानिरीक्षक दूरसंचार वाहिनी द्वारा सराहना की गई । उप महानिरीक्षक, दूर संचार वाहिनी द्वारा वाहिनी एवं संस्थान के पदाधिकारियों एवं उनके परिवारजनों को आश्वस्त किया गया कि आपके स्वास्थ्य को ध्यान में रखतें हुए समय-समय पर इस प्रकार के चिकित्सा शिविरों का आयोजन करते रहगें।

आयुष्मान स्वास्थ्य शिविरों में तैनात रहेगी मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब

समय जगत, धौलपुर। ब्यूरो विजय शर्मा राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित आयुष्मान स्वास्थ्य शिविरों में मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब के माध्यम से खाद्य पदार्थों में मिलावट की जांच मौके पर हो सकेगी, इसके साथ ही मिलावट के प्रति आमजन में जागरूकता व खाद्य कारोबारकर्ताओं की खाद्य लाइसेंस एवं रजिस्ट्रेशन के कार्य भी किए जाएंगे। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जयंती लाल मीणा ने बताया कि शिविरों के अनुसार कार्मिकों की मोबाइल लैब में ड्यूटी लगाई गई है। उन्होंने बताया कि 20 दिसंबर को सरमथुरा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बरोली पर, 24 दिसंबर को सैंपऊ के पीएचसी जारोली पर, 27 दिसंबर को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बसईनबाव पर, 31 दिसंबर को सीएचसी मनियां पर, 1 जनवरी 2025 को बाड़ी के पीएचसी उमरेह पर, 3 जनवरी को सैंपऊ के पीएचसी नुनेहरा पर, 07 जनवरी को पीएचसी परूआ पर, 8 जनवरी को पीएचसी जमालपुर पर, 10 जनवरी को जिला चिकित्सालय धौलपुर पर, 17 जनवरी को सीएचसी सैंपऊ पर तथा 22 जनवरी को पुनः जिला चिकित्सालय धौलपुर पर मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब द्वारा शिविर के दौरान खाद्य पदार्थों की मिलावट की जांच तथा खाद्य कारोबारकर्ताओं के खाद्य लाईसेंस रजिस्ट्रेशन का कार्य किया जायेगा।

शैक्षिक भ्रमण पर जा रही बस को झंडी दिखाकर प्रबंधक ने किया रवाना

समय जगत चित्रकूट। श्री गोस्वामी इंटर कालेज छीबों की छात्राओं को शैक्षिक भ्रमण के लिए मंगलवार को कड़ा धाम कौशाम्बी व मनगढ़ प्रतापगढ़ जिले के लिए रवाना किया गया भ्रमण के बाद बच्चे अपने अनुभव को निबंध के रूप में लिखेंगे इसके बाद उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा छात्राओं की एक बस को कालेज के प्रबंधक संतोष कुमार पाण्डेय ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया प्रबंधक ने बताया कि छात्राओं में वैज्ञानिक एवं सामाजिक तथा औद्योगिक सोच विकसित करने के उद्देश्य से यह भ्रमण कराया जा रहा है छात्राएं विभिन्न मंदिर व मनगढ़ में भिन्न प्रकार की इकाइयां देखेंगे और उसके अनुभव से प्रभावित होंगे तथा सनातन धर्म व आस्था से जुड़े इस मंदिर के इतिहास एवं उसके निर्माण के संबंध में जानकारी लेंगे इसके साथ साथ विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर उसके संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे आशा जताई कि यह भ्रमण बच्चों को भविष्य में आत्मनिर्भर बनने तथा उन में वैज्ञानिक सोच विकसित करने में मदद करेगा। कालेज के प्रधानाचार्य शिव शंकर चौधरी ने बताया कि छीबों कालेज का यह पहला शैक्षिक भृमण है इस भ्रमण में केवल छात्राओं को भेजा गया है सुरक्षा के लिहाज से उनके साथ शिक्षिकाओं को रखा गया है तथा इनके सहयोग के लिए शिक्षक दल भी शामिल किया गया है इसमें कुल 55 बालिकाएं हैं भ्रमण के बाद अपने अनुभव को सभी छात्राएं निबंध के रूप में लिखेंगे और विद्यालय को देंगे इनमें से तीन श्रेष्ठ निबंधों को चिह्नित कर उन छात्राओं को सम्मानित भी किया जाएगा उधर श्री गोस्वामी इंटर कालेज छीबों चित्रकूट द्वारा पहली बार शैक्षिक भृमण पर छात्राओं को भेजें जाने की अनूठी पहल की शुरुआत करने की वरिष्ठ पत्रकार हरी नारायण पाण्डेय ने सराहना की है उन्होंने कहा है कि इससे बच्चों को शैक्षिक गतिविधियों में बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होगा उन्होंने कहा है कि छीबों कालेज को ऐसे तमाम शैक्षिक अवसर बच्चों को दिए जाने चाहिए।

स्वत्वाधिकारी, समय जगत मीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी द्वारा श्री बालाजी प्रिंटर्स प्लॉट नं. 21, सेक्टर-एच, गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, भोपाल 462011 से मुद्रित कर जी-1 गोयल निकेत अपार्टमेंट प्रेस कॉम्प्लेक्स जोन-1 एमपी नगर भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। पिन नं. 462011, संपादक **अभिनव त्रिपाठी।**
RNI-MPHIN/2004/13180 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) सभी प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। **फोन :** 0755-4700402, ई-मेलः dainiksamayjagat@gmail.com